विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश/की-क्

< विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश

मूलशब्द—व्याकरण—संधिरहित मूलशब्द—व्युत्पत्ति—हिन्दी अर्थ

- **कीकट**—वि°—-—की शनैः द्रुतं वा कटति गच्छति - की - कट् - अच्—गरीब, दरिद्र
- **कीकट**—वि°—-—की शनैः द्रुतं वा कटति गच्छति - की - कट् - अच्—कञ्जूस
- **कीकटः**—पुं°—-—की शनैः द्रुतं वा कटति गच्छति - की - कट् - अच्—घोड़ा
- **कीकटाः**—पुं°—-—की शनैः द्रुतं वा कटति गच्छति - की - कट् - अच्—एक देश का नाम
- **कीकस**—वि°—-—की कुत्सितं यथा स्यात्तथा कसति - की - कस् - अच्—कठोर, दृढ़
- **कीकसम्**—नपुं°—-—की कुत्सितं यथा स्यात्तथा कसति - की - कस् - अच्—हड्डी
- **कीचकः**—पुं°—-—चीकयति शब्दायते - चीक् - वुन्, आद्यन्तविपर्ययः—खोखला बाँस
- **कीचकः**—पुं°—-—चीकयति शब्दायते - चीक् - वुन्, आद्यन्तविपर्ययः—हवा में लड़खड़ाते या साँय साँय करते हुए बाँस
- **कीचकः**—पुं°—-—चीकयति शब्दायते - चीक् - वुन्, आद्यन्तविपर्ययः—एक जाति का नाम
- **कीचकः**—पुं°—-—चीकयति शब्दायते - चीक् - वुन्, आद्यन्तविपर्ययः—विराट राज का सेनापति
- **कीचकजित्**—पुं°—कीचक - जित्—-—द्वितीय पाण्डवराज भीम का विशेषण
- **कीटः**—पुं°—-—कीट - अच्—कीड़ा, कृमि
- **कीटः**—पुं°—-—कीट - अच्—तिरस्कार और घृणा को व्यक्त करने वाला शब्द
- **द्वीपकीटः**—पुं°—-—-—अधम हाथी
- **कीटघ्नः**—पुं°—कीट-घ्नः—-—गन्धक
- **कीटजम्**—नपुं°—कीट-जम्—-—रेशम
- **कीटजा**—स्त्री°—कीट-जा—-—लाख
- **कीटमणिः**—पुं°—कीट-मणिः—-—जुगनू
- **कीटकः**—पुं°—-—कीट - कन्—कीड़ा
- **कीटकः**—पुं°—-—कीट - कन्—मगध जाति का भाट
- **कीदृक्ष**—अव्य°—-—किम् - दृश् - क्त, क्नि, कञ् वा, किमः की आदेशः—किस प्रकार का या किस स्वभाव का
- **कीदृश्**—अव्य°—-—किम् - दृश् - क्त, क्नि, कञ् वा, किमः की आदेशः—किस प्रकार का या किस स्वभाव का

- **कीदृश**—अव्य०—-—किम् - दृश् - क्त, क्नि, कञ् वा, किमः की आदेशः—किस प्रकार का या किस स्वभाव का
- **कीनाश**—वि०—-—क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च—भूमिधर
- **कीनाश**—वि०—-—क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च—गरीब, दरिद्र
- **कीनाश**—वि०—-—क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च—कृपण
- **कीनाश**—वि०—-—क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च—लघु, तुच्छ
- **कीनाशः**—पुं०—-—क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च—मृत्यु के देवता यम की उपाधि
- **कीनाशः**—पुं०—-—क्लिश् कन्, ई उपधाया ईत्वम्, लस्य लोपो नामागमश्च—एक प्रकार का बन्दर
- **कीरः**—पुं०—-—की इति अव्यक्तशब्दम् ईरयति - की - ईर् - अच्—तोता
- **कीराः**—पुं०,ब० व०—-—की इति अव्यक्तशब्दम् ईरयति - की - ईर् - अच्—काश्मीर देश तथा उसके निवासी
- **कीरम्**—नपुं०—-—की इति अव्यक्तशब्दम् ईरयति - की - ईर् - अच्—मांस
- **कीरेष्टः**—पुं०—कीर-इष्टः—-—आम का वृक्ष
- **कीरवर्णकम्**—नपुं०—कीर-वर्णकम्—-—सुगन्धों का शिरोमणि
- **कीर्ण**—वि०—-—कॄ - क्त—छितराया हुआ, फैलाया हुआ, फेंका हुआ, बखेरा हुआ
- **कीर्ण**—वि०—-—कॄ - क्त—ढका हुआ, भरा हुआ
- **कीर्ण**—वि०—-—कॄ - क्त—रक्खा हुआ, धरा हुआ
- **कीर्ण**—वि०—-—कॄ - क्त—क्षत, चोट पहुँचाया गया
- **कीर्ण**—वि०—-—कॄ - क्त—बिखेरना, इधर-उधर फेंकना, उड़ेलना, डालना, तितर-बितर करना
- **कीर्ण**—वि०—-—कॄ - क्त—छितराना, ढँकना, भरना
- **कीर्णिः**—स्त्री०—-—कॄ - क्तिन्—बखेरना
- **कीर्णिः**—स्त्री०—-—कॄ - क्तिन्—ढकना, छिपाना, गुप्त कर देना
- **कीर्णिः**—स्त्री०—-—कॄ - क्तिन्—घायल करना
- **कीर्तनम्**—नपुं०—-—कॄ - ल्युट्—कथन, वर्णन
- **कीर्तनम्**—नपुं०—-—कॄ - ल्युट्—मन्दिर
- **कीर्तना**—स्त्री०—-—कॄ - ल्युट् -टाप्—कीर्तिवर्णन
- **कीर्तना**—स्त्री०—-—कॄ - ल्युट् -टाप्—सस्वर पाठ
- **कीर्तना**—स्त्री०—-—कॄ - ल्युट् -टाप्—यश, कीर्ति
- **कीर्तय्**—चुरा० उभ० <कीर्तयति>, <कीर्तयते>, <कीर्तित>—-—उल्लेख करना, दोहराना, उच्चारण करना

- **कीर्तय्**—चुरा° उभ° <कीर्तयति>, <कीर्तयते>, <कीर्तित>—————कहना, सस्वर पाठ करना, घोषणा करना, समाचार देना
- **कीर्तय्**—चुरा° उभ° <कीर्तयति>, <कीर्तयते>, <कीर्तित>—————नाम लेना, पुकार करना
- **कीर्तय्**—चुरा° उभ° <कीर्तयति>, <कीर्तयते>, <कीर्तित>—————स्तुति करना, यशोगान करना, स्मरणार्थ उत्सव मनाना
- **कीर्तिः**—स्त्री°———कॄ - क्तिन्—यश, प्रसिद्धि, कीर्ति
- **कीर्तिः**—स्त्री°———कॄ - क्तिन्—अनुग्रह, अनुमोदन
- **कीर्तिः**—स्त्री°———कॄ - क्तिन्—मैल, कीचड़
- **कीर्तिः**—स्त्री°———कॄ - क्तिन्—विस्तृति, विस्तार
- **कीर्तिः**—स्त्री°———कॄ - क्तिन्—प्रकाश, प्रभा
- **कीर्तिः**—स्त्री°———कॄ - क्तिन्—ध्वनि
- **कीर्तिभाज्**—वि°—कीर्ति-भाज्———यशस्वी, विख्यात, प्रसिद्ध
- **कीर्तिभाज्**—पुं°—कीर्ति-भाज्———द्रोण का विशेषण
- **कीर्तिशेषः**—पुं°—कीर्ति-शेषः———केवल यश के रुप में जीवित रहना
- **कीलू**—भ्वा° पर°—————बाँधना
- **कीलू**—भ्वा° पर°—————नत्थी करना
- **कीलू**—भ्वा° पर°—————कोल गाड़ना
- **कीलः**—पुं°———कील - घञ्—फन्नी, खूँटी
- **कीलः**—पुं°———कील - घञ्—भालाः
- **कीलः**—पुं°———कील - घञ्—बल्ली, खम्भा
- **कीलः**—पुं°———कील - घञ्—हथियार, कोहनी
- **कीलः**—पुं°———कील - घञ्—कोहनी का प्रहार
- **कीलः**—पुं°———कील - घञ्—ज्वाला
- **कीलः**—पुं°———कील - घञ्—परमाणु
- **कीलः**—पुं°———कील - घञ्—शिव का नाम
- **कीलकः**—पुं°———कील - कन्—फन्नी या खूँटी
- **कीलकः**—पुं°———कील - कन्—खम्बा, स्तम्भ
- **कीलालः**—पुं°———कील - अल् - अण्—अमृतोपम स्वर्गीय पेय, देवताओं का पेय
- **कीलालः**—पुं°———कील - अल् - अण्—मधु

- **कीलालः**—पुं०—-—कील - अल् - अण्—हैवान
- **कीलालम्**—नपुं०—-—-—रुधिर
- **कीलालम्**—नपुं०—-—-—जल
- **कीलालधिः**—पुं०—कीलाल-धिः—-—समुद्र
- **कीलालपः**—पुं०—कीलाल-पः—-—पिशाच, भूत
- **कीलिका**—स्त्री०—-—कील - कन् - टाप्, इत्वम्—धुरे की कील
- **कीलित**—वि०—-—कील - क्त—बँधा हुआ, बद्ध
- **कीलित**—वि०—-—कील - क्त—स्थिरा कील से गड़ा हुआ, कील ठोककर जड़ा हुआ
- **कीश**—वि०—-—क - ईश् - क—नंगा
- **कीशः**—पुं०—-—क - ईश् - क—लंगूर, बन्दर
- **कीशः**—पुं०—-—क - ईश् - क—सूर्य
- **कीशः**—पुं०—-—क - ईश् - क—पक्षी
- **कुः**—स्त्री०—-—कु - डु—पृथ्वी
- **कुः**—स्त्री०—-—कु - डु—त्रिभुज या सपाट आकृति की आधार-रेखा
- **कुपुत्रः**—पुं०—कु-पुत्रः—-—मंगल ग्रह
- **कु**—अव्य०—-—-—'खराबी', ह्रास, अवमूल्यन, पाप, भर्त्सना, ओछापन, अभाव, त्रुटि आदि भावों को संकेत करने वाला उपसर्ग;
- **कुकर्मन्**—नपुं०—कु-कर्मन्—-—बुरा कार्य, नीचा कर्म
- **कुग्रहः**—पुं०—कु-ग्रहः—-—अमंगल ग्रह
- **कुग्रामः**—पुं०—कु-ग्रामः—-—छोटा गाँव या पुरवा
- **कुचेल**—वि०—कु-चेल—-—फटे पुराने वस्त्र पहने हुए
- **कुचर्या**—स्त्री०—कु-चर्या—-—दुष्टता, अशिष्टाचरण, अनौचित्य
- **कुजन्मन्**—वि०—कु-जन्मन्—-—नीच कुल में उत्पन्न
- **कुतनु**—वि०—कु-तनु—-—विकृतकाय, कुरुप
- **कुतनुः**—पुं०—कु-तनुः—-—कुबेर का विशेषण
- **कुतंत्री**—स्त्री०—कु-तंत्री—-—खराब बीणा
- **कुतर्कः**—पुं०—कु-तर्कः—-—कूटतर्कात्मक, हेत्वाभासरुप
- **कुतर्कः**—पुं०—कु-तर्कः—-—धर्मविरुद्ध, स्वतन्त्र चिन्तन

- **कुतर्कपथः**—पुं॰—कु-तर्क-पथः—-—तर्क करने की झूठी रीति
- **कुतीर्यम्**—नपुं॰—कु-तीर्यम्—-—खराब अध्यापक
- **कुदृष्टिः**—स्त्री॰—कु-दृष्टिः—-—कमजोर नजर
- **कुदृष्टिः**—स्त्री॰—कु-दृष्टिः—-—पाप दृष्टि, कुटिल आँख
- **कुदृष्टिः**—स्त्री॰—कु-दृष्टिः—-—वेदविरुद्ध सिद्धान्त, धर्मविरुद्ध सिद्धान्त
- **कुदेशः**—पुं॰—कु-देशः—-—बुरा देश या बुरी जगह
- **कुदेशः**—पुं॰—कु-देशः—-—वह देश जहाँ जीवन की आवश्यक सामग्री उपलब्ध न हो, या जो अत्याचार से पीड़ित हो
- **कुदेह**—वि॰—कु-देह—-—कुरुप विकृतकाय
- **कुदेहः**—पुं॰—कु-देहः—-—कुबेर का विशेषण
- **कुधी**—वि॰—कु-धी—-—मूर्ख, बुद्धू, बेवकूफ
- **कुधी**—वि॰—कु-धी—-—दुष्ट
- **कुनटः**—पुं॰—कु-नटः—-—बुरा पात्र
- **कुनदिका**—स्त्री॰—कु-नदिका—-—छोटी नदी, क्षुद्र नदी, लघु स्रोत
- **कुनाथः**—पुं॰—कु-नाथः—-—बुरा स्वामी
- **कुनामन्**—वि॰—कु-नामन्—-—कंजूस
- **कुरथः**—पुं॰—कु-रथः—-—कुमार्ग, बुरा रास्ता
- **कुरथः**—पुं॰—कु-रथः—-—धर्मविरुद्ध सिद्धान्त
- **कुपुत्रः**—पुं॰—कु-पुत्रः—-—बुरा या दुष्ट पुत्र
- **कुपुरुषः**—पुं॰—कु-पुरुषः—-—नीच या दुष्ट पुरुष
- **कुपूय**—वि॰—कु-पूय—-—नीच दुष्ट, तिरस्करणीय
- **कुप्रिय**—वि॰—कु-प्रिय—-—अरुचिकर, तिरस्करणीय, नीच, अधम
- **कुप्लवः**—पुं॰—कु-प्लवः—-—बुरी किश्ती
- **कुब्रह्मः**—पुं॰—कु-ब्रह्मः—-—पतित ब्राह्मण
- **कुब्रह्मन्**—पुं॰—कु-ब्रह्मन्—-—पतित ब्राह्मण
- **कुमन्त्रः**—पुं॰—कु-मन्त्रः—-—बुरा उपदेश
- **कुमन्त्रः**—पुं॰—कु-मन्त्रः—-—बुरे कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त मंत्र
- **कुयोगः** —पुं॰—कु-योगः —-—अशुभ संयोग

- **कुरस** —वि°—कु-रस —-—बुरे रस या स्वाद वाला
- **कुरसः**—पुं°—कु-रसः—-—एक प्रकार की मदिरा
- **कुरुप**—वि°—कु-रुप—-—कुरुप विकृत रुप
- **कुरुप्यम्**—नपुं°—कु-रुप्यम्—-—टीन, जस्ता
- **कुवङ्ग**—वि°—कु-वङ्ग—-—सीसा
- **कुवचस्**—वि°—कु-वचस्—-—गाली देने वाला, अश्लील भाषी, दुर्वचन या कुभाषा बोलने वाला
- **कुवाक्य**—वि°—कु-वाक्य—-—गाली देने वाला, अश्लील भाषी, दुर्वचन या कुभाषा बोलने वाला
- **कुवाक्य**—नपुं°—कु-वाक्य—-—दुर्वचन, दुर्भाषा
- **कुवर्षः**—पुं°—कु-वर्षः—-—आकस्मिक प्रचण्ड बौछार
- **कुविवाहः**—पुं°—कु-विवाहः—-—विवाह का भर्ष्ट या अनुचित रुप
- **कुवृत्तिः**—स्त्री°—कु-वृत्तिः—-—बुरा व्यवहार
- **कुवैद्यः**—पुं°—कु-वैद्यः—-—खोटा वैद्य, कठवैद्य, नीम हकीम
- **कुशील**—वि°—कु-शील—-—अक्खड़, दुष्ट अशिष्ट, दुष्ट स्वभाव
- **कुष्ठलम्**—नपुं°—कु-ष्ठलम्—-—बुरी जगह
- **कुसरित्**—स्त्री°—कु-सरित्—-—क्षुद्र नदी, छोटा स्रोत
- **कुसृतिः**—स्त्री°—कु-सृतिः—-—दुराचरण, दुष्टता
- **कुसृतिः**—स्त्री°—कु-सृतिः—-—जादू दिखाना
- **कुसृतिः**—स्त्री°—कु-सृतिः—-—धूर्तता
- **कुस्त्री**—स्त्री°—कु-स्त्री—-—खोटी स्त्री
- **कु**—भ्वा° आ° <कवते>—-—-—ध्वनि करना
- **कु**—तुदा° आ° <कुवते>—-—-—बड़बड़ाना, कराहना
- **कु**—तुदा° आ° <कुवते>—-—-—चिल्लाना, क्रन्दन करना
- **कु**—अदा° पर° <कौति>—-—-—भिनभिनाना, कूजना, गुञ्जन करना
- **कुकभम्**—नपुं°—-—कुकेन अदानेन पानेन भाति - कुक - भा - क—एक प्रकार की तीक्ष्ण मदिरा
- **कुकीलः**—पुं°—-—कौ पृथिव्यां कीलः इव—पहाड़
- **कुकुदः** —पुं°—-—कूक वा कू इत्यव्ययम् - अलंकृता कन्या तां सत्कृत्य पात्राय ददाति कुकु - दा - क—उपयुक्त श्रृंगारों से सुभूषित कन्या को विधिपूर्वक विवाह में देने वाला

- **कुकूदः**—पुं°——कूक वा कू इत्यव्ययम् - अलंकृता कन्या तां सत्कृत्य पात्राय ददाति कुकू - दा - क—उपयुक्त श्रृंगारों से सुभूषित कन्या को विधिपूर्वक विवाह में देने वाला
- **कुकुन्दरः**—पुं°——स्कंद्यते कामिना अत्र, नि° साधुः—जघनकूप, कूल्हे के दो गर्त जो नितम्ब के ऊपरी भाग में होते है
- **कुकुन्दुरः**—पुं°——स्कंद्यते कामिना अत्र, नि° साधुः—जघनकूप, कूल्हे के दो गर्त जो नितम्ब के ऊपरी भाग में होते है
- **कुकुराः**—ब° व°——कु - कुर् - क—एक देश का नाम जिसे 'दुर्शाह' भी कहते हैं
- **कुकूलः**—पुं°——कु - ऊलच्, कुगागमः—चोकर, भूसी
- **कुकूलः**—पुं°——कु - ऊलच्, कुगागमः—भूसी से बनी आग
- **कुकूलम्**—नपुं°——कु - ऊलच्, कुगागमः—चोकर, भूसी
- **कुकूलम्**—नपुं°——कु - ऊलच्, कुगागमः—भूसी से बनी आग
- **कुकूलम्**—नपुं°——को कूलम् ष° त°—छिद्र खाई
- **कुकूलम्**—नपुं°——को कूलम् ष° त°—कवच, बख्तर
- **कुक्कुटः**—पुं°——कुक् - क्विप्, तेन् कुटति, कुक् - कुट् - क—मुर्गा, जंगली मुर्गा
- **कुक्कुटः**—पुं°——कुक् - क्विप्, तेन् कुटति, कुक् - कुट् - क—जले हुए भुस का फिसफिसाना, जलती हुई लकड़ी
- **कुक्कुटः**—पुं°——कुक् - क्विप्, तेन् कुटति, कुक् - कुट् - क—आग की चिंगारी
- **कुकुटिः**—स्त्री°——कुक्कुट - इन्—दम्भ, पाखण्ड, धार्मिक अनुष्ठानों से स्वार्थसिद्धि
- **कुकूटी**—स्त्री°——कुक्कुट - ङीप्—दम्भ, पाखण्ड, धार्मिक अनुष्ठानों से स्वार्थसिद्धि
- **कुक्कुभः**—पुं°——कुक्कु शब्दं भाषते - कुक्कु - भाष् - ड बा°—जंगली मुर्गा
- **कुक्कुभः**—पुं°——कुक्कु शब्दं भाषते - कुक्कु - भाष् - ड बा°—मुर्गा
- **कुक्कुभः**—पुं°——कुक्कु शब्दं भाषते - कुक्कु - भाष् - ड बा°—वार्निश
- **कुक्कुरः**—पुं°——कोकते आदते - कुक् - क्विप्, कुक् किंचिदपि गृह्णन्तं जनं दृष्टवा कुरति शब्दायते - कुक् - कुर् - क—कुत्ता
- **कुक्कुरवाच्**—पुं°—कुक्कुर-वाच्——हरिणों की एक जाति
- **कुक्षिः**—पुं°——कुष् - स—पेट
- **कुक्षिः**—पुं°——कुष् - स—गर्भाशय, पेट का वह भाग जिसमें भ्रूण रहता हैं
- **कुक्षिः**—पुं°——कुष् - स—किसी चीज का भीतरी भाग
- **कुक्षिः**—पुं°——कुष् - स—गर्त
- **कुक्षिः**—पुं°——कुष् - स—गुफा, कन्दरा
- **कुक्षिः**—पुं°——कुष् - स—तलवार का म्यान

- **कुक्षिः**—पुं०——कुष् - स—खाड़ी
- **कुक्षिशूलः**—पुं०—कुक्षि-शूलः——पेट दर्द, उदरशूल
- **कुक्षिम्भरि**—वि०——कुक्षि - भृ - इन्, मुम्—अपना पेट भरने की चिन्ता करने वाला, स्वार्थी, पेटू, बहुभोजी
- **कुङ्कुमम्**—नपुं०——कुक् - उमक्, नि० मुम्—केसर, जाफ़रान
- **कुङ्कुमाद्रिः**—पुं०—कुङ्कुमम्-अद्रिः——एक पहाड़ का नाम
- **कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>————कर्कश ध्वनि करना
- **कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>————जाना, चमकाना
- **कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>————सिकोड़ना, झुकाना
- **कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>————सिकुड़ना
- **कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>————बाधा उपस्थित करना
- **कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>————लिखना, अंकित करना
- **सङ्कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>—सम्-कुच्——टेढ़ा होना
- **सङ्कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>—सम्-कुच्——संकुचित करना
- **सङ्कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>—सम्-कुच्——संकुचित होना
- **सङ्कुच्**—तुदा० पर० <कुचति>, <कुचित>—सम्-कुच्——बन्द करना, मुर्झाना
- **सङ्कुच्**—तुदा० पर०, प्रेर०—सम्-कुच्——बन्द करना, सिकोड़ना, घटाना
- **कुच्**—भ्वा० पर० <कोचति>, <कुञ्चति>, <कुञ्चित>————कुटिल बनाना, झुकाना या टेढ़ा करना
- **कुच्**—भ्वा० पर० <कोचति>, <कुञ्चति>, <कुञ्चित>————टेढ़ी तरह से चलना
- **कुच्**—भ्वा० पर० <कोचति>, <कुञ्चति>, <कुञ्चित>————छोटा करना, घटाना
- **कुच्**—भ्वा० पर० <कोचति>, <कुञ्चति>, <कुञ्चित>————सिकोड़ना, संकुचित होना
- **कुच्**—भ्वा० पर० <कोचति>, <कुञ्चति>, <कुञ्चित>————की ओर जाना
- **आकुच्**—भ्वा० पर० <कोचति>, <कुञ्चति>, <कुञ्चित>—आ-कुच्——सिकोड़ना, टेढ़ा करना, झुकाना
- **आकुच्**—भ्वा० पर० <कोचति>, <कुञ्चति>, <कुञ्चित>—आ-कुच्——सिकोड़ना, टेढ़ा करना, झुकाना
- **विकुच्**—भ्वा० पर० <कोचति>, <कुञ्चति>, <कुञ्चित>—वि-कुच्——सिकोड़ना, टेढ़ा करना
- **कुञ्चनम्**—नपुं०——कुञ्च् - ल्युट्—टेढ़ा करना, झुकाना, सिकोड़ना
- **कुञ्चिः**— पुं०——कुच् - इन्—आठ मुट्ठियों या अंजलियों की धारिता का माप
- **कुञ्चिका**—स्त्री०——कुच् - ण्वुल् - टाप्, इत्वम्—कुंजी, चाभी

- **कुञ्चिका**—स्त्री°—-—कुच् - ण्वुल् - टाप्, इत्वम्—बाँस का अंकुर
- **कुञ्चित**—वि°—-—कुञ्च् - क्त—सिकुड़ा हुआ, टेढ़ा किया हुआ, झुकाया हुआ
- **कुञ्जः**—पुं°—-—कु - जन् - ड, पृषो° साधुः—लताओं तथा पौधों से आच्छादित स्थान, लतावितान, पर्णशाला
- **कुञ्जः**—पुं°—-—-—हाथी का दाँत
- **कुञ्जम्**—नपुं°—-—कु - जन् - ड, पृषो° साधुः—लताओं तथा पौधों से आच्छादित स्थान, लतावितान, पर्णशाला
- **कुञ्जम्**—नपुं°—-—कु - जन् - ड, पृषो° साधुः—हाथी का दाँत
- **कुञ्जकुटीरः**—पुं°—कुञ्ज-कुटीरः—-—लतामण्डप, लताओं तथा पौधों से परिवेष्टित स्थान
- **कुञ्जरः**—पुं°—-—कुञ्जो हस्तिहनुः सोऽस्यास्ति - कुञ्ज - र—हाथी
- **कुञ्जरः**—पुं°—-—कुञ्जो हस्तिहनुः सोऽस्यास्ति - कुञ्ज - र—कोई सर्वोत्तम या श्रेष्ठ वस्तु
- **कुञ्जरः**—पुं°—-—कुञ्जो हस्तिहनुः सोऽस्यास्ति - कुञ्ज - र—पीपल का वृक्ष
- **कुञ्जरः**—पुं°—-—कुञ्जो हस्तिहनुः सोऽस्यास्ति - कुञ्ज - र—हस्त नामक नक्षत्र
- **कुञ्जरानीकम्**—नपुं°—कुञ्जर-अनीकम्—-—सेना का एक भाग जिसमें हाथी हों, हस्ति-सेना
- **कुञ्जराशनः**—पुं°—कुञ्जर-अशनः—-—अश्वत्थ वृक्ष
- **कुञ्जरारातिः**—पुं°—कुञ्जर-अरातिः—-—शेर
- **कुञ्जरारातिः**—पुं°—कुञ्जर-अरातिः—-—शरभ
- **कुञ्जरग्रहः**—पुं°—कुञ्जर-ग्रहः—-—हाथी पकड़ने वाला
- **कुट्**—भ्वा° पर° <कुटति>, <कुटित>—-—-—कुटील या वक्र होना
- **कुट्**—भ्वा° पर° <कुटति>, <कुटित>—-—-—टेढ़ा करना या झुकाना
- **कुट्**—भ्वा° पर° <कुटति>, <कुटित>—-—-—बेईमानी करना, छल करना, धोखा देना
- **कुट्**—दिवा° पर° <कुटयति>—-—-—तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ देना, विभक्त करना, विघटित करना
- **कुटः**—पुं°—-—कुट् - कम्—जलपात्र, करवा, कलश
- **कुटम्**—नपुं°—-—कुट् - कम्—जलपात्र, करवा, कलश
- **कुटः**—पुं°—-—कुट् - कम्—किला, दुर्ग
- **कुटः**—पुं°—-—कुट् - कम्—हथौड़ा
- **कुटः**—पुं°—-—कुट् - कम्—वृक्ष
- **कुटः**—पुं°—-—कुट् - कम्—घर
- **कुटः**—पुं°—-—कुट् - कम्—पहाड़

- **कुटजः**—पुं°—कुट-जः———एक वृक्ष का नाम
- **कुटजः**—पुं°—कुट-जः———अगस्त्य
- **कुटजः**—पुं°—कुट-जः———द्रोण
- **कुटहारिका**—स्त्री°—कुट-हारिका—-—सेविका, नौकरानी
- **कुटकम्**—नपुं°—-—कुट - कन्—बिना हलस का हल
- **कुटङ्कः**—पुं°—-—कु - टङ्क - घञ्—छत, छप्पर
- **कुटङ्ककः**—पुं°—-—कुटस्य अङ्ककः - ष° त°—वृक्ष के उपर फैली हुई लताओं से बना लतामण्डप
- **कुटङ्ककः**—पुं°—-—कुटस्य अङ्ककः - ष° त°—छोटा घर, झोपड़ी, कुटिया
- **कुटपः**—पुं°—-—कुट - पा - क—अनाज की माप
- **कुटपः**—पुं°—-—कुट - पा - क—घर के निकट वाटिका
- **कुटपः**—पुं°—-—कुट - पा - क—ऋषि, संन्यासी
- **कुटपम्**—नपुं°—-—कुट - पा - क—कमल
- **कुटरः**—पुं°—-—कुट् - करन् बा° —वह थूणी जिसमें मथते समय रई की रस्सी लिपटी रहती है
- **कुटलम्**—नपुं°—-—कुट् - कलच्—छत, छप्पर
- **कुटिः**—पुं°—-—कुट् - इन—शरीर
- **कुटिः**—पुं°—-—कुट् - इन—वृक्ष
- **कुटिः**—पुं°—-—कुट् - इन—कुटिया, झोपड़ी
- **कुटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इन—मोड़, झुकाव
- **कुटिचरः**—पुं°—कुटि-चरः———सूँस, शिंशुक
- **कुटिरम्**—नपुं°—-—कुट् - इरन्—कुटिया, झोपड़ी
- **कुटिल**—वि°—-—कुट् - इलच्—टेढ़ा, झुका हुआ, मुड़ा हुआ, घूँघरदार
- **कुटिल**—वि°—-—कुट् - इलच्—घुमावदार, बलखाती हुई
- **कुटिल**—वि°—-—कुट् - इलच्—कपटी, जालसाज, बेईमान
- **कुटिलाशय**—वि°—कुटिल-आशय—-—दुरात्मा, दुर्गति
- **कुटिलपक्ष्मन्**—वि°—कुटिल-पक्ष्मन्—-—मुड़ी हुई पलकों वाला
- **कुटिलस्वभाव**—वि°—कुटिल-स्वभाव—-—कुटिल प्रकृति, बेईमान, दुर्गति
- **कुटिलिका**—स्त्री°—-—कुटिल - कन् - टाप्, इत्वम्—दबे पाँव आना, दुबक कर चलना

- **कुटिलिका**—स्त्री°—-—कुटिल - कन् - टाप्, इत्वम्—लुहार की भट्टी
- **कुट्टी**—स्त्री°—-—कुटि - ङीष्—मोड़
- **कुट्टी**—स्त्री°—-—कुटि - ङीष्—कुटिया, झोपड़ी
- **कुट्टी**—स्त्री°—-—कुटि - ङीष्—कुट्टिनि, दूती
- **कुट्टीचकः**—पुं°—कुट्टी-चकः—-—किसी संघविशेष का संन्यासी
- **कुट्टीचरः**—पुं°—कुट्टी-चरः—-—एक संन्यासी जो अपने परिवार को अपने पुत्र की देख रेख में छोड़कर अपने आप को पूर्णतया धर्मानुष्ठान एवं तपश्चर्या में लगा देता है
- **कुटीरः**—पुं°—-—कुटी - र—कुटिया, झोपड़ी
- **कुटीरम्**—नपुं°—-—कुटी - र—कुटिया, झोपड़ी
- **कुटीरकः**—पुं°—-—कुटीर - कन्—कुटिया, झोपड़ी
- **कुटुनी**—स्त्री°—-—कुट् - उन् - ङीष्—कुट्टिनी, दूती
- **कुटुम्बम्**—नपुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—गृहस्थी, परिवार
- **कुटुम्बम्**—नपुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—परिवार के कर्तव्य और चिन्ताएँ
- **कुटुम्बकम्**—नपुं°—-—कुटुम्ब - कन्—गृहस्थी, परिवार
- **कुटुम्बकम्**—नपुं°—-—कुटुम्ब - कन्—परिवार के कर्तव्य और चिन्ताएँ
- **कुटुम्बः**—पुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—बन्धु, वंश या विवाह के फलस्वरूप सम्बन्ध
- **कुटुम्बः**—पुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—बाल-बच्चे, संतान
- **कुटुम्बः**—पुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—नाम
- **कुटुम्बः**—पुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—वंश
- **कुटुम्बम्**—नपुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—बन्धु, वंश या विवाह के फलस्वरूप सम्बन्ध
- **कुटुम्बम्**—नपुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—बाल-बच्चे, सन्तान
- **कुटुम्बम्**—नपुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—नाम
- **कुटुम्बम्**—नपुं°—-—कुटुम्ब् - अच्—वंश
- **कुटुम्बकलहः**—पुं°—कुटुम्बम्-कलहः—-—घरेलू झगड़े
- **कुटुम्बकलहम्**—नपुं°—कुटुम्बम्-कलहम्—-—घरेलू झगड़े
- **कुटुम्बभरः**—पुं°—कुटुम्बम्-भरः—-—परिवार का भार
- **कुटुम्बव्यापृत**—वि°—कुटुम्बम्-व्यापृत—-—जो पालन पोषण करता है, तथा परिवार की भलाई का ध्यान रखता है

- **कुटुम्बिकः**—पुं°———कुटुम्ब - ठन्—गृहस्थ, कुल पिता
- **कुटुम्बिकः**—पुं°———कुटुम्ब - ठन्—परिवार का एक सदस्य
- **कुटुम्बिन्**—पुं°———कुटुम्ब - इनि —गृहस्थ, कुल पिता
- **कुटुम्बिन्**—पुं°———कुटुम्ब - इनि —परिवार का एक सदस्य
- **कुटुम्बिकनी**—स्त्री°————गृहपत्नी, गृहिणी
- **कुटुम्बिकनी**—स्त्री°————स्त्री
- **कुटुम्बिनी**—स्त्री°————गृहपत्नी, गृहिणी
- **कुटुम्बिनी**—स्त्री°————स्त्री
- **कुट्ट**—चुरा° उभ° <कुट्टयति>, <कुट्टित>————काटना, बाँटना
- **कुट्ट**—चुरा° उभ° <कुट्टयति>, <कुट्टित>————पीसना, चूर्ण करना
- **कुट्ट**—चुरा° उभ° <कुट्टयति>, <कुट्टित>————दोष देना, निन्दा करना
- **कुट्ट**—चुरा° उभ° <कुट्टयति>, <कुट्टित>————गुणा करना
- **कुट्टकः**—पुं°———कुट्ट् - ण्वुल्—कूटने वाला, पीसने वाला
- **कुट्टनम्**—नपुं°———कुट्ट् - ल्युट्—काटना
- **कुट्टनम्**—नपुं°———कुट्ट् - ल्युट्—कूटना
- **कुट्टनम्**—नपुं°———कुट्ट् - ल्युट्—दुर्वचन कहना, निन्दा करना
- **कुट्टनी** —स्त्री°———कुट्टयति नाशयति स्त्रीणां कुलम् - कुट्ट् - णिच् - ल्युट् - ङीप्—कुटनी, दूती, दल्ली
- **कुट्टिनी**—स्त्री°———कुट्टयति नाशयति स्त्रीणां कुलम् - कुट्ट् - णिच् - ल्युट् - ङीप्, कुट्ट - इनि वा—कुटनी, दूती, दल्ली
- **कुट्टमितम्**—नपुं°———कुट्ट् - घञ्, तेन निर्वृत्त इत्यर्थे कुट्ट् - इमप् - इतच्—प्रियतम के प्यार का दिखावटी तिरस्कार
- **कुट्टाक**—वि°———कुट्ट् - षाकन्—जो विभक्त करता है या काटता है
- **कुट्टारः**—पुं°———कुट्ट - आरन्—पहाड़
- **कुट्टारम्**—नपुं°———कुट्ट - आरन्—मैथुन
- **कुट्टारम्**—नपुं°———कुट्ट - आरन्—ऊनी कंबल
- **कुट्टारम्**—नपुं°———कुट्ट - आरन्—एकान्त
- **कुट्टिमः**—पुं°———कुट्ट् - इमप्—खड़ंजा, छोटे-छोटे पत्थरों को जमा कर बनाया हुआ फर्श, पक्का फर्श
- **कुट्टिमः**—पुं°———कुट्ट् - इमप्—भवन बनाने के लिए तैयार की गई भूमि
- **कुट्टिमः**—पुं°———कुट्ट् - इमप्—रत्नों की खान

- **कुट्टिमः**—पुं॰—-—कुट्ट् - इमप्—अनार
- **कुट्टिमः**—पुं॰—-—कुट्ट् - इमप्—झोपड़ी, कुटिया, छोटा घर
- **कुट्टिमम्**—नपुं॰—-—कुट्ट् - इमप्—खड़ंजा, छोटे-छोटे पत्थरों को जमा कर बनाया हुआ फर्श, पक्का फर्श
- **कुट्टिमम्**—नपुं॰—-—कुट्ट् - इमप्—भवन बनाने के लिए तैयार की गई भूमि
- **कुट्टिमम्**—नपुं॰—-—कुट्ट् - इमप्—रत्नों की खान
- **कुट्टिमम्**—नपुं॰—-—कुट्ट् - इमप्—अनार
- **कुट्टिमम्**—नपुं॰—-—कुट्ट् - इमप्—झोपड़ी, कुटिया, छोटा घर
- **कुट्टिहारिका**—स्त्री॰—-—कुट्टिं मत्स्यमांसादिकं हरति इति - कुट्टि - हृ - ण्वुल् - टाप्, इत्वम्—सेविका, दासी
- **कुट्मल**—वि॰—-—-—कुड्मल
- **कुठः**—पुं॰—-—कुठयते छिद्यते - कुठ् - क—वृक्ष
- **कुठर**—वि॰—-—-—वह थूणी जिसमें मथते समय रई की रस्सी लिपटी रहती है
- **कुठारः**—पुं॰—-—कुठ् - आरन्—कुल्हाड़ा, कुल्हाड़ी
- **कुठारिकः**—पुं॰—-—कुठार - ठन्—लकड़हारा, लकड़ी काटने वाला
- **कुठारिका**—स्त्री॰—-—कुठार - ङीप् - कन् - टाप्, ह्रस्वश्च—छोटा कुल्हाड़ा, फरसा
- **कुठारुः**—पुं॰—-—कुठ् - आरु—वृक्ष
- **कुठारुः**—पुं॰—-—कुठ् - आरु—लंगूर, बन्दर
- **कुठिः**—पुं॰—-—कुठ् - इन् - कित्—वृक्ष
- **कुठिः**—पुं॰—-—कुठ् - इन् - कित्—पहाड़
- **कुडङ्गः**—पुं॰—-—कुठ् - इन् - कित्—कुञ्ज, लतागृह
- **कुडवः**—पुं॰—-—कुड् - कवन्, कपन् वा—एक चौथाई प्रस्थ के बराबर या बारह मुट्ठी अनाज की तोल
- **कुड्मल**—वि॰—-—कुड् - कल, मुट्—खुलता हुआ, पूरा खिला हुआ, लहराता हुआ
- **कुड्मलः**—पुं॰—-—कुड् - कल, मुट्—खुलना, कली
- **कुड्मलम्**—नपुं॰—-—कुड् - कल, मुट्—एक प्रकार का नरक
- **कुड्मलित**—वि॰—-—कुड्मल - इतच्—कलीदार, खिला हुआ
- **कुड्मलित**—वि॰—-—कुड्मल - इतच्—प्रसन्न, हंसमुख
- **कुड्यम्**—नपुं॰—-—कु - यक्, डुगागमः—दीवार
- **कुड्यम्**—नपुं॰—-—कु - यक्, डुगागमः—पलस्तर करना, लीपना, पोतना

- **कुड्यम्**—नपुं°—-—कु - यक्, डुगागमः—उत्सुकता, जिज्ञासा
- **कुड्यछेदिन्**—पुं°—कुड्यम्-छेदिन्—-—घर में सेंध लगाने वाला, चोर
- **कुड्यछेद्यः**—पुं°—कुड्यम्-छेद्यः—-—खोदने वाला
- **कुड्यछेद्यम्**—नपुं°—कुड्यम्-छेद्यम्—-—खाई, गड्ढा, दरार
- **कुण्**—तुदा° पर° <कुणति>, <कुणित>—-—-—सहारा देना, सहायता देना
- **कुण्**—तुदा° पर° <कुणति>, <कुणित>—-—-—शब्द करना
- **कुणकः**—पुं°—-—कुण् - क - कन्—किसी जानवर का अभी पैदा हुआ बच्चा
- **कुणप**—वि°—-—कुण् - कपन्—मुर्दे जैसी दुर्गन्ध देने वाला, बदबूदार
- **कुणपः**—पुं°—-—कुण् - कपन्—मुर्दा, शव
- **कुणपम्**—नपुं°—-—कुण् - कपन्—मुर्दा, शव
- **कुणपः**—पुं°—-—कुण् - कपन्—बर्छी
- **कुणपः**—पुं°—-—कुण् - कपन्—दुर्गन्ध, बदबू
- **कुणिः**—पुं°—-—कुण् - इन्—लुंजा
- **कुण्टक**—वि°—-—कुण्ट् - ण्वुल्—मोटा, स्थूल
- **कुण्ठ्**—भ्वा° पर° <कुण्ठति>, <कुण्ठित>—-—-—कुण्ठित, ठूण्ठा या मन्द हो जाना
- **कुण्ठ्**—भ्वा° पर° <कुण्ठति>, <कुण्ठित>—-—-—लँगड़ा और विकलांग होना
- **कुण्ठ्**—भ्वा° पर° <कुण्ठति>, <कुण्ठित>—-—-—मन्दबुद्धि या मूर्ख होना, सुस्त होना
- **कुण्ठ्**—भ्वा° पर° <कुण्ठति>, <कुण्ठित>—-—-—ढीला करना
- **कुण्ठ्**—भ्वा° पर° प्रेर°—-—-—छिपाना
- **कुण्ठ**—वि°—-—कुण्ठ् - अच्—ठूँठा, सुस्त
- **कुण्ठ**—वि°—-—कुण्ठ् - अच्—मन्द, मूर्ख, जड़
- **कुण्ठ**—वि°—-—कुण्ठ् - अच्—आलसी, सुस्त
- **कुण्ठ**—वि°—-—कुण्ठ् - अच्—दुर्बल
- **कुण्ठकः**—पुं°—-—कुण्ठ् - ण्वुल्—मूर्ख
- **कुण्ठित**—भू° क° कृ°—-—कुठ् - क्त—ठूंठा, मन्दीकृत
- **कुण्ठित**—भू° क° कृ°—-—कुठ् - क्त—जड
- **कुण्ठित**—भू° क° कृ°—-—कुठ् - क्त—विकलांग

- **कुण्डः**—पुं॰—-—कुण् - ड—प्याले की शक्ल का बर्तन, चिलमची, कटोरा
- **कुण्डः**—पुं॰—-—कुण् - ड—हौज
- **कुण्डः**—पुं॰—-—कुण् - ड—कूँड़, कुंड
- **कुण्डः**—पुं॰—-—कुण् - ड—पोखर या पल्वल
- **कुण्डः**—पुं॰—-—कुण् - ड—कमण्डलु या भिक्षापात्र
- **कुण्डम्**—नपुं॰—-—कुण् - ड—प्याले की शक्ल का बर्तन, चिलमची, कटोरा
- **कुण्डम्**—नपुं॰—-—कुण् - ड—हौज
- **कुण्डम्**—नपुं॰—-—कुण् - ड—कूँड़, कुंड
- **कुण्डम्**—नपुं॰—-—कुण् - ड—पोखर या पल्वल
- **कुण्डम्**—नपुं॰—-—कुण् - ड—कमण्डलु या भिक्षापात्र
- **कुण्डः**—पुं॰—-—कुण् - ड—पति के जीवित रहते व्यभिचार के द्वारा किसी दूसरे पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तान
- **कुण्डाशिन्**—पुं॰—कुण्ड-आशिन्—-—भँडुवा, विट
- **कुण्डोधस्**—पुं॰—कुण्ड-ऊधस्—-—वह गाय जिसका ऐन या औड़ी भरी हुई हो
- **कुण्डोधस्**—पुं॰—कुण्ड-ऊधस्—-—भरे पूरे स्तनों वाली स्त्री
- **कुण्डकीटः**—पुं॰—कुण्ड-कीटः—-—रखैल स्त्रियाँ रखने वाला
- **कुण्डकीटः**—पुं॰—कुण्ड-कीटः—-—चार्वाक मतावलम्बी, नास्तिक, जारज ब्राह्मण
- **कुण्डकीलः**—पुं॰—कुण्ड-कीलः—-—नीच या दुश्चरित्र व्यक्ति
- **कुण्डगोलम्**—नपुं॰—कुण्ड-गोलम्—-—कांजी
- **कुण्डगोलम्**—नपुं॰—कुण्ड-गोलम्—-—कुण्ड और गोलक का समुदाय
- **कुण्डगोलकम्**—नपुं॰—कुण्ड-गोलकम्—-—कांजी
- **कुण्डगोलकम्**—नपुं॰—कुण्ड-गोलकम्—-—कुण्ड और गोलक का समुदाय
- **कुण्डलः**—पुं॰—-—कुण्ड - मत्वर्थे ल—कान की बाली, कान का आभूषण
- **कुण्डलः**—पुं॰—-—कुण्ड - मत्वर्थे ल—कड़ा
- **कुण्डलः**—पुं॰—-—कुण्ड - मत्वर्थे ल—रस्सी का गोला
- **कुण्डलम्**—नपुं॰—-—कुण्ड - मत्वर्थे ल—कान की बाली, कान का आभूषण
- **कुण्डलम्**—नपुं॰—-—कुण्ड - मत्वर्थे ल—कड़ा
- **कुण्डलम्**—नपुं॰—-—कुण्ड - मत्वर्थे ल—रस्सी का गोला

- **कुण्डलना**—स्त्री°—-—कुण्डल् - णिच् - युच् - टाप्—घेरा डालना
- **कुण्डलिन्**—वि°—-—कुण्डल - इनि—कुण्डलों से विभूषित
- **कुण्डलिन्**—वि°—-—कुण्डल - इनि—गोलाकार, सर्पिल
- **कुण्डलिन्**—वि°—-—कुण्डल - इनि—घुमावदार, कुण्डली मारे हुए
- **कुण्डलिन्**—पुं°—-—कुण्डल - इनि—साँप
- **कुण्डलिन्**—पुं°—-—कुण्डल - इनि—मोर
- **कुण्डलिन्**—पुं°—-—कुण्डल - इनि—वरुण की उपाधि
- **कुण्डिका**—स्त्री°—-—कुण्ड - कन् - टाप्, इत्वम्—घड़ा
- **कुण्डिका**—स्त्री°—-—कुण्ड - कन् - टाप्, इत्वम्—कमण्डलु
- **कुण्डिन्**—पुं°—-—कुण्ड् - इनि—शिव की उपाधि
- **कुण्डिनम्**—नपुं°—-—कुण्ड् - इनच्—एक नगर का नाम, विदर्भ देश की राजधानी
- **कुण्डिर**—वि°—-—कुण्ड् - इ रन्—बलवान
- **कुण्डीर**—वि°—-—कुण्ड् - ई रन्—बलवान
- **कुण्डिरः**—पुं°—-—कुण्ड् - इ रन्—मनुष्य
- **कुण्डीरः**—पुं°—-—कुण्ड् - ई रन्—मनुष्य
- **कुतः**—अव्य°—-—किम् - तसिल्—कहाँ से, किधर से
- **कुतः**—अव्य°—-—किम् - तसिल्—कहाँ, और कहाँ, और किस स्थान पर आदि
- **कुतः**—अव्य°—-—किम् - तसिल्—क्यों, किसलिए किस कारण से, किस प्रयोजन से
- **कुतः**—अव्य°—-—किम् - तसिल्—कैसे, किसप्रकार
- **कुतः**—अव्य°—-—किम् - तसिल्—और अधिक, और कम
- **कुतः**—अव्य°—-—किम् - तसिल्—क्योंकि, कभी कभी
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—ब्राह्मण
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—द्विज
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—सूर्य
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—अग्नि
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—अतिथि
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—बैल, साँड़

- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—दोहता
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—भानजा
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—अनाज
- **कुतपः**—पुं°—-—कु - तप् - अच्—दिन का आठवाँ मुहूर्त
- **कुतपम्**—नपुं°—-—कु - तप् - अच्—कुश घास
- **कुतपम्**—नपुं°—-—कु - तप् - अच्—एक प्रकार का कम्बल
- **कुतस्त्य**—वि°—-—कुतस् - त्यप्—कहाँ से आया हुआ
- **कुतस्त्य**—वि°—-—कुतस् - त्यप्—कैसे हुआ
- **कुतुकम्**—नपुं°—-—कुत् - उकञ्—इच्छा, रुचि
- **कुतुकम्**—नपुं°—-—कुत् - उकञ्—जिज्ञासा
- **कुतुकम्**—नपुं°—-—कुत् - उकञ्—उत्सुकता, उत्कण्ठा, उत्कटता
- **कुतुपः**—पुं°—-—कुतू - डुप पृषो°, कु - तन् - कू टिलोपः बा°—कुप्पी
- **कुतूः**—स्त्री°—-—कुतू - डुप पृषो°, कु - तन् - कू टिलोपः बा°—कुप्पी
- **कुतूहल**—वि°—-—कुतू - हल् - अच्—आश्चर्यजनक
- **कुतूहल**—वि°—-—कुतू - हल् - अच्—श्रेष्ठ सर्वोत्तम
- **कुतूहल**—वि°—-—कुतू - हल् - अच्—प्रशंसाप्राप्त, प्रसिद्ध
- **कुतूहलम्**—नपुं°—-—कुतू - हल् - अच्—इच्छा, जिज्ञासा
- **कुतूहलम्**—नपुं°—-—कुतू - हल् - अच्—उत्सुकता
- **कुतूहलम्**—नपुं°—-—कुतू - हल् - अच्—जिज्ञासा को उत्तेजित करने वाला, सुहावना, मनोरञ्जक, कौतुक या जिज्ञासा
- **कुत्र**—अव्य°—-—किम् - त्रल्—कहाँ, किस बात में
- **कुत्र**—अव्य°—-—किम् - त्रल्—किस विषय में
- **कुत्रत्य**—वि°—-—कुत्र - त्यप्—कहाँ रहने वाला या कहाँ वास करने वाला
- **कुत्स्**—चुरा° आ° <कुत्सयते>, <कुत्सित>—-—-—गाली देना, बुरा भला कहना, निन्दा करना, कलंक लगाना
- **कुत्सनम्**—नपुं°—-—कुत्स् - ल्युट्—दुर्वचन, घृणा, भर्त्सना, गाली देना
- **कुत्सा**—स्त्री°—-—कुत्स् - ल्युट्, कुत्स् - अ - टाप्—दुर्वचन, घृणा, भर्त्सना, गाली देना
- **कुत्सित**—वि°—-—कुत्स् - क्त—घृणित, तिरस्करणीय
- **कुत्सित**—वि°—-—कुत्स् - क्त—नीच, अधम, दुश्चरित्र

- **कुथः**—पुं॰—-—कु - थक्—कुशा नामक घास
- **कुथः**—पुं॰—-—कु - थक्—छींट की बनी हाथी की झूल
- **कुथम्**—नपुं॰—-—कु - थक्—छींट की बनी हाथी की झूल
- **कुथा**—स्त्री॰—-—कु - थक्+टाप्—छींट की बनी हाथी की झूल
- **कुद्दारः**—पुं॰—-—कु - दृ - णिच् - अण्, पृषो॰—कुदाली, खुर्पा
- **कुद्दारः**—पुं॰—-—कु - दृ - णिच् - अण्, पृषो॰—कांचन वृक्ष
- **कुद्दालः**—पुं॰—-—कु - दृ - णिच् - अण्, पृषो॰, कु - दल् - णिच् - अण् पृषो॰—कुदाली, खुर्पा
- **कुद्दालः**—पुं॰—-—कु - दृ - णिच् - अण्, पृषो॰, कु - दल् - णिच् - अण् पृषो॰—कांचन वृक्ष
- **कुद्दालकः**—पुं॰—-—कु - दृ - णिच् - अण्, पृषो॰, कु - दल् - णिच् - अण् पृषो॰, कुद्दाल - कन्—कुदाली, खुर्पा
- **कुद्दालकः**—पुं॰—-—कु - दृ - णिच् - अण्, पृषो॰, कु - दल् - णिच् - अण् पृषो॰, कुद्दाल - कन्—कांचन वृक्ष
- **कुद्मलम्**—नपुं॰—-—-—कुड्मलम्
- **कुद्रङ्कः**—पुं॰—-—कुद्र - कै - क नि॰ साधुः—चौकी
- **कुद्रङ्कः**—पुं॰—-—कुद्र - कै - क नि॰ साधुः—मचान पर बना मकान
- **कुद्रङ्गः**—पुं॰—-—कुद्र - कै - क नि॰ साधुः, कु - उत् - रञ्ज् - घञ्—चौकी
- **कुद्रङ्गः**—पुं॰—-—कुद्र - कै - क नि॰ साधुः, कु - उत् - रञ्ज् - घञ्—मचान पर बना मकान
- **कुनकः**—पुं॰—-—-—कौवा
- **कुन्तः**—पुं॰—-—कु - उन्द् - क्त, बा॰ शाक॰ पररूपम्—भाला, पंखदार बाण, बर्छी
- **कुन्तः**—पुं॰—-—कु - उन्द् - क्त, बा॰ शाक॰ पररूपम्—छोटा जन्तु, कीड़ा
- **कुन्तलः**—पुं॰—-—कुन्त - ला - क—सिर के बाल, बालों का गुच्छा
- **कुन्तलः**—पुं॰—-—कुन्त - ला - क—कटोरा
- **कुन्तलः**—पुं॰—-—कुन्त - ला - क—हल
- **कुन्तलाः**—पुं॰—-—कुन्त - ला - क—एक देश तथा उसके निवासियों का नाम
- **कुन्तिः**—पुं॰—-—कमु - झिच्—एक राजा का नाम, क्रथ का पुत्र
- **कुन्तिभोजः**—पुं॰—कुन्ति-भोजः—-—एक यादव राजकुमार, कुन्तिदेश का राजा
- **कुन्ती**—स्त्री॰—-—कुन्ति - ङीष्—‘शूर’ नामक यादव की पुत्री पृथा जिसको कुन्तिभोज ने गोद लिया
- **कुन्थ्**—भ्वा॰ क्र्या॰ पर॰ <कुन्थति>, <कुथ्नाति>, <कुन्थित>—-—-—कष्ट सहन करना
- **कुन्थ्**—भ्वा॰ क्र्या॰ पर॰ <कुन्थति>, <कुथ्नाति>, <कुन्थित>—-—-—चिपकना

- **कुन्थ्**—भ्वा॰ क्रया॰ पर॰ <कुन्थति>, <कुथ्नाति>, <कुन्थित>————आलिंगन करना
- **कुन्थ्**—भ्वा॰ क्रया॰ पर॰ <कुन्थति>, <कुथ्नाति>, <कुन्थित>————चोट पहुँचाना
- **कुन्द**—वि॰——कु - दै (दो) - क, नि॰ मुम्, या कु - दत्, नुम्—चमेली का एक भेद, मोतिया
- **कुन्दम्**—नपुं॰——कु - दै (दो) - क, नि॰ मुम्, या कु - दत्, नुम्—चमेली का एक भेद, मोतिया
- **कुन्दम्**—नपुं॰——कु - दै (दो) - क, नि॰ मुम्, या कु - दत्, नुम्—इस पौधे का फूल
- **कुन्दः**—पुं॰——कु - दै (दो) - क, नि॰ मुम्, या कु - दत्, नुम्—विष्णु की उपाधि
- **कुन्दः**—पुं॰——कु - दै (दो) - क, नि॰ मुम्, या कु - दत्, नुम्—खैराद
- **कुन्दकरः**—पुं॰—कुन्द-करः—कुन्द - मा - क—खैरादी
- **कुन्दमः**—पुं॰——कुन्द् - इनि - ङीप्—बिल्ली
- **कुन्दिनी**—स्त्री॰——कु - दृ - डु बा॰ नुम्—कमलों का समूह
- **कुन्दुः**—पुं॰————चूहा, मूसा
- **कुप्**—दिवा॰ पर॰ <कुप्यति>,<कुपित>————क्रुद्ध होना
- **कुप्**—दिवा॰ पर॰ <कुप्यति>,<कुपित>————उत्तेजित होना, सामर्थ्य ग्रहण करना, प्रचण्ड होना
- **अतिकुप्**—दिवा॰ पर॰—अति-कुप्——क्रुद्ध होना
- **परिकुप्**—दिवा॰ पर॰—परि-कुप्——क्रुद्ध होना
- **प्रकुप्**—दिवा॰ पर॰—प्र-कुप्——क्रुद्ध होना
- **प्रकुप्**—दिवा॰ पर॰—प्र-कुप्——उत्तेजित होना, बल प्राप्त करना, बढ़ना
- **प्रकुप्**—दिवा॰ पर॰—प्र-कुप्——उभारना, चिढ़ाना, खिझाना
- **कुपिन्दः**—पुं॰——कुप् - किन्दच्—बुनकर
- **कुपिन्दः**—पुं॰——कुप् - किन्दच्—जुलाहा जाति का नाम
- **कुपिनिन्**—पुं॰——कुपिनी मत्स्यधानी अस्ति अस्य - कुपिनी - इन्—मछुवा
- **कुपिनी**—वि॰——कुप् - इनि - ङीप्—छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़ने का एक प्रकार का जाल
- **कुपूय**—वि॰——कु - पूय् - अच्—घृणित, नीच, अधम, तिरस्करणीय
- **कुप्यम्**—नपुं॰——गुप् - क्यप्, कुत्वम्—अपधातु
- **कुप्यम्**—नपुं॰——गुप् - क्यप्, कुत्वम्—चाँदी और सोने को छोड़कर और कोई धातु
- **कुबेरः**—पुं॰——कुत्सितं बे (वे) रं शरीरं यस्य सः—धन दौलत और कोश का स्वामी, उत्तर दिशा का स्वामी
- **कुवेरः**—पुं॰——कुत्सितं बे (वे) रं शरीरं यस्य सः—धन दौलत और कोश का स्वामी, उत्तर दिशा का स्वामी

- **कुबेराचलः**—पुं°—कुबेर-अचलः——–कैलास पर्वत की उपाधि
- **कुबेराद्रिः**—पुं°—कुबेर-अद्रिः——–कैलास पर्वत की उपाधि
- **कुबेरदिश्**—स्त्री°—कुबेर-दिश्——–उत्तर दिशा
- **कुब्ज**—वि°—–—कु ईषत् उब्जमार्जवं यत्र शकं° तारा°—कुबड़ा, कुटिल
- **कुब्जः**—पुं°—–—कु ईषत् उब्जमार्जवं यत्र शकं° तारा°—मुड़ी हुई तलवार
- **कुब्जः**—पुं°—–—कु ईषत् उब्जमार्जवं यत्र शकं° तारा°—पीठ पर निकला हुआ कूब
- **कुब्जा**—स्त्री°——–कु ईषत् उब्जमार्जवं यत्र शकं° तारा°—कंस की एक सेविका, कहते है उसका शरीर तीन स्थानों पर विकृत था
- **कुब्जकः**—पुं°——–कुब्ज - कन्—एक वृक्ष का नाम
- **कुब्जिका**—स्त्री°——–कुब्जक - टाप्, इत्वम्—आठवर्ष की अविवाहित लड़की
- **कुभृत्**—पुं°——–कु - भृ - क्विप्, तुकागमः—पहाड़
- **कुमारः**—पुं°——–कम् - आरन्, उपधायाः उत्वम्—पुत्र, बालक, युवा
- **कुमारः**—पुं°——–कम् - आरन्, उपधायाः उत्वम्—पाँच वर्ष से कम आयु का बालक
- **कुमारः**—पुं°——–कम् - आरन्, उपधायाः उत्वम्—राजकुमार, युवराज
- **कुमारः**—पुं°——–कम् - आरन्, उपधायाः उत्वम्—युद्ध के देवता कार्तिकेय
- **कुमारः**—पुं°——–कम् - आरन्, उपधायाः उत्वम्—अग्नि
- **कुमारः**—पुं°——–कम् - आरन्, उपधायाः उत्वम्—तोता
- **कुमारः**—पुं°—–—कम् - आरन्, उपधायाः उत्वम्—सिन्धु नदी
- **कुमारपालन**—वि°—कुमार-पालन—–—बच्चों की देखरेख रखने वाला
- **कुमारपालन**—वि°—कुमार-पालन——–राजा शालिवाहन
- **कुमारभृत्या**—स्त्री°—कुमार-भृत्या——–छोटे-छोटे बच्चों की देखरेख
- **कुमारभृत्या**—स्त्री°—कुमार-भृत्या——–गर्भावस्था में स्त्री की देखरेख, प्रसूति विद्या
- **कुमारवाहिन्**—पुं°—कुमार-वाहिन्——–मोर
- **कुमारवाहनः**—पुं°—कुमार-वाहनः——–मोर
- **कुमारसू**—स्त्री°—कुमार-सू—–—पार्वती का विशेषण
- **कुमारसू**—स्त्री°—कुमार-सू—–—गंगा का विशेषण
- **कुमारकः**—पुं°——–कुमार - कन्—बच्चा, युवा
- **कुमारकः**—पुं°——–कुमार - कन्—आँख का तारा

- **कुमारय**—ना० धा० पर० <कुमारयति>—-—-—खेलना, क्रीडा करना
- **कुमारिक**—वि०—-—कुमारी - ठन्—जिसकी लड़कियाँ हों, जहाँ लड़कियों की बहुतायत हो
- **कुमारिन्**—वि०—-—कुमारी - इनि—जिसकी लड़कियाँ हों, जहाँ लड़कियों की बहुतायत हो
- **कुमारिका**—स्त्री०—-—कुमारी - ठन् - टाप्—दस से बारह वर्ष के बीच की लड़की
- **कुमारिका**—स्त्री०—-—कुमारी - ठन् - टाप्—अविवाहित तरुणी, कन्या
- **कुमारिका**—स्त्री०—-—कुमारी - ठन् - टाप्—लड़की, पुत्री
- **कुमारिका**—स्त्री०—-—कुमारी - ठन् - टाप्—दुर्गा
- **कुमारिका**—स्त्री०—-—कुमारी - ठन् - टाप्—कुछ पौधों के नाम
- **कुमारी**—स्त्री०—-—कुमार - ङीष्—दस से बारह वर्ष के बीच की लड़की
- **कुमारी**—स्त्री०—-—कुमार - ङीष्—अविवाहित तरुणी, कन्या
- **कुमारी**—स्त्री०—-—कुमार - ङीष्—लड़की, पुत्री
- **कुमारी**—स्त्री०—-—कुमार - ङीष्—दुर्गा
- **कुमारी**—स्त्री०—-—कुमार - ङीष्—कुछ पौधों के नाम
- **कुमारिकापुत्रः**—पुं०—कुमारिका-पुत्रः—-—अविवाहित स्त्री का पुत्र
- **कुमारिकाश्वसुरः**—पुं०—कुमारिका-श्वसुरः—-—विवाह से पूर्व भ्रष्ट लड़की का श्वसुर
- **कुमुद्**—वि०—-—कु - मुद् - क्विप्—कृपाशून्य, अमित्र
- **कुमुद्**—वि०—-—कु - मुद् - क्विप्—लोभी
- **कुमुद्**—नपुं०—-—कु - मुद् - क्विप्—सफेद कुमुदिनी
- **कुमुद्**—नपुं०—-—कु - मुद् - क्विप्—लाल कमल
- **कुमुदः**—पुं०—-—कौ मोदते इति कुमुदम्—सफेद कुमुदिनी
- **कुमुदः**—पुं०—-—कौ मोदते इति कुमुदम्—लाल कमल
- **कुमुदम्**—नपुं०—-—कौ मोदते इति कुमुदम्—सफेद कुमुदिनी
- **कुमुदम्**—नपुं०—-—कौ मोदते इति कुमुदम्—लाल कमल
- **कुमुदम्**—नपुं०—-—कौ मोदते इति कुमुदम्—चाँदी
- **कुमुदः**—पुं०—-—कौ मोदते इति कुमुदम्—विष्णु का विशेषण
- **कुमुदः**—पुं०—-—कौ मोदते इति कुमुदम्—दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम
- **कुमुदः**—पुं०—-—कौ मोदते इति कुमुदम्—कपूर

- **कुमुदः**—पुं°———कौ मोदते इति कुमुदम्—बन्दरों की एक जाति
- **कुमुदः**—पुं°———कौ मोदते इति कुमुदम्—एक नाग जिसने अपनी छोटी बहन कुमुद्वती को राम के पुत्र कुश को प्रदान किया
- **कुमुदाकारः**—पुं°—कुमुद-आकारः———चाँदी
- **कुमुदाकारः**—पुं°—कुमुद-आकारः———कमलों से भरा हुआ सरोवर
- **कुमुदावासः**—पुं°—कुमुद-आवासः———कमलों से भरा हुआ सरोवर
- **कुमुदेशः**—पुं°—कुमुद-ईशः———चन्द्रमा
- **कुमुदखण्डम्**—नपुं°—कुमुद-खण्डम्———कमलों का समूह
- **कुमुदनाथः**—पुं°—कुमुद-नाथः———चन्द्रमा
- **कुमुदपतिः**—पुं°—कुमुद-पतिः———चन्द्रमा
- **कुमुदबन्धुः**—पुं°—कुमुद-बन्धुः———चन्द्रमा
- **कुमुदबान्धवः**—पुं°—कुमुद-बान्धवः———चन्द्रमा
- **कुमुदसुहृद्**—पुं°—कुमुद-सुहृद्———चन्द्रमा
- **कुमुदवती**—स्त्री°———कुमुद - मतुप् - ङीष्, वत्वम्—कमल का पौधा
- **कुमिदिनी**—स्त्री°———कुमुद - इनि - ङीष्—सफेद फूलों की कुमुदिनी
- **कुमिदिनी**—स्त्री°———कुमुद - इनि - ङीष्—कमलों का समूह
- **कुमिदिनी**—स्त्री°———कुमुद - इनि - ङीष्—कमलस्थली
- **कुमिदिनीनायकः**—पुं°—कुमिदिनी-नायकः———चन्द्रमा
- **कुमिदिनीपतिः**—पुं°—कुमिदिनी-पतिः———चन्द्रमा
- **कुमुद्वत्**—वि°———कुमुद - मतुप्, वत्वम्—जहाँ कमलों की बहुतायत हो
- **कुमुद्वती**—स्त्री°———कुमुद - मतुप्, वत्वम्, ङीप्—सफेद फूलों की कुमुदिनी
- **कुमुद्वती**—स्त्री°———कुमुद - मतुप्, वत्वम्, ङीप्—कमलों का समूह
- **कुमुद्वती**—स्त्री°———कुमुद - मतुप्, वत्वम्, ङीप्—कमलस्थली
- **कुमुद्वतीशः**—पुं°—कुमुद्वती-ईशः———चन्द्रमा
- **कुमोदकः**—पुं°———कु - मुद् - णिच् - ण्वुल्—विष्णु का विशेषण
- **कुम्बा**—स्त्री°———कुम्ब् - अङ् - टाप्—यज्ञभूमि का अहाता
- **कुम्भः**—पुं°———कुं भूमि कुत्सितं वा उम्भति पूरयति - उम्भ् - अच् शकं तारा°—घड़ा, जलपात्र, करवा
- **कुम्भः**—पुं°———कुं भूमि कुत्सितं वा उम्भति पूरयति - उम्भ् - अच् शकं तारा°—हाथी के मस्तक का ललाट स्थल

- **कुम्भः**—पुं°—-—कुं भूमि कुत्सितं वा उम्भति पूरयति - उम्भ् - अच् शकं तारा°—राशिचक्र में ग्यारहवीं राशि कुम्भ
- **कुम्भः**—पुं°—-—कुं भूमि कुत्सितं वा उम्भति पूरयति - उम्भ् - अच् शकं तारा°—२० द्रोण के बराबर अनाज की तौल
- **कुम्भः**—पुं°—-—कुं भूमि कुत्सितं वा उम्भति पूरयति - उम्भ् - अच् शकं तारा°—श्वास को स्थगित करने के लिए नाक तथा मुखविवर को बन्द करना
- **कुम्भकर्णः**—पुं°—कुम्भ-कर्णः—-—'घड़े के सदृश कान वाला' एक महाकाय राक्षस जो रावण का भाई था तथा राम के हाथों मारा गया था
- **कुम्भकारः**—पुं°—कुम्भ-कारः—-—कुम्हार
- **कुम्भकारः**—पुं°—कुम्भ-कारः—-—वर्ण संकर जाति
- **कुम्भघोणः**—पुं°—कुम्भ-घोणः—-—एक नगर का नाम
- **कुम्भजः**—पुं°—कुम्भ-जः—-—अगस्त्य मुनि के विशेषण
- **कुम्भजः**—पुं°—कुम्भ-जः—-—कौरव और पाण्डवों के सैन्यशिक्षाचार्य गुरु द्रोण का विशेषण
- **कुम्भजः**—पुं°—कुम्भ-जः—-—वशिष्ठ का विशेषण
- **कुम्भजन्मनः**—पुं°—कुम्भ-जन्मनः—-—अगस्त्य मुनि के विशेषण
- **कुम्भजन्मनः**—पुं°—कुम्भ-जन्मनः—-—कौरव और पाण्डवों के सैन्यशिक्षाचार्य गुरु द्रोण का विशेषण
- **कुम्भजन्मनः**—पुं°—कुम्भ-जन्मनः—-—वशिष्ठ का विशेषण
- **कुम्भयोनिः**—पुं°—कुम्भ-योनिः—-—अगस्त्य मुनि के विशेषण
- **कुम्भयोनिः**—पुं°—कुम्भ-योनिः—-—कौरव और पाण्डवों के सैन्यशिक्षाचार्य गुरु द्रोण का विशेषण
- **कुम्भयोनिः**—पुं°—कुम्भ-योनिः—-—वशिष्ठ का विशेषण
- **कुम्भसम्भवः**—पुं°—कुम्भ-सम्भवः—-—अगस्त्य मुनि के विशेषण
- **कुम्भसम्भवः**—पुं°—कुम्भ-सम्भवः—-—कौरव और पाण्डवों के सैन्यशिक्षाचार्य गुरु द्रोण का विशेषण
- **कुम्भसम्भवः**—पुं°—कुम्भ-सम्भवः—-—वशिष्ठ का विशेषण
- **कुम्भदासी**—स्त्री°—कुम्भ-दासी—-—कुट्टिनी, दूती
- **कुम्भलग्नम्**—शा°—कुम्भ-लग्नम्—-—दिन का वह समय जब कि राशि चक्र क्षितिज के ऊपर उदय होता है
- **कुम्भमण्डूकः**—पुं°—कुम्भ-मण्डूकः—-—घड़े का मेढ़क
- **कुम्भमण्डूकः**—पुं°—कुम्भ-मण्डूकः—-—अनुभवशून्य मनुष्य
- **कुम्भसन्धिः**—पुं°—कुम्भ-सन्धिः—-—हाथी के सिर पर ललाटस्थलियों के बीच का गर्त
- **कुम्भकः**—पुं°—-—कुम्भ - कन् - कै - क वा—स्तंभ का आधार
- **कुम्भकः**—पुं°—-—कुम्भ - कन् - कै - क वा—प्राणायाम का एक प्रकार जिसमें दाहिने हाथ की अंगुलियों से दोनों नथुने और मुख बन्द करके सांस रोका जाता हैं

- **कुम्भा**—स्त्री॰—-—कुत्सितम् उम्भति पूरयति इति - उम्भ् - अच् - टाप् शक॰ पररूपम—वेश्या, वारांगना
- **कुम्भिका**—स्त्री॰—-—कुम्भ - कन् - टाप्, इत्वम्—छोटा बर्तन
- **कुम्भिका**—स्त्री॰—-—कुम्भ - कन् - टाप्, इत्वम्—वेश्या
- **कुम्भिन्**—पुं॰—-—कुम्भ - इनि—हाथी
- **कुम्भिन्**—पुं॰—-—कुम्भ - इनि—मगरमच्छ
- **कुम्भिनरकः**—पुं॰—कुम्भिन्-नरकः—-—एक विशेष प्रकार का नरक
- **कुम्भिमदः**—पुं॰—कुम्भिन्-मदः—-—हाथी के मस्तक से बहने वाला मद
- **कुम्भिलः**—पुं॰—-—कुम्भ - इलच्—सेंध लगाकर घर में घूसने वाला चोर
- **कुम्भिलः**—पुं॰—-—कुम्भ - इलच्—काव्य चोर, लेख चोर
- **कुम्भिलः**—पुं॰—-—कुम्भ - इलच्—साला, पत्नी का भाई
- **कुम्भिलः**—पुं॰—-—कुम्भ - इलच्—गर्भ पूरा होने से पहले ही उत्पन्न बालक
- **कुम्भी**—स्त्री॰—-—कुम्भ - ङीष्—पानी का छोटा पात्र, घड़िया
- **कुम्भीनसः**—पुं॰,ए॰ व॰ या ब॰ व॰—कुम्भी-नसः—-—एक प्रकार का विषैला साँप
- **कुम्भीपाकः**—पुं॰—कुम्भी-पाकः—-—एक विशेष प्रकार का नरक जिसमें पापी जन कुम्हार के बर्तनों की भाँति पकाये जाते है
- **कुम्भीकः**—पुं॰—-—कुम्भी - कै - क—पुन्नागवृक्ष
- **कुम्भीकमक्षिका**—स्त्री॰—कुम्भीक-मक्षिका—-—एक प्रकार की मक्खी
- **कुम्भीरः**—पुं॰—-—कुम्भिन् - ईर् - अण्—घड़ियाल
- **कुम्भीरकः**—पुं॰—-—कुम्भीर - कनु, रस्य लः, ततः कन् च—चोर
- **कुम्भीलः**—पुं॰—-—कुम्भीर - कनु, रस्य लः, ततः कन् च—चोर
- **कुम्भीलकः**—पुं॰—-—कुम्भीर - कनु, रस्य लः, ततः कन् च—चोर
- **कुर्**—तुदा॰ पर॰ <कुरति>—-—-—शब्द करना, ध्वनि करना
- **कुरङ्करः** —पुं॰—-—कुरम् इति अव्यक्तशब्दं करोति - कुरम् - कृ - ट, कुरम् - कुर् - शच् च—सारस पक्षी
- **कुरङ्कुरः**—पुं॰—-—कुरम् इति अव्यक्तशब्दं करोति - कुरम् - कृ - ट, कुरम् - कुर् - शच् च—सारस पक्षी
- **कुरङ्गः**—पुं॰—-—कृ - अङ्गच्—हरिण
- **कुरङ्गः**—पुं॰—-—कृ - अङ्गच्—हरिण की एक जाति
- **कुरङ्गाक्षी**—स्त्री॰—कुरङ्ग-अक्षी—-—हरिण जैसी आँखों वाली स्त्री
- **कुरङ्गनयना**—स्त्री॰—कुरङ्ग-नयना—-—हरिण जैसी आँखों वाली स्त्री

- **कुरङ्गनेत्रा**—स्त्री°—कुरङ्ग-नेत्रा—-—हरिण जैसी आँखों वाली स्त्री
- **कुरङ्गनाभिः**—पुं°—कुरङ्ग-नाभिः—-—कस्तूरी
- **कुरङ्गम्**—नपुं°—-—कुर - गम् - खच्, मुम्—हरिण
- **कुरङ्गम्**—नपुं°—-—कुर - गम् - खच्, मुम्—हरिण की एक जाति
- **कुरचिल्लः**—पुं°—-—कुर - चिल्ल् - अच्—केकड़ा
- **कुरटः**—पुं°—-—कुर् - अटन् - कित्—जूता बनाने वाला, मोची
- **कुरण्टः**—पुं°—-—कुर् - अण्टक्—पीला सदाबहार, कटसरैया
- **कुरण्टकः**—पुं°—-—कुर् - अण्टक्, कुरण्ट - कन्—पीला सदाबहार, कटसरैया
- **कुरण्टिकाः**—पुं°—-—कुर् - अण्टक्, कुरण्ट - कन्, स्त्रियां टाप् इत्वम्—पीला सदाबहार, कटसरैया
- **कुरण्डः**—पुं°—-—कुर् - अण्डक्—अण्डकोश की वृद्धि, एक रोग जिसमें पोते बढ़ जाते हैं
- **कुररः**—पुं°—-—कु - क्रुरच्—क्रौंच पक्षी, समुद्री उकाब
- **कुरलः**—पुं°—-—कु - क्रुरच्, रलयोरभेदः—क्रौंच पक्षी, समुद्री उकाब
- **कुररी**—स्त्री°—-—कुरर - ङीष्—मादा क्रौंच
- **कुररी**—स्त्री°—-—कुरर - ङीष्—भेड़
- **कुररीगणः**—पुं°—कुररी-गणः—-—क्रौञ्च पक्षियों का झुण्ड
- **कुरवः**—पुं°—-—ईषत् रवो यत्र इति, कुरव - कन्—सदाबहार या कटसरैया की जाति
- **कुरबः**—पुं°—-—ईषत् रवो यत्र इति, कुरव - कन्—सदाबहार या कटसरैया की जाति
- **कुरवकः** —पुं°—-—ईषत् रवो यत्र इति, कुरव - कन्—सदाबहार या कटसरैया की जाति
- **कुरबकः**—पुं°—-—ईषत् रवो यत्र इति, कुरब - कन्—सदाबहार या कटसरैया की जाति
- **कुरवम्** —नपुं°—-—ईषत् रवो यत्र इति, कुरव - कन्—सदाबहार का फूल
- **कुरबम्**—नपुं°—-—ईषत् रवो यत्र इति, कुरब - कन्—सदाबहार का फूल
- **कुरवकम्**—नपुं°—-—ईषत् रवो यत्र इति, कुरब - कन्—सदाबहार का फूल
- **कुरकम्**—नपुं°—-—कृ - ईरन्, उकारादेशः—सदाबहार का फूल
- **कुरीरम्**—नपुं°—-—कृ - ईरन्, उकारादेशः—स्त्रियों का एक प्रकार का सिर पर ओढ़ने का कपड़ा
- **कुरुः**—पुं°—-—कृ - कु उकारादेशः—वर्तमान दिल्ली के निकट भारत के उत्तर में स्थित एक देश
- **कुरुः**—पुं°—-—कृ - कु उकारादेशः—इस देश के राजा
- **कुरुः**—पुं°—-—कृ - कु उकारादेशः—पुरोहित

- **कुरुः**—पुं°—-—कृ - कु उकारादेशः—भात
- **कुरुक्षेत्रम्**—नपुं°—कुरु-क्षेत्रम्—-—दिल्ली के निकट एक विस्तृत क्षेत्र जहाँ कौरव पाण्डवों का महायुद्ध हुआ था
- **कुरुजाङ्गलम्**—नपुं°—कुरु-जाङ्गलम्—-—कुरुक्षेत्र
- **कुरुराज**—वि°—कुरु-राज—-—दुर्योधन का विशेषण
- **कुरुराजः**—पुं°—कुरु-राजः—-—दुर्योधन का विशेषण
- **कुरुविस्तः**—पुं°—कुरु-विस्तः—-—७०० ट्राय ग्रेन के बराबर सोने का तोल
- **कुरुवृद्धः**—पुं°—कुरु-वृद्धः—-—भीष्म का विशेषण
- **कुरुण्टः**—पुं°—-—-—लालरंग का सदाबहार
- **कुरुण्टी**—स्त्री°—-—-—काठ की गुड़िया पुत्तलिका
- **कुरुलः**—पुं°—-—-—बालों का गुच्छा, विशेषकर माथे पर बिखरी हुई जुल्फ
- **कुरुवक**—वि°—-—-—सदाबहार या कटसरैया की जाति
- **कुरुविन्द**—वि°—-—कुरु - विद् - श—लालमणि
- **कुरुविन्दम्**—नपुं°—-—कुरु - विद् - श, मुम्—लालमणि
- **कुरुविन्दम्**—नपुं°—-—कुरु - विद् - श, मुम्—काला नमक, दर्पण
- **कुर्कुटः**—पुं°—-—कुरु - कुट् - क—मुर्गा
- **कुर्कुटः**—पुं°—-—कुरु - कुट् - क—कूड़ा-करकट
- **कुर्कुरः**—पुं°—-—कुर् - कुर् - क—कुत्ता
- **कुर्चिका**—स्त्री°—-—-—चित्रकारी करने की कूँची, ब्रुश या पेंसिल
- **कुर्चिका**—स्त्री°—-—-—चाबी
- **कुर्चिका**—स्त्री°—-—-—कली, फूल
- **कुर्चिका**—स्त्री°—-—-—जमाया हुआ दूध
- **कुर्चिका**—स्त्री°—-—-—सूई
- **कुर्दू**—स्त्री°—-—-—छलाँग लगाना, कूदना
- **कुर्दू**—स्त्री°—-—-—खेलना, बालकेलि करना
- **कुर्दन**—वि°—-—कूर्द् - ल्युट्—उछलना
- **कुर्दन**—वि°—-—कूर्द् - ल्युट्—खेलना, क्रीड़ा करना
- **कुर्परः**—पुं°—-—कुर् - क्विप्, कुर् - पृ - अच् पक्षे दीर्घः नि°—घुटना, कोहनी

- **कूर्परः**—पुं°—-—कुर् - क्विप्, कुर् - पृ - अच् पक्षे दीर्घः नि°—घुटना, कोहनी
- **कुर्पासः**—पुं°—-—कुर्पर - अस् - घञ्,पृषो°—स्त्रियों के पहनने के लिए एक प्रकार की अंगिया या चोली
- **कूर्पासः**—पुं°—-—कुर्पर - अस् - घञ्,पृषो°—स्त्रियों के पहनने के लिए एक प्रकार की अंगिया या चोली
- **कुर्पासकः** —पुं°—-—कूर्पास - कन्—स्त्रियों के पहनने के लिए एक प्रकार की अंगिया या चोली
- **कूर्पासकः**—पुं°—-—कूर्पास - कन्—स्त्रियों के पहनने के लिए एक प्रकार की अंगिया या चोली
- **कुर्वत्**—पुं°—-—कृ - शतृ—करता हुआ
- **कुर्वत्**—पुं°—-—कृ - शतृ—नौकर
- **कुर्वत्**—पुं°—-—कृ - शतृ—जूते बनाने वाला
- **कुलम्**—नपुं°—-—कुल - क—वंश, परिवार
- **कुलम्**—नपुं°—-—कुल - क—पारिवारिक आवास, आसन, घर, गृह
- **कुलम्**—नपुं°—-—कुल - क—उत्तमकुल, उच्चवंश, भला घराना
- **कुलम्**—नपुं°—-—कुल - क—रेवड़, दल, झुंड. संग्रह, समूह
- **कुलम्**—नपुं°—-—कुल - क—चट्टा, टोली, दल
- **कुलम्**—नपुं°—-—कुल - क—शरीर
- **कुलम्**—नपुं°—-—कुल - क—सामने का या अगला भाग
- **कुलः**—पुं°—-—कुल - क—किसी निगम या संघ का अध्यक्ष
- **कुलाकुल**—वि°—कुलम्-अकुल—-—मिश्र चरित्र बल का
- **कुलाकुल**—वि°—कुलम्-अकुल—-—मध्यम श्रेणी का
- **कुलाकुलतिथिः**—पुं°—कुलम्-अकुल-तिथिः—-—चन्द्रमास के पक्ष की द्वितीया, षष्ठी और दशमी
- **कुलाकुलवारः**—पुं°—कुलम्-अकुल-वारः—-—बुधवार
- **कुलाङ्गना**—स्त्री°—कुलम्-अङ्गना—-—आदरणीय तथा उच्च वंश की स्त्री
- **कुलाङ्गारः**—पुं°—कुलम्-अङ्गारः—-—जो अपने कुल को नष्ट करता है
- **कुलाचलः**—पुं°—कुलम्-अचलः—-—मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं
- **कुलाद्रिः**—पुं°—कुलम्-अद्रिः—-—मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं
- **कुलपर्वतः**—पुं°—कुलम्-पर्वतः—-—मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं
- **कुलशैलः**—पुं°—कुलम्-शैलः—-—मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं
- **कुलान्वित**—वि°—कुलम्-अन्वित—-—उच्चकुल में उत्पन्न

- **कुलाभिमानः**—पुं°—कुलम्-अभिमानः—-—कुल का गौरव
- **कुलाचारः**—पुं°—कुलम्-आचारः—-—किसी परिवार या जाति का विशेष कर्तव्य या रिवाज
- **कुलाचार्यः**—पुं°—कुलम्-आचार्यः—-—कुलपुरोहित या कुलगुरु
- **कुलाचार्यः**—पुं°—कुलम्-आचार्यः—-—वंशावलीप्रणेता
- **कुलालम्बिन्**—वि°—कुलम्-आलम्बिन्—-—परिवार का पालन पोषण करने वाला
- **कुलेश्वरः**—पुं°—कुलम्-ईश्वरः—-—परिवार का मुखिया
- **कुलेश्वरः**—पुं°—कुलम्-ईश्वरः—-—शिव का नाम
- **कुलोत्कट**—वि°—कुलम्-उत्कट—-—उच्चकुलोद्भव
- **कुलोत्कटः**—पुं°—कुलम्-उत्कटः—-—अच्छी नस्ल का घोड़ा
- **कुलोत्पन्न**—वि°—कुलम्-उत्पन्न—-—भले कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव
- **कुलोद्गत**—वि°—कुलम्-उद्गत—-—भले कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव
- **कुलोद्भव**—वि°—कुलम्-उद्भव—-—भले कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव
- **कुलोद्वहः**—पुं°—कुलम्-उद्वहः—-—कुटुम्ब का मुखिया या उसे अमर बनाने वाला
- **कुलोपदेशः**—पुं°—कुलम्-उपदेशः—-—खानदानी नाम
- **कुलकज्जलः**—पुं°—कुलम्-कज्जलः—-—कुलकलंक
- **कुलकण्टकः**—पुं°—कुलम्-कण्टकः—-—जो अपने कुटुंब के लिए कांटे की भाँति कष्टदायक हो
- **कुलकन्यका**—स्त्री°—कुलम्-कन्यका—-—उच्चकुल में उत्पन्न लड़की
- **कुलकन्या**—स्त्री°—कुलम्-कन्या—-—उच्चकुल में उत्पन्न लड़की
- **कुलकरः**—पुं°—कुलम्-करः—-—कुलप्रवर्तक, कुल का आदिपुरुष
- **कुलकर्मन्**—नपुं°—कुलम्-कर्मन्—-—अपने कुल की विशेष रीति
- **कुलकलङ्कः**—पुं°—कुलम्-कलङ्कः—-—जो अपने कुल के लिए अपमान का कारण हो
- **कुलक्षयः**—पुं°—कुलम्-क्षयः—-—कुटम्ब का नाश
- **कुलक्षयः**—पुं°—कुलम्-क्षयः—-—कुल की परिसमाप्ति
- **कुलगिरिः**—पुं°—कुलम्-गिरिः—-—मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं
- **कुलभूभृत्**—पुं°—कुलम्-भूभृत्—-—मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं
- **कुलपर्वतः**—पुं°—कुलम्-पर्वतः—-—मुख्य पहाड़, जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खंड में विद्यमान माने जाते हैं
- **कुलघ्न**—वि°—कुलम्-घ्न—-—कुल को बर्बाद करने वाला

- **कुलज**—वि°—कुलम्-ज—-—अच्छे कुल में उत्पन्न, कुलोद्भव
- **कुलजात**—वि°—कुलम्-जात—-—अच्छे कुल में उत्पन्न, कुलोद्भव
- **कुलजात**—वि°—कुलम्-जात—-—कुलक्रमागत, आनुवंशिक
- **कुलजनः**—पुं°—कुलम्-जनः—-—उच्चकुलोद्भव या सम्मानीय पुरुष
- **कुलतन्तुः**—पुं°—कुलम्-तन्तुः—-—जो अपने कुल को बनाये रखता है
- **कुलतिथिः**—पुं°—कुलम्-तिथिः—-—महत्त्वपूर्णतिथि, नामतः चांद्र पक्ष की चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी और चतुर्दशी
- **कुलतिलकः**—पुं°—कुलम्-तिलकः—-—कुटुंब की कीर्ति, जो अपने कुल को सम्मानित करता है
- **कुलदीपः**—पुं°—कुलम्-दीपः—-—जिससे कुल का नाम उजागर हो
- **कुलदीपकः**—पुं°—कुलम्-दीपकः—-—जिससे कुल का नाम उजागर हो
- **कुलदुहितृ**—स्त्री°—कुलम्-दुहितृ—-—उच्चकुल में उत्पन्न लड़की
- **कुलदेवता**—स्त्री°—कुलम्-देवता—-—अभिभावक देवता, कुल का संरक्षक देवता
- **कुलधर्मः**—पुं°—कुलम्-धर्मः—-—कुल की रीति, अपने कुल का कर्तव्य या विशेष रीति
- **कुलधारकः**—पुं°—कुलम्-धारकः—-—पुत्र
- **कुलधुर्यः**—पुं°—कुलम्-धुर्यः—-—परिवार का भरणपोषण करने में समर्थ, वयस्क पुत्र
- **कुलनन्दन**—वि°—कुलम्-नन्दन—-—अपने कुल को प्रसन्न तथा सम्मानित करने वाला
- **कुलनायिका**—स्त्री°—कुलम्-नायिका—-—वाममार्गी शाक्तों की तान्त्रिकपूजा के उत्सव के अवसर पर जिस लड़की की पूजा की जाय
- **कुलनारी**—स्त्री°—कुलम्-नारी—-—उच्चकुलोद्भव सती साध्वी स्त्री
- **कुलनाशः**—पुं°—कुलम्-नाशः—-—कुल का नाश या बरबादी
- **कुलनाशः**—पुं°—कुलम्-नाशः—-—विधर्मी, आचारहीन, बहिष्कृत
- **कुलनाशः**—पुं°—कुलम्-नाशः—-—ऊँट
- **कुलपरम्परा**—स्त्री°—कुलम्-परम्परा—-—वंश को बनानेवाली पीढ़ियों की श्रेणी
- **कुलपतिः**—पुं°—कुलम्-पतिः—-—कुटुम्ब का मुखिया
- **कुलपतिः**—पुं°—कुलम्-पतिः—-—वह ऋषि जो दस सहस्र विद्यार्थियों का पालन पोषण करता है तथा उन्हें शिक्षित करता है
- **कुलपांसुका**—स्त्री°—कुलम्-पांसुका—-—कुलटा स्त्री जो अपने कुल को कलंक लगावे, व्यभिचारिणी स्त्री
- **कुलपालिः**—पुं°—कुलम्-पालिः—-—उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री
- **कुलपालिका**—स्त्री°—कुलम्-पालिका—-—उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री
- **कुलपाली**—स्त्री°—कुलम्-पाली—-—उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री

- **कुलपुत्रः**—पुं°—कुलम्-पुत्रः—-—अच्छे कुल में उत्पन्न बेटा
- **कुलपुरुषः**—पुं°—कुलम्-पुरुषः—-—सम्मान के योग्य तथा उच्चकुल में उत्पन्न पुरुष
- **कुलपुरुषः**—पुं°—कुलम्-पुरुषः—-—पूर्वज
- **कुलपूर्वगः**—पुं°—कुलम्-पूर्वगः—-—पूर्व पुरुष
- **कुलभार्या**—स्त्री°—कुलम्-भार्या—-—सती साध्वी पत्नी
- **कुलभृत्या**—स्त्री°—कुलम्-भृत्या—-—गर्भवती स्त्री की परिचर्या
- **कुलमर्यादा**—स्त्री°—कुलम्-मर्यादा—-—कुल का सम्मान या प्रतिष्ठा
- **कुलमार्गः**—पुं°—कुलम्-मार्गः—-—कुल की रीति, सर्वोत्तमरीति या ईमानदारी का व्यवहार
- **कुलयोषित**—वि°—कुलम्-योषित—-—अच्छे कुल की सदाचारिणी स्त्री
- **कुलवधू**—स्त्री°—कुलम्-वधू—-—अच्छे कुल की सदाचारिणी स्त्री
- **कुलवारः**—पुं°—कुलम्-वारः—-—मुख्य दिन
- **कुलविद्या**—स्त्री°—कुलम्-विद्या—-—कुलक्रमागत प्राप्त ज्ञान, परंपराप्राप्त ज्ञान
- **कुलविप्रः**—पुं°—कुलम्-विप्रः—-—कुलपुरोहित
- **कुलवृद्धः**—पुं°—कुलम्-वृद्धः—-—परिवार का बूढ़ा तथा अनुभवी पुरुष
- **कुलव्रतः**—पुं°—कुलम्-व्रतः—-—कुल का व्रत या प्रतिज्ञा
- **कुलव्रतम्**—नपुं°—कुलम्-व्रतम्—-—कुल का व्रत या प्रतिज्ञा
- **कुलश्रेष्ठिन्**—पुं°—कुलम्-श्रेष्ठिन्—-—किसी कुटुम्ब या श्रमिक संघ का मुखिया
- **कुलश्रेष्ठिन्**—पुं°—कुलम्-श्रेष्ठिन्—-—उच्चकुल में उत्पन्न शिल्पकार
- **कुलसंख्या**—स्त्री°—कुलम्-संख्या—-—कुल की प्रतिष्ठा
- **कुलसंख्या**—स्त्री°—कुलम्-संख्या—-—सम्मानित परिवारों में गणना
- **कुलसन्ततिः**—स्त्री°—कुलम्-सन्ततिः—-—संतान, वंशज, वंशपरम्परा
- **कुलसम्भवः**—वि°—कुलम्-सम्भवः—-—प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न
- **कुलसेवकः**—पुं°—कुलम्-सेवकः—-—श्रेष्ठ नौकर
- **कुलस्त्री**—स्त्री°—कुलम्-स्त्री—-—उच्चकुल की स्त्री, कुललक्ष्मी
- **कुलस्थितिः**—स्त्री°—कुलम्-स्थितिः—-—कुटुम्ब की प्राचीनता या समृद्धि
- **कुलक**—वि°—-—कुल - कन्—अच्छे कुल का, अच्छे कुल में जन्मा हुआ
- **कुलकः**—पुं°—-—कुल - कन्—शिल्पियों की श्रेणी का मुखिया

- **कुलकः**—पुं°—-—कुल - कन्—उच्च कुल में उत्पन्न शिल्पकार
- **कुलकः**—पुं°—-—कुल - कन्—बाँबी
- **कुलकम्**—पुं°—-—कुल - कन्—संग्रह, समूह
- **कुलकम्**—नपुं°—-—कुल - कन्—व्याकरण की दृष्टि से सम्बन्ध श्लोकों का समूह
- **कुलटा**—नपुं°—-—कुल - अट् - अच् - टाप् शक° पररूपम्—व्यभिचारिणी स्त्री
- **कुलटापतिः**—पुं°—कुलटा-पतिः—-—भ्रष्टा या जारिणी स्त्री का स्वामी
- **कुलतः**—नपुं°—-—कुल - तसिल्—जन्म से
- **कुलत्थः**—पुं°—-—कुल - स्था - क पृषो° साधुः—कुलथी, एक प्रकार की दाल
- **कुलन्धर**—वि°—-—कुल - धृ - खच्, मुम्—अपने कुल का सिलसिला चलाने वाला
- **कुलम्भरः**—पुं°—-—कुल - भृ - खच्, मुम्—चोर
- **कुलम्भलः**—पुं°—-—कुल - भृ - खच्, मुम्—चोर
- **कुलवत्**—वि°—-—कुल - मतुप्, मस्य वत्वम्—कुलीन, अच्छे घराने में उत्पन्न
- **कुलायः**—पुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—पक्षियों का घोंसला
- **कुलायः**—पुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—शरीर
- **कुलायः**—पुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—स्थान, जगह
- **कुलायः**—पुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—बुना हुआ वस्त्र, जाला
- **कुलायः**—पुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—बक्स या पात्र
- **कुलायम्**—नपुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—पक्षियों का घोंसला
- **कुलायम्**—नपुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—शरीर
- **कुलायम्**—नपुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—स्थान, जगह
- **कुलायम्**—नपुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—बुना हुआ वस्त्र, जाला
- **कुलायम्**—नपुं°—-—कुलं पक्षिसमूहः अयतेऽत्र - कुल - अय् - घञ्—बक्स या पात्र
- **कुलायनिलायः**—पुं°—कुलाय-निलायः—-—घोंसले में बैठना, अंडे सेना, अंडों में से बच्चे निकालने लिए अंडों के ऊपर बैठना
- **कुलायस्थः**—पुं°—कुलाय-स्थः—-—पक्षी
- **कुलायिका**—स्त्री°—-—कुलाय - ठन् - टाप्—पक्षियों का पिंजड़ा, चिड़ियाघर, कबूतरखाना, दड़बा
- **कुलालः**—पुं°—-—कुल् - कालन्—कुम्हार
- **कुलालः**—पुं°—-—कुल् - कालन्—जंगली मुर्गा

- **कुलिः**—पुं°—-—कुल् - इन्, कित्—हाथ
- **कुलिक**—वि°—-—कुल - ठन्—अच्छे कुल का, उत्तम कुल में उत्पन्न
- **कुलिकः**—पुं°—-—कुल - ठन्—स्वजन
- **कुलिकः**—पुं°—-—कुल - ठन्—शिल्पीसंघ का मुखिया
- **कुलिकः**—पुं°—-—कुल - ठन्—उच्चकुलोद्भव कलाकार
- **कुलिकवेला**—स्त्री°—कुलिक-वेला—-—दिन का वह समय जब कि कोई शुभ कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए
- **कुलिङ्गः**—पुं°—-—कु - लिङ्ग - अच्—पक्षी
- **कुलिङ्गः**—पुं°—-—कु - लिङ्ग - अच्—चिड़िया
- **कुलिन्**—वि°—-—कुल - इनि—कुलीन, उच्चकुलोद्भव
- **कुलिन्**—पुं°—-—कुल - इनि—पहाड़
- **कुलिन्दः**—ब° व°—-—कुल् - इन्द—एक देश तथा उसके शासकों का नाम
- **कुलिरः**—पुं°—-—कुल् - इरन्, कित्—केकड़ा
- **कुलिरः**—पुं°—-—कुल् - इरन्, कित्—राशिचक्र में चौथी राशि, कर्कराशि
- **कुलिरम्**—नपुं°—-—कुल् - इरन्, कित्—केकड़ा
- **कुलिरम्**—नपुं°—-—कुल् - इरन्, कित्—राशिचक्र में चौथी राशि, कर्कराशि
- **कुलिशः**—पुं°—-—कुलि - शी - ड—इन्द्र का वज्र
- **कुलिशः**—पुं°—-—कुलि - शी - ड—वस्तु का सिरा या किनारा
- **कुलीशः**—पुं°—-—कुलि - शी - ड, पक्षे पृषो° दीर्घः—इन्द्र का वज्र
- **कुलीशः**—पुं°—-—कुलि - शी - ड, पक्षे पृषो° दीर्घः—वस्तु का सिरा या किनारा
- **कुलिशम्**—नपुं°—-—कुलि - शी - ड—इन्द्र का वज्र
- **कुलिशम्**—नपुं°—-—कुलि - शी - ड—वस्तु का सिरा या किनारा
- **कुलीशम्**—नपुं°—-—कुलि - शी - ड, पक्षे पृषो° दीर्घः—इन्द्र का वज्र
- **कुलीशम्**—नपुं°—-—कुलि - शी - ड, पक्षे पृषो° दीर्घः—वस्तु का सिरा या किनारा
- **कुलिशधरः**—पुं°—कुलिश-धरः—-—इन्द्र का विशेषण
- **कुलिशपाणिः**—पुं°—कुलिश-पाणिः—-—इन्द्र का विशेषण
- **कुलिशनायकः**—पुं°—कुलिश-नायकः—-—मैथुन की विशेष रीति, रतिसम्बन्ध
- **कुली**—स्त्री°—-—कुलि - ङीष्—पत्नी की बड़ी बहन, बड़ी साली

- **कुलीन**—वि०—-—कुल - ख—ऊँचे वंश का, अच्छे कुल का, उत्तम परिवार में जन्मा हुआ
- **कुलीनः**—पुं०—-—कुल - ख—अच्छी नस्ल का घोड़ा
- **कुलीनसम्**—नपुं०—-—कुलीनंभूमिलग्नं द्रव्यं स्यति - कुलीन - सो - क—पानी
- **कुलीरः**—पुं०—-—कुल् - ईरन्, कित्—केकड़ा
- **कुलीरः**—पुं०—-—कुल् - ईरन्, कित्—राशिचक्र में चौथी राशि, कर्कराशि
- **कुलीरकः**—पुं०—-—कुलोर - कन्—केकड़ा
- **कुलीरकः**—पुं०—-—कुलोर - कन्—राशिचक्र में चौथी राशि, कर्कराशि
- **कुलक्कगुञ्जा**—स्त्री०—-—कौ पृथिव्यां लुक्का, लुक्कायिता गुञ्ज इव—लुकाठी, जलती हुई लकड़ी
- **कुलूतः**—पुं०—-—-—एक देश तथा उसके शासकों का नाम
- **कुल्माषम्**—नपुं०—-—कुल् - क्विप्, कुल् माषोऽस्मिन् ब० स०—कांजी
- **कुल्माषः**—पुं०—-—कुल् - क्विप्, कुल् माषोऽस्मिन् ब० स०—एक प्रकार का अनाज
- **कुल्माषाभिषुतम्**—नपुं०—कुल्माषम्-अभिषुतम्—-—कांजी
- **कुल्य**—वि०—-—कुल - यत्—कुटुंब, वंश या निगम से सम्बन्ध रखने वाला
- **कुल्य**—वि०—-—कुल - यत्—सत्कुलोद्भव
- **कुल्यः**—पुं०—-—कुल - यत्—प्रतिष्ठित मनुष्य
- **कुल्यम्**—नपुं०—-—कुल - यत्—कौटुंबिक विषयों में मित्रों की भाँति पूछताछ
- **कुल्यम्**—नपुं०—-—कुल - यत्—हड्डी
- **कुल्यम्**—नपुं०—-—कुल - यत्—मांस
- **कुल्यम्**—नपुं०—-—कुल - यत्—छाज
- **कुल्या**—स्त्री०—-—कुल - यत्—साध्वी स्त्री
- **कुल्या**—स्त्री०—-—कुल - यत्—छोटी नदी, नहर, सरिता
- **कुल्या**—स्त्री०—-—कुल - यत्—परिखा, खाई
- **कुल्या**—स्त्री०—-—कुल - यत्—आठ द्रोण के बराबर अनाज की तोल
- **कुवम्**—नपुं०—-—कु - वा - क—फूल
- **कुवम्**—नपुं०—-—कु - वा - क—कमल
- **कुवर**—वि०—-—कु+ १वरच्—कषाय, कसैला
- **कुवर**—वि०—-—कु+ १वरच्—बिना दाढ़ी का

- **कुवलम्**—नपुं°—-—कु - वल - अच्—कुमुद
- **कुवलम्**—नपुं°—-—कु - वल - अच्—मोती
- **कुवलम्**—नपुं°—-—कु - वल - अच्—पानी
- **कुवलयम्**—नपुं°—-—कोः पृथिव्याः वलयमिव - उप° स°—नीला कुमुद
- **कुवलयम्**—नपुं°—-—कोः पृथिव्याः वलयमिव - उप° स°—कुमुद
- **कुवलयम्**—नपुं°—-—कोः पृथिव्याः वलयमिव - उप° स°—पृथ्वी
- **कुवलयिनी**—स्त्री°—-—कुवलय - इनि - ङीप्—नीली कुमुदिनी का पौधा
- **कुवलयिनी**—स्त्री°—-—कुवलय - इनि - ङीप्—कमलों का समूह
- **कुवलयिनी**—स्त्री°—-—कुवलय - इनि - ङीप्—कमलस्थली
- **कुवलयिनी**—स्त्री°—-—कुवलय - इनि - ङीप्—कमल का पौधा
- **कुवाद**—वि°—-—कु - वद् - अण्—मान घटाने वाला, साख कम करने वाला, निन्दक
- **कुवाद**—वि°—-—कु - वद् - अण्—नीच, दुरात्मा, अधम
- **कुविकः**—पुं°,ब° व°—-—कु - विद् - श, मुम्—एक देश का नाम
- **कुविन्दः**—पुं°—-—कु - विद् - श, मुम्—बुनकर
- **कुविन्दः**—पुं°—-—कु - विद् - श, मुम्—जुलाहा जाति का नाम
- **कुवेणी**—स्त्री°—-—कु - वेण् - इन् - ङीप्—मछलियाँ रखने की टोकरी
- **कुवेणी**—स्त्री°—-—कु - वेण् - इन् - ङीप्—बुरी तरह बँधी हुई सिर की चोटी
- **कुवेलम्**—नपुं°—-—कुवेषु जलज पुष्पेषु ईं शोभां लाति - कुव - ई - ला - क—कमल
- **कुशः**—पुं°—-—कु - शी - ड—एक प्रकार का घास जो पवित्र माना जाता हैं और बहुत से धर्मानुष्ठानों में जिसका होना आवश्यक समझा जाता हैं
- **कुशः**—पुं°—-—कु - शी - ड—राम के बड़े पुत्र का नाम
- **कुशम्**—नपुं°—-—कु - शी - ड—पानी
- **कुशाग्रम्**—नपुं°—कुश-अग्रम्—-—कुशघास के पत्ते का तेज किनारा
- **कुशाग्रम्**—नपुं°—कुश-अग्रम्—-—तीव्रबुद्धि, तेजबुद्धि वाला, तीक्ष्णबुद्धि
- **कुशाग्रीय**—वि°—कुश-अग्रीय—-—तीव्र, तेज
- **कुशाङ्गरीयम्**—वि°—कुश-अङ्गरीयम्—-—कुशघास की बनी अंगूठी जो धर्मानुष्ठान के अवसर पर पहनी जाती है
- **कुशासनम्**—नपुं°—कुश-आसनम्—-—कुश का बना हुआ आसन या चटाई
- **कुशस्थलम्**—नपुं°—कुश-स्थलम्—-—उत्तर भारत में एक स्थान का नाम

- **कुशल**—वि॰—-—कुशान् लातीति - कुश - ला - क—सही, उचित, मंगल शुभ
- **कुशलम्**—नपुं॰—-—कुशान् लातीति - कुश - ला - क—कल्याण, प्रसन्न तथा समृद्ध अवस्था, प्रसन्नता
- **कुशलम्**—नपुं॰—-—कुशान् लातीति - कुश - ला - क—गुण
- **कुशलम्**—नपुं॰—-—कुशान् लातीति - कुश - ला - क—चतुराई, योग्यता
- **कुशलकाम**—वि॰—कुशल-काम—-—प्रसन्नता का इच्छुक
- **कुशलप्रश्नः**—पुं॰—कुशल-प्रश्नः—-—किसी से कुशलमंगल पूछना
- **कुशलबुद्धि**—वि॰—कुशल-बुद्धि—-—बुद्धिमान, समझदार, तीव्रबुद्धि, तीक्ष्णबुद्धि
- **कुशलिन्**—वि॰—-—कुशल - इनि—प्रसन्न, राजी खुशी, समृद्ध
- **कुशा**—स्त्री॰—-—कुश - टाप्—रस्सी का गोला
- **कुशा**—स्त्री॰—-—कुश - टाप्—लगाम
- **कुशावती**—स्त्री॰—-—कुश - मतुप्, मस्य वः, दीर्घः—इस नाम की एक नगरी, राम के पुत्र कुश की राजधानी
- **कुशिक**—वि॰—-—कुश - ठन्—भैंगी आँख वाला
- **कुशिकः**—पुं॰—-—कुश - ठन्—विश्वामित्र के दादा का नाम
- **कुशिकः**—पुं॰—-—कुश - ठन्—फाली
- **कुशिकः**—पुं॰—-—कुश - ठन्—तेल की गाद
- **कुशी**—स्त्री॰—-—कुश - ङीष्—हल की फाली
- **कुशीलवः**—पुं॰—-—कुत्सितं शीलमस्य - कुशील - व—भाट, गवैया
- **कुशीलवः**—पुं॰—-—कुत्सितं शीलमस्य - कुशील - व—पात्र, नर्तक
- **कुशीलवः**—पुं॰—-—कुत्सितं शीलमस्य - कुशील - व—समाचार फैलाने वाला
- **कुशीलवः**—पुं॰—-—कुत्सितं शीलमस्य - कुशील - व—वाल्मीकि का विशेषण
- **कुशुम्भः**—पुं॰—-—कु - शुम्भ् - अच्—संन्यासी का जालपात्र, कमण्डलु
- **कुशूलः**—पुं॰—-—कुस् - ऊलच्, पृषो॰ सस्य शत्वम्—अन्नागार, कोठी, भण्डार
- **कुशूलः**—पुं॰—-—कुस् - ऊलच्, पृषो॰ सस्य शत्वम्—भूसी से बनाई हुई आग
- **कुशेशयम्**—नपुं॰—-—कुशे - शी - अच्. अलुक् स॰—कुमुद, कमल
- **कुशेशयः**—पुं॰—-—कुशे - शी - अच्. अलुक् स॰—सारस पक्षी
- **कुष्**—क्रिया॰ पर॰ <कुष्णाति>, <कुषित>—-—फाड़ना, निचोड़ना, खींचना, निकालना
- **कुष्**—क्रिया॰ पर॰ <कुष्णाति>, <कुषित>—-—जाँचना, परीक्षा लेना

- **कुष्**—क्रिया० पर० <कुष्णाति>, <कुषित>————चमकना
- **निष्कुष्**—क्रिया० पर०—निस्-कुष्——निचोड़ना, फाड़ना, निकालना
- **कुषाकुः**—पुं०——कुष् - काकु—सूर्य
- **कुषाकुः**—पुं०——कुष् - काकु—अग्नि
- **कुषाकुः**—पुं०——कुष् - काकु—लंगूर, बंदर
- **कुष्ठः**—पुं०——कुष् - कथन—कोढ़
- **कुष्ठम्**—नपुं०——कुष् - कथन—कोढ़
- **कुष्ठारिः**—पुं०—कुष्ठ-अरिः——गन्धक
- **कुष्ठारिः**—पुं०—कुष्ठ-अरिः——कुछ पौधों के नाम
- **कुष्ठित**—वि०——कुष्ठ - इतच्—कोढ़ से पीडित, कोढ़ग्रस्त
- **कुष्ठिन्**—वि०——कुष्ठ - इनि—कोढ़ी
- **कुष्माण्डः**—पुं०——कु ईषत् उष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य ब० स० शक० पररूपम्—एक प्रकार की लौकी, तूमड़ी, कुम्हड़ा
- **कुस्**—दिवा० पर० <कुष्यति>, <कुसित>————आलिंगन करना
- **कुस्**—दिवा० पर० <कुष्यति>, <कुसित>————घेरना
- **कुसितः**—पुं०——कुस् - क्त—आवाद देश
- **कुसितः**—पुं०——कुस् - क्त—जो सूद से जीविका चलाता हैं
- **कुसीदः**—पुं०——कुस् - ईद—साहूकार या सूदखोर
- **कुसिदः**—पुं०————साहूकार या सूदखोर
- **कुसीदम्** —नपुं०——कुस् - ईद—वह कर्जा या वस्तु जो ब्याज सहित लौटायी जाय
- **कुसीदम्** —नपुं०——कुस् - ईद—उधार देना, सूदखोरी, सूदखोरी का व्यवसाय
- **कुसिदम्**—नपुं०————वह कर्जा या वस्तु जो ब्याज सहित लौटायी जाय
- **कुसिदम्**—नपुं०————उधार देना, सूदखोरी, सूदखोरी का व्यवसाय
- **कुसीदपथः**—पुं०—कुसीद-पथः——सूदखोरी, सूदखोर का ब्याज, ५ प्रतिशत से अधिक ब्याज
- **कुसीदवृद्धिः**—स्त्री०—कुसीद-वृद्धिः——धन पर मिलने वाला ब्याज
- **कुसीदा**—स्त्री०——कुसीद - टाप्—सूदखोर स्त्री
- **कुसीदायी**—पुं०——कुसीद - ङीप्, ऐ आदेशः—सूदखोर की पत्नी
- **कुसीदिकः**—पुं०——कुसीद - ष्ठन्, इनि वा—सूदखोर

- **कुसीदिन्**—पुं°—-—कुसीद - ष्ठन्, इनि वा—सूदखोर
- **कुसुमम्**—नपुं°—-—कुष् - उम—फूल
- **कुसुमम्**—नपुं°—-—कुष् - उम—ऋतु-स्राव
- **कुसुमम्**—नपुं°—-—कुष् - उम—फल
- **कुसुमाञ्जनम्**—नपुं°—कुसुमम्-अञ्जनम्—-—पीतल की भस्म जो अंजन की भाँति प्रयुक्त होती है
- **कुसुमाञ्जलिः**—पुं°—कुसुमम्-अञ्जलिः—-—मुट्ठी भर फूल
- **कुसुमाधिपः**—पुं°—कुसुमम्-अधिपः—-—चम्पक वृक्ष
- **कुसुमाधिराजः**—पुं°—कुसुमम्-अधिराजः—-—चम्पक वृक्ष
- **कुसुमावचायः**—पुं°—कुसुमम्-अवचायः—-—फूलों का चुनना
- **कुसुमावतंसकम्**—पुं°—कुसुमम्-अवतंसकम्—-—फूलों का गजरा
- **कुसुमास्त्रः**—पुं°—कुसुमम्-अस्त्रः—-—पुष्पमय बाण
- **कुसुमास्त्रः**—पुं°—कुसुमम्-अस्त्रः—-—कामदेव
- **कुसुमायुधः**—पुं°—कुसुमम्-आयुधः—-—पुष्पमय बाण
- **कुसुमायुधः**—पुं°—कुसुमम्-आयुधः—-—कामदेव
- **कुसुमेषुः**—पुं°—कुसुमम्-इषुः—-—पुष्पमय बाण
- **कुसुमेषुः**—पुं°—कुसुमम्-इषुः—-—कामदेव
- **कुसुमबाणः**—पुं°—कुसुमम्-बाणः—-—पुष्पमय बाण
- **कुसुमबाणः**—पुं°—कुसुमम्-बाणः—-—कामदेव
- **कुसुमशरः**—पुं°—कुसुमम्-शरः—-—पुष्पमय बाण
- **कुसुमशरः**—पुं°—कुसुमम्-शरः—-—कामदेव
- **कुसुमाकरः**—पुं°—कुसुमम्-आकरः—-—उद्यान
- **कुसुमाकरः**—पुं°—कुसुमम्-आकरः—-—फूलों का गुच्छा
- **कुसुमाकरः**—पुं°—कुसुमम्-आकरः—-—वसन्त ऋतु
- **कुसुमात्मकम्**—नपुं°—कुसुमम्-आत्मकम्—-—केसर, जाफरान
- **कुसुमासवम्**—नपुं°—कुसुमम्-आसवम्—-—शहद
- **कुसुमासवम्**—नपुं°—कुसुमम्-आसवम्—-—एक प्रकार की मादक मदिरा
- **कुसुमोज्जवल**—वि°—कुसुमम्-उज्जवल—-—फूलों से चमकीला

- **कुसुमकार्मुकः**—पुं°—कुसुमम्-कार्मुकः—-—कामदेव के विशेषण
- **कुसुमचापः**—पुं°—कुसुमम्-चापः—-—कामदेव के विशेषण
- **कुसुमधन्वन्**—पुं°—कुसुमम्-धन्वन्—-—कामदेव के विशेषण
- **कुसुमचित**—वि°—कुसुमम्-चित—-—पुष्पों का अम्बार हो गया है जहाँ
- **कुसुमपुरम्**—नपुं°—कुसुमम्-पुरम्—-—पाटलीपुत्र
- **कुसुमलता**—स्त्री°—कुसुमम्-लता—-—खिली हुई लता
- **कुसुमशयनम्**—नपुं°—कुसुमम्-शयनम्—-—फूलों की शय्या
- **कुसुमस्तवकः**—पुं°—कुसुमम्-स्तवकः—-—फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता
- **कुसुमवती**—स्त्री°—-—कुसुम - मतुप् - ङीप्, मस्य वः —ऋतुमती या रजस्वला स्त्री
- **कुसुमित**—वि°—-—कुसुम् - इतच्—फूलों से युक्त, पुष्पों से सुसज्जित
- **कुसुमालः**—पुं°—-—कुसुमवत् लोभनीयानि द्रव्याणि आलयति - इति कुसुम - आ - ला - क—चोर
- **कुसुम्भः**—पुं°—-—कुस् - उम्भ—कुसुम्भ
- **कुसुम्भः**—पुं°—-—कुस् - उम्भ—केसर
- **कुसुम्भः**—पुं°—-—कुस् - उम्भ—संन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु
- **कुसुम्भम्**—नपुं°—-—कुस् - उम्भ—कुसुम्भ
- **कुसुम्भम्**—नपुं°—-—कुस् - उम्भ—केसर
- **कुसुम्भम्**—नपुं°—-—कुस् - उम्भ—संन्यासी का जलपात्र, कमण्डलु
- **कुसुम्भम्**—नपुं°—-—कुस् - उम्भ—सोना
- **कुसुम्भः**—पुं°—-—कुस् - उम्भ—बाह्य स्नेह
- **कुसूलः**—पुं°—-—कुस् - ऊलच् —अन्नागार, भण्डार, गृह
- **कुसृतिः**—स्त्री°—-—कुत्सिता सृतिः—जालसाजी, धोखादेही, ठगी
- **कुस्तुभः**—पुं°—-—कु - स्तुभ् - क—विष्णु
- **कुस्तुभः**—पुं°—-—कु - स्तुभ् - क—समुद्र
- **कुहः**—पुं°—-—कुह् - णिच् - अच्—कुबेर, धनपति
- **कुहकः**—पुं°—-—कुह् - क्वुन्—छली, ठग, चालाक
- **कुहकम्**—नपुं°—-—कुह् - क्वुन्—चालाकी, धोखा
- **कुहका**—स्त्री°—-—कुह् - क्वुन् - टाप्—चालाकी, धोखा

- **कुहककार**—वि°—कुहक-कार—-—कपटी, छलिया
- **कुहकचकित**—वि°—कुहक-चकित—-—दाँवपेंच से डरा हुआ, शक करने वाला, सावधान, सजग
- **कुहकस्वनः**—पुं°—कुहक-स्वनः—-—मुर्गा
- **कुहकस्वरः**—पुं°—कुहक-स्वरः—-—मुर्गा
- **कुहनः**—पुं°—-—कु - हन् - अच्—मूसा
- **कुहनः**—पुं°—-—कु - हन् - अच्—साँप
- **कुहनम्**—नपुं°—-—कु - हन् - अच्—छोटा मिट्टी का बर्तन
- **कुहनम्**—नपुं°—-—कु - हन् - अच्—शीशे का बर्तन
- **कुहना**—स्त्री°—-—कुह् - यु, कुहन - क - टाप्, इत्वम्—स्वार्थ की पूर्ति के लिए धार्मिक कड़ी साधनाओं का अनुष्ठान, दंभ
- **कुहनिका**—स्त्री°—-—कुह् - यु, कुहन - क - टाप्, इत्वम्—स्वार्थ की पूर्ति के लिए धार्मिक कड़ी साधनाओं का अनुष्ठान, दंभ
- **कुहरम्**—नपुं°—-—कुह् - क - कुहं राति, रा - क—गुफा, गढ़ा
- **कुहरम्**—नपुं°—-—कुह् - क - कुहं राति, रा - क—कान
- **कुहरम्**—नपुं°—-—कुह् - क - कुहं राति, रा - क—गला
- **कुहरम्**—नपुं°—-—कुह् - क - कुहं राति, रा - क—सामीप्य
- **कुहरम्**—नपुं°—-—कुह् - क - कुहं राति, रा - क—मैथुन
- **कुहरितम्**—नपुं°—-—कुहर - इतच्—ध्वनि
- **कुहरितम्**—नपुं°—-—कुहर - इतच्—कोयल की कुकू
- **कुहरितम्**—नपुं°—-—कुहर - इतच्—मैथुन के समय सी सी का शब्द
- **कुहुः**—स्त्री°—-—कुह् - कु—नया चन्द्र दिवस अर्थात् चान्द्रमास का अन्तिम दिन
- **कुहुः**—स्त्री°—-—कुह् - कु—इस दिन की अधिष्ठात्री देवी
- **कुहुः**—स्त्री°—-—कुह् - कु—कोयल की कुक
- **कुहूः**—स्त्री°—-—कुहु - ऊङ्—नया चन्द्र दिवस अर्थात् चान्द्रमास का अन्तिम दिन
- **कुहूः**—स्त्री°—-—कुहु - ऊङ्—इस दिन की अधिष्ठात्री देवी
- **कुहूः**—स्त्री°—-—कुहु - ऊङ्—कोयल की कुक
- **कुहुकण्ठः**—पुं°—कुहु-कण्ठः—-—कोयल
- **कुहुमुखः**—पुं°—कुहु-मुखः—-—कोयल
- **कुहुरवः**—पुं°—कुहु-रवः—-—कोयल

- **कुहुशब्दः**—पुं°—कुहु-शब्दः———कोयल
- **कू**—भ्वा° तुदा, आ° <कवते>, <कुवते>————ध्वनि करना, कलरव करना
- **कू**—भ्वा° तुदा, आ° <कवते>, <कुवते>————कष्टावस्था में क्रन्दन करना
- **कू**—क्र्या° उभ° <कुनाति>, <कूनाति>, <कुनीते>, <कूनीते>————ध्वनि करना, कलरव करना
- **कू**—क्र्या° उभ° <कुनाति>, <कूनाति>, <कुनीते>, <कूनीते>————कष्टावस्था में क्रन्दन करना
- **कः**—स्त्री°———कू - क्विप्—पिशाचिनी, चुडै़ल
- **कचः**—पुं°———कू - चट्—स्त्री का स्तन
- **कचिका**—स्त्री°———कूच - कन् - टाप्, इत्वम्—बालों का बना छोटा ब्रुश, कुंची
- **कचिका**—स्त्री°———कूच - कन् - टाप्, इत्वम्—ताली
- **कूची**—स्त्री°———कूच - ङीष्—बालों का बना छोटा ब्रुश, कुंची
- **कूची**—स्त्री°———कूच - ङीष्—ताली
- **कूज्**—भ्वा° पर° <कूजति>, <कूजित>————अस्पष्ट ध्वनि करना, गूंजना, कूजना, कूकना
- **निकूज्**—भ्वा° पर°—नि-कूज्———कूजना, कुकू की अस्पष्ट ध्वनि करना
- **परिकूज्**—भ्वा° पर°—परि-कूज्———कूजना, कुकू की अस्पष्ट ध्वनि करना
- **विकूज्**—भ्वा° पर°—वि-कूज्———कूजना, कुकू की अस्पष्ट ध्वनि करना
- **कूजः**—पुं°———कूज् - अच्—कूजना, कुकू की ध्वनि करना
- **कूजः**—पुं°———कूज् - अच्—पहियों की घरघराहट
- **कूजनम्**—नपुं°———कूज् - ल्युट्—कूजना, कुकू की ध्वनि करना
- **कूजनम्**—नपुं°———कूज् - ल्युट्—पहियों की घरघराहट
- **कूजितम्**—नपुं°———कूज् - क्त—कूजना, कुकू की ध्वनि करना
- **कूजितम्**—नपुं°———कूज् - क्त—पहियों की घरघराहट
- **कूट**—वि°———कूट - अच्—मिथ्या
- **कूट**—वि°———कूट - अच्—अचल, स्थिर
- **कूटः**—पुं°———कूट - अच्—जालसाजी, भ्रम, धोखा
- **कूटः**—पुं°———कूट - अच्—दाँव, जालसाजी से भरी हुई योजना
- **कूटः**—पुं°———कूट - अच्—जटिल प्रश्न, पेचीदा या उलझनदार स्थल
- **कूटः**—पुं°———कूट - अच्—मिथ्यात्व, असत्यता

- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—पहाड़ का शिखर या चोटी
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—उभार या उत्तुंगता
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—अपने उभारों समेत माथे की हड्डी, सिर का शिखा
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—सींग
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—सिरा, किनारा
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—प्रधान, मुख्य
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—राशि, ढेर, समूह
- **अभ्रकूटम्**—नपुं°—अभ्र-कूटम्—-—बादलों का समूह
- **अन्नकूटम्**—नपुं°—अन्न-कूटम्—-—अनाज का ढेर
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—हथौड़ा, घन
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—हल की फाली, कुशी
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—हरिणों को फसाने का जाल
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—गुप्ती
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—जलकलश
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—जालसाजी, भ्रम, धोखा
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—दाँव, जालसाजी से भरी हुई योजना
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—जटिल प्रश्न, पेचीदा या उलझनदार स्थल
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—मिथ्यात्व, असत्यता
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—पहाड़ का शिखर या चोटी
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—उभार या उत्तुंगता
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—अपने उभारों समेत माथे की हड्डी, सिर का शिखा
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—सींग
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—सिरा, किनारा
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—प्रधान, मुख्य
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—राशि, ढेर, समूह
- **अभ्रकूटम्**—नपुं°—अभ्र-कूटम्—-—बादलों का समूह
- **अन्नकूटम्**—नपुं°—अन्न-कूटम्—-—अनाज का ढेर

- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—हथौड़ा, घन
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—हल की फाली, कुशी
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—हरिणों को फसाने का जाल
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—गुप्ती
- **कूटम्**—नपुं°—-—कूट - अच्—जलकलश
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—घर, आवास
- **कूटः**—पुं°—-—कूट - अच्—अगस्त्य की उपाधि
- **कूटाक्षः**—पुं°—कूट-अक्षः—-—झूठा या कपट से भरा पासा
- **कूटागारम्**—नपुं°—कूट-अगारम्—-—छत पर बनी कोठरी
- **कूटार्थः**—पुं°—कूट-अर्थः—-—अर्थों की सन्दिग्धता
- **कूटार्थः**—पुं°—कूट-अर्थः—-—कहानी, उपन्यास
- **कूटोपायः**—पुं°—कूट-उपायः—-—जालसाजी से भरी योजना, कूटचाल, कूटनीति
- **कूटकारः**—पुं°—कूट-कारः—-—धोखेबाज, झूठा गवाह
- **कूटकृत्**—वि°—कूट-कृत्—-—ठगनेवाला, धोखा देने वाला
- **कूटकृत्**—वि°—कूट-कृत्—-—जाली दस्तावेज बनाने वाला
- **कूटकृत्**—वि°—कूट-कृत्—-—घूस देने वाला
- **कूटकृत्**—पुं°—कूट-कृत्—-—कायस्थ
- **कूटकृत्**—पुं°—कूट-कृत्—-—शिव का विशेषण
- **कूटकार्षापणः**—पुं°—कूट-कार्षापणः—-—झूठा कार्षापण
- **कूटखङ्गः**—पुं°—कूट-खङ्गः—-—गुप्ती
- **कूटछद्मन्**—पुं°—कूट-छद्मन्—-—ठग
- **कूटतुला**—स्त्री°—कूट-तुला—-—पासंग वाली तराजू
- **कूटधर्म**—वि°—कूट-धर्म—-—जहाँ झूठ कर्तव्य कर्म समझा जाय
- **कूटपाकलः**—पुं°—कूट-पाकलः—-—पित्तदोषयुक्त ज्वर जिससे हाथी ग्रस्त होता है, हस्तिवातज्वर
- **कूटपालकः**—पुं°—कूट-पालकः—-—कुम्हार, कुम्हार का आवा
- **कूटपाशः**—पुं°—कूट-पाशः—-—जाल, फन्दा
- **कूटवन्धः**—पुं°—कूट-वन्धः—-—जाल, फन्दा

- **कूटमानम्**—नपुं°—कूट-मानम्—-—झूठी माप या तोल
- **कूटमोहनः**—पुं°—कूट-मोहनः—-—स्कन्द का विशेषण
- **कूटयन्त्रम्**—नपुं°—कूट-यन्त्रम्—-—हरिण एवं पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा
- **कूटयुद्धम्**—नपुं°—कूट-युद्धम्—-—छल और धोखे की लड़ाई, अधर्मयुद्ध
- **कूटशाल्मलिः**—पुं°—कूट-शाल्मलिः—-—सेमल वृक्ष की एक जाति
- **कूटशाल्मलिः**—पुं°—कूट-शाल्मलिः—-—तेज काँटों से युक्त वृक्ष
- **कूटशासनम्**—नपुं°—कूट-शासनम्—-—जाली आज्ञापत्र या फरमान
- **कूटसाक्षिन्**—पुं°—कूट-साक्षिन्—-—झूठा गवाह
- **कूटस्थ**—वि°—कूट-स्थ—-—शिखर पर खड़ा हुआ, सर्वोच्च पद पर अधिष्ठित
- **कूटस्थः**—पुं°—कूट-स्थः—-—परमात्मा
- **कूटस्वर्णम्**—नपुं°—कूट-स्वर्णम्—-—खोटा सोना
- **कूटकम्**—नपुं°—-—कुट - कन्—जालसाजी, धोखादेही, चलाकी
- **कूटकम्**—नपुं°—-—कुट - कन्—उत्सेध, उत्तुंगता
- **कूटकम्**—नपुं°—-—कुट - कन्—कुशी, हल की फाली
- **कूटकाख्यानम्**—नपुं°—कूटकम्-आख्यानम्—-—गढ़ी हुई कहानी
- **कूटशः**—अव्य°—-—कूट - शस्—ढेरों या समूहों में
- **कूड्यम्**—नपुं°—-—-—दीवार
- **कूड्यम्**—नपुं°—-—-—पलस्तर करना, लीपना, पोतना
- **कूड्यम्**—नपुं°—-—-—उत्सुकता, जिज्ञासा
- **कूण्**—चुरा° उभ° <कूणयति>, <कूणयते>, <कूणित—-—-—बोलना, बातचीत करना
- **कूण्**—चुरा° उभ° <कूणयति>, <कूणयते>, <कूणित—-—-—सिकोड़ना, बंद करना
- **कूणिका**—स्त्री°—-—कूण् - ण्वूल् - टाप्, इत्वम्—किसी पशु का सींग
- **कूणिका**—स्त्री°—-—-—वीणा की खूँटी
- **कूणित**—वि°—-—कूण् - क्त—बन्द, मुँदा हुआ
- **कूद्दालः**—पुं°—-—कु - दल - अण्, पृषो°—पहाड़ी आबनूस
- **कूपः**—पुं°—-—कुवन्ति मण्डूका अस्मिन् - कु - एक् दीर्घश्च—कुआँ
- **कूपः**—पुं°—-—कुवन्ति मण्डूका अस्मिन् - कु - एक् दीर्घश्च—छिद्र, रन्ध्र, गढ़ा, गर्त

- **कूपः**—पुं०—-—कुवन्ति मण्डूका अस्मिन् - कु - एक् दीर्घश्च—चमड़े की बनी तेल रखने की कुप्पी
- **कूपः**—पुं०—-—कुवन्ति मण्डूका अस्मिन् - कु - एक् दीर्घश्च—मस्तूल
- **कूपाङ्कः**—पुं०—कूप-अङ्कः—-—रोमाञ्च
- **कूपाङ्गः**—पुं०—कूप-अङ्गः—-—रोमाञ्च
- **कूपकच्छपः**—पुं०—कूप-कच्छपः—-—कुएँ का कछुवा या मेढक, अनुभवशून्य मनुष्य
- **कूपमण्डूकः**—पुं०—कूप-मण्डूकः—-—कुएँ का कछुवा या मेढक, अनुभवशून्य मनुष्य
- **कूपयन्त्रम्**—नपुं०—कूप-यन्त्रम्—-—रहट, कुएँ से पानी निकालने का यन्त्र
- **कूपयन्त्रघटिका**—स्त्री०—कूप-यन्त्रघटिका—-—रहट में पानी निकालने के लिए लगी डोलचियाँ
- **कूपयन्त्रघटी**—स्त्री०—कूप-यन्त्रघटी—-—रहट में पानी निकालने के लिए लगी डोलचियाँ
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—कुआँ
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—छिद्र, रन्ध्र, गर्त
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—कूल्हों के नीचे का गड्ढा
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—खूँटा जिसके सहारे किस्ती का लंगर बांध दिया जाता हैं
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—मस्तूल
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—चिता
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—चिता के नीचे का छिद्र
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—चमड़े की बनी तेल-कुप्पी
- **कूपकः**—पुं०—-—कूप - कन—नदी के बीच की चट्टान या वृक्ष
- **कूपारः**—पुं०—-—कूप - कन—समुद्र, सागर
- **कूवारः**—पुं०—-—कुत्सितः पारः तरणम् अस्मिन् - ब० स०—समुद्र, सागर
- **कूपी**—स्त्री०—-—कुत्सितः पारः तरणम् अस्मिन् - ब० स०—छोटा कुआँ, कुइया
- **कूपी**—स्त्री०—-—कूप - ङीष्—पलिघ, बोतल
- **कूपी**—स्त्री०—-—कूप - ङीष्—नाभि
- **कूबर**—वि०—-—कु - ब रच्—सुन्दर, रुचिकर
- **कूबर**—वि०—-—कु - ब रच्—कुबड़ा
- **कूवर**—वि०—-—कु - व रच्—सुन्दर, रुचिकर
- **कूवर**—वि०—-—कु - व रच्—कुबड़ा

- **कूबरः**—पुं॰—-—कु - ब रच्—गाड़ी की वल्ली या स्थूण-भुजा जिसमें जूआ बाँधा जाता है
- **कूबरम्**—नपुं॰—-—कु - ब रच्—गाड़ी की वल्ली या स्थूण-भुजा जिसमें जूआ बाँधा जाता है
- **कूबरी**—स्त्री॰—-—कु - ब रच्+ङीप्—कम्बल या किसी दूसरे कपड़े के परदे से ढकी हुई गाड़ी
- **कूबरी**—स्त्री॰—-—कु - ब रच्+ङीप्—गाड़ी की वल्ली जिससे जूआ बाँधा जाय
- **कूरः**—पुं॰—-—वे - क्विप् = ऊः कौ भूमौ उवं वयनं लाति - ला - कः, लरयोरभेदः—भोजन, भात
- **कूरम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—भोजन, भात
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—गुच्छा, गठरी
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—मुट्ठी भर कुश घास
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—मोरपंख
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—दाढ़ी
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—चुटकी
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—नाक का ऊपरी भाग, दोनों भौवों के बीच का भाग
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—कूँची, ब्रुश
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—धोखा, जालसाजी
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—शेखी बघारना, डींग मारना
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—दम्भ
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—गुच्छा, गठरी
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—मुट्ठी भर कुश घास
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—मोरपंख
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—दाढ़ी
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—चुटकी
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—नाक का ऊपरी भाग, दोनों भौवों के बीच का भाग
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—कूँची, ब्रुश
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—धोखा, जालसाजी
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—शेखी बघारना, डींग मारना
- **कूर्चम्**—नपुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—दम्भ
- **कूर्चः**—पुं॰—-—कुर् = चट् नि॰ दीर्घः—सिर

- **कूर्चः**—पुं°—-—कुर् = चट् नि° दीर्घः—भण्डार
- **कूर्चशीर्षः**—पुं°—कूर्च-शीर्षः—-—नारियल का पेड़
- **कूर्चशेखरः**—पुं°—कूर्च-शेखरः—-—नारियल का पेड़
- **कूर्चिका**—स्त्री°—-—कूर्चक - टाप् - इत्वम्—चित्रकारी करने की कूँची, ब्रुश या पेंसिल
- **कूर्चिका**—स्त्री°—-—कूर्चक - टाप् - इत्वम्—चाबी
- **कूर्चिका**—स्त्री°—-—कूर्चक - टाप् - इत्वम्—कली, फूल
- **कूर्चिका**—स्त्री°—-—कूर्चक - टाप् - इत्वम्—जमाया हुआ दूध
- **कूर्चिका**—स्त्री°—-—कूर्चक - टाप् - इत्वम्—सूई
- **कूर्द्**—भ्वा° उभ° <कूर्दति>, <कूर्दते>, <कूर्दित>—-—-—छलाँग लगाना, कूदना
- **कूर्द्**—भ्वा° उभ°—-—-—खेलना, बालकेलि करना
- **उत्कूर्द्**—भ्वा° उभ°—उद्-कूर्द्—-—कूदना, उछलना
- **कूर्दनम्**—नपुं°—-—कूर्द् - ल्युट्—उछलना
- **कूर्दनम्**—नपुं°—-—कूर्द् - ल्युट्—खेलना, क्रीड़ा करना
- **कूर्दनी**—स्त्री°—-—कूर्द् - ल्युट्+ङीप्—चैत्र की पूर्णिमा को कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला पर्व
- **कूर्दनी**—स्त्री°—-—कूर्द् - ल्युट्+ङीप्—चैत्रमास की पूर्णिमा
- **कूर्पः**—पुं°—-—कुर् - पा - क, दीर्घः—दोनों भौवों के बीच का भाग
- **कूर्परः**—पुं°—-—कुर् - क्विप्, कुर् - पृ - अच् दीर्घः नि°—कोहनी
- **कूर्परः**—पुं°—-—कुर् - क्विप्, कुर् - पृ - अच् दीर्घः नि°—घुटना
- **कूर्मः**—पुं°—-—कौ जले ऊर्मिः वेगोऽस्य पृषो° तारा°—कछुवा
- **कूर्मः**—पुं°—-—कौ जले ऊर्मिः वेगोऽस्य पृषो° तारा°—विष्णु का दूसरा अवतार
- **कूर्मावतारः**—पुं°—कूर्म-अवतारः—-—विष्णु का कूर्मावतार
- **कूर्मपृष्ठम्**—नपुं°—कूर्म-पृष्ठम्—-—कछुवे की कमर या पीठ
- **कूर्मपृष्ठम्**—नपुं°—कूर्म-पृष्ठम्—-—तश्तरी का ढकना
- **कूर्मराजः**—पुं°—कूर्म-राजः—-—द्वितीय अवतार के साथ कछुवे के रूप में विष्णु
- **कूलम्**—नपुं°—-—कूल् - अच्—किनारा, तट
- **कूलम्**—नपुं°—-—कूल् - अच्—ढलान, उतार
- **कूलम्**—नपुं°—-—कूल् - अच्—छोर, कोर, किनारी, सन्निकटता

- **कूलम्**—नपुं°—–—कूल् - अच्—तालाब
- **कूलम्**—नपुं°—–—कूल् - अच्—सेना का पिछला भाग
- **कूलम्**—नपुं°—–—कूल् - अच्—ढेर, टीला
- **कूलचर**—वि°—कूलम्-चर—–—नदी के किनारे चरने वाला या विचरने वाला
- **कूलभूः**—स्त्री°—कूलम्-भूः—–—तटस्थित भूखण्ड
- **कूलेंडकः**—पुं°—कूलम्-इंडकः—–—भँवर
- **कूलहण्डकः**—पुं°—कूलम्-हण्डकः—–—भँवर
- **कूलङ्कष**—वि°—–—कूल् - कष् - खच्, मुम्—तट को काटनेवाला, या अन्दर ही अन्दर जड़ खोखली करने वाला
- **कूलङ्कषः**—पुं°—–—कूल् - कष् - खच्, मुम्—नदी की धारा या प्रवाह
- **कूलङ्कषा**—स्त्री°—–—कूल् - कष् - खच्, मुम्+टाप्—नदी
- **कूलन्धय**—वि°—–—–—चूमता हुआ अर्थात् नदी के तट को सीमा बनाने वाला
- **कूलन्धय**—वि°—–—कूल - धे - खश्, मुम्—किनारों को तोड़ने वाला
- **कूलमुद्रुह**—वि°—–—कूल - उद् - रुज् - खश्, मुम्—किनारे को फाड़ डालने वाला तथा बहा कर ले जाने वाला
- **कूष्माण्डः**—पुं°—–—कूल - उद् - वह् - खश्, मुम्—पेठा, कुम्हड़ा, तूमड़ी
- **कूहा**—स्त्री°—–—कु ईषत् ऊष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य—कुहरा, धुंध
- **कृ**—स्वादि° उभ° <कृणोति>, <कृणुते>—–—कु ईषत् उह्यतेऽत्र, कु - उह् - क—प्रहार करना, घायल करना, मार डालना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—करना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—बनाना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—निर्माण करना, गड़ना, तैयार करना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—बनाना, रचना करना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—पैदा करना, निमित्तभूत होना, उत्पन्न करना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—बनाना, क्रमबद्ध करना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—लिखना, रचना करना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—सम्पन्न करना, व्यस्त होना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—कहना, वर्णन करना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—पालन करना, कार्यान्वित करना, आज्ञा मानना
- **कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>—–—–—प्रकाशित करना, पूरा करना, कार्य में परिणत करना

- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———फेंकना, निकालना, उत्सर्ग करना, छोड़ना
- **मूत्रं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———मूत्रोत्सर्ग करना, पेशाब करना
- **पुरीषं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———टट्टी फिरना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———धारण करना, पहनना, ग्रहण करना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———मुँह से निकलना, उच्चारण करना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———रखना, पहनना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———सौंपना, नियत करना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———पकाना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———सोचना, आदर करना, ख्याल करना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———ग्रहण करना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———ध्वनि करना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———गुजारना, बिताना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———की ओर मुड़ना, ध्यान मोड़ना, दृढ़ निश्चय करना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———दूसरे के लिए कोई काम न करना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———उपयोग करना, काम में लगाना, उपयोग में लाना
- **कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———विभक्त करना, टुकड़े-टुकड़े करना
- **द्विधा कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———दो टुकड़े करना
- **०सात् कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———अधीन बनाना, पूर्ण रूप से किसी विशेष अवस्था को प्राप्त करना
- **आत्मसात्कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———अधीन करना, अपने में लीन करना
- **भस्मसात्कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———राख बना देना
- **कृष्णीकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———उस वस्तु को जो पहले से काली नहीं है काली करना
- **श्वेतीकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———सफेद करना
- **घनीकृत** —तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———ठोस बना देना
- **विरलीकृ** —तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———दूर-दूर कहीं करना
- **क्रोडीकृ** —तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———छाती से लगाना, आलिङ्गन करना
- **भस्मीकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———राख कर देना
- **प्रवणीकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———रुचि पैदा करना, झुकना

- **तृणीकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————तिनके की भाँति तुच्छ एवं हीन समझना
- **मंदीकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————शिथिल करना, चाल धीमी करना
- **शूलाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————नोकदार लोहे की सलाखों के सिरे पर रखकर भूनना
- **सुखाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————प्रसन्न करना
- **समयाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————समय बिताना
- **समयाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————क्षति पहुँचाना
- **समयाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————निन्दा करना, कलंकित करना
- **समयाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————काम देना और
- **समयाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————बलात्कार करना, हिंसात्मक कार्य करना
- **समयाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————तैयारी करना, दशा बदलना, मोड़ना
- **समयाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————सस्वर पाठ करना
- **समयाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————काम में लगाना, प्रयोग में लाना
- **पदं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————कदम रखना
- **मनसाकृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————सोचना, मध्यस्थता करना
- **मनसि कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————सोचना, दृढ़ निश्चय करना, संकल्प करना
- **मैत्रीं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————मित्रता करना
- **अस्त्राणि कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————शस्त्रास्त्रों के प्रयोग का अभ्यास करना
- **दंड कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————दण्ड देना
- **हृदये कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————ध्यान देना
- **कालं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————मरना
- **मतिं बुद्धिं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————सोचना, इरादा करना, अभिप्राय होना
- **उदकं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————पितरों को जल का तर्पण करना
- **चिरं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————देर करना
- **दर्दुरं कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————वीणा बजाना
- **नखानि कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————नाखून साफ करना
- **कन्यां कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————सतीत्वभ्रष्ट करना, कौमार्य भंग करना
- **विना कृ**—तना० उभ० <करोति>, <कुरुते>, <कृत>————अलग करना, छोड़ा जाना

- **मध्य कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———-——बीच में रखना, संकेत करना
- **वशे कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———-——जीतना, वश में करना, दमन करना
- **चमत्कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>———-——आश्चर्य पैदा करना, प्रदर्शन करना
- **सत्कृ**—तना° उभ° <करोति>, <कुरुते>, <कृत>——-——सम्मान करना, सत्कार करना
- **तिर्यक् कृ**——-——-——एक ओर रख देना
- **कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>——-——करवाना, सम्पन्न करवाना, बनवाना, कार्यान्वित करवाना
- **कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>———-——करने की इच्छा करना
- **अङ्गीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अङ्गी-कृ———स्वीकार करना, अपनाना
- **अङ्गीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अङ्गी-कृ———मान लेना, स्वीकृति देना, अपनाना
- **अङ्गीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अङ्गी-कृ———करने की प्रतिज्ञा करना, जिम्मेवारी लेना
- **अङ्गीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अङ्गी-कृ———दमन करना, अपना बनाना, अनुग्रह करना
- **अतिकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अति-कृ——-—बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना
- **अधिकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अधि-कृ———अधिकारी होना, हकदार बनाना, अधिकृत बनना, किसी कर्तव्य के लिए पात्रीकरण
- **अधिकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अधि-कृ———लक्ष्य बनाना, उल्लेख करना
- **अधिकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अधि-कृ——-—धारण करना
- **अधिकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अधि-कृ——-—अभिभूत करना, दबा लेना, श्रेष्ठ बनाना
- **अधिकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अधि-कृ——-—रोकना, रुकना, हाथ खींचना
- **अनुकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अनु-कृ——-—सूरत शक्ल में मिलना, अनुगमन करना, विशेषतः नकल करना
- **अपकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अप-कृ——-—खींचकर दूर करना, हटाना, दूर खींचकर अनादर करना
- **अपकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अप-कृ——-—प्रहार करना, क्षति पहुँचाना, बुरा करना, हानि पहुँचाना, हानि या क्षति पहुँचाना
- **अपाकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अपा-कृ——-—दूर करना, त्याग देना, हटाना, मिटाना
- **अपाकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अपा-कृ——-—फेंक देना, अस्वीकार करना, एक ओर रख देना, छोड़ देना
- **अभ्यन्तरीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अभ्यन्तरी-कृ——-—दीक्षित करना
- **अभ्यन्तरीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अभ्यन्तरी-कृ——-—मित्र बनाना
- **अलङ्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—अलम्-कृ———विभूषित करना, सजाना, शोभा बढ़ाना
- **आकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—आ-कृ——-—पुकारना, बुलाना, निमंत्रित करना

- **आकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—आ-कृ—-—निकट लाना
- **आविस्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—आविस्-कृ—-—प्रकट करना, दर्शनीय बनना, जाहिर करना, प्रदर्शन करना
- **उपकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उप-कृ—-—मित्र बनाना, सेवा करना, सहायता करना, अनुग्रह करना, उपकृत करना
- **उपकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उप-कृ—-—हाजरी में खड़े रहना, सेवा करना
- **उपकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उप-कृ—-—विभूषित करना, सजाना, शोभा बढ़ाना
- **उपकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उप-कृ—-—प्रयत्न करना
- **उपकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उप-कृ—-—तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, पूरा करना, निर्मल करना
- **उपाकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उपा-कृ—-—सौंपना, देना
- **उपाकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उपा-कृ—-—प्रारम्भिक संस्कार सम्पन्न करना
- **उपाकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उपा-कृ—-—उठा लाना, लाना
- **उपाकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उपा-कृ—-—आरम्भ करना
- **उरीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उरी-कृ—-—स्वीकार करना
- **उररीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उररी-कृ—-—स्वीकार करना
- **उरुरीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—उरुरी-कृ—-—स्वीकार करना
- **ऊरीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—ऊरी-कृ—-—स्वीकार करना
- **ऊररीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—ऊररी-कृ—-—स्वीकार करना
- **तिरस्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—तिरस्-कृ—-—अपशब्द कहना, बुरा भला कहना, अनादर करना, घृणा करना
- **तिरस्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—तिरस्-कृ—-—पीछे छोड़ना, आगे बढ़ना, जीतना
- **त्वम्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—त्वम्-कृ—-—तू, कोई
- **दक्षिणीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—दक्षिणी-कृ—-—किसी वस्तु के चारों ओर घूमना
- **प्रदक्षिणीकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—प्रदक्षिणी-कृ—-—किसी वस्तु के चारों ओर घूमना
- **दुस्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—दुस्-कृ—-—बुरे ढंग से करना
- **धिक्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—धिक्-कृ—-—झिड़कना, बुरा भला कहना, अनादर करना
- **नमस्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—नमस्-कृ—-—नमस्कार करना, पूजा करना
- **निकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—नि-कृ—-—क्षति पहुँचाना, बुरा करना
- **निस्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—निस्-कृ—-—हटाना, हाँक कर दूर कर देना
- **निस्कृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—निस्-कृ—-—तोड़ देना, निकम्मा कर देना

- **निराकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—निरा-कृ—-—निकाल देना, परे कर देना, निकाल बाहर करना
- **निराकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—निरा-कृ—-—निराकरण करना
- **निराकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—निरा-कृ—-—छोड़ना, त्यागना
- **निराकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—निरा-कृ—-—पूर्ण रूप से नष्ट कर देना, ध्वंस करना
- **निराकृ**—तना° उभ°,इच्छा° <चिकीर्षति>, <चिकीर्षते>—निरा-कृ—-—बुरा भला कहना, नीच समझना, तुच्छ समझना
- **न्यक्कृ**—तना°, पर°—न्यक्-कृ—-—अपमान करना, अनादर करना
- **पराकृ**—तना°, पर°—परा-कृ—-—अस्वीकार करना, अवहेलना करना, निरादर करना, ख्याल नहीं करना
- **परिकृ**—तना°, पर°—परि-कृ—-—घेरना
- **परिकृ**—तना°, पर°—परि-कृ—-—विभूषित करना, सजाना, निर्मल करना, चमकाना, शुद्ध करना
- **पुरस्कृ**—तना°, पर°—पुरस्-कृ—-—सम्मुख रखना
- **प्रकृ**—तना°, पर°—प्र-कृ—-—करना, सम्पन्न करना, आरम्भ करना
- **प्रकृ**—तना°, पर°—प्र-कृ—-—बलात्कार करना, अत्याचार करना, अपमान करना
- **प्रकृ**—तना°, पर°—प्र-कृ—-—सम्मान करना, पूजा करना
- **प्रतिकृ**—तना°, पर°—प्रति-कृ—-—बदला देना, वापिस देना, लौटाना
- **प्रतिकृ**—तना°, पर°—प्रति-कृ—-—उपचार करना
- **प्रतिकृ**—तना°, पर°—प्रति-कृ—-—वापिस देना, ज्यों का त्यों कर देना, पुनः स्थापित करना
- **प्रतिकृ**—तना°, पर°—प्रति-कृ—-—प्रतिशोध करना
- **प्रमाणीकृ**—तना°, पर°—प्रमाणी-कृ—-—भरोसा करना, विश्वास करना
- **प्रमाणीकृ**—तना°, पर°—प्रमाणी-कृ—-—प्रमाण पुरुष मानना, आज्ञा मानना
- **प्रमाणीकृ**—तना°, पर°—प्रमाणी-कृ—-—आँख गड़ाना, वितरण करना, बर्ताव करना या व्यवहार करना
- **प्रादुष्कृ**—तना°, पर°—प्रादुस्-कृ—-—प्रकट करना, प्रदर्शन करना, दिखलाना, जाहिर करना
- **प्रत्युपकृ**—तना°, पर°—प्रत्युप-कृ—-—प्रतिफल देना, प्रत्यर्पण करना
- **विकृ**—तना°, पर°—वि-कृ—-—बदलना, परिवर्तन करना, प्रभावित करना
- **विकृ**—तना°, पर°—वि-कृ—-—आकृति बिगाड़ना, विरूप करना
- **विकृ**—तना°, पर°—वि-कृ—-—उत्पन्न करना, पैदा करना, सम्पन्न करना
- **विकृ**—तना°, पर°—वि-कृ—-—विघ्न डालना, हानि पहुँचाना, क्षति पहुँचाना
- **विकृ**—तना°, पर°—वि-कृ—-—उच्चारण करना

- **विकृ**—तना°, पर°—वि-कृ—-—विश्वासघातक होना
- **विनिकृ**—तना°, पर°—विनि-कृ—-—प्रहार करना, क्षति पहुँचाना
- **विप्रकृ**—तना°, पर°—विप्र-कृ—-—सताना, कष्ट देना, तंग करना, हानि पहुँचाना
- **विप्रकृ**—तना°, पर°—विप्र-कृ—-—बुरा करना, दुर्व्यवहार करना
- **विप्रकृ**—तना°, पर°—विप्र-कृ—-—प्रभावित करना, परिवर्तन लाना
- **व्याकृ**—तना°, पर°—व्या-कृ—-—प्रकट करना, साफ करना
- **व्याकृ**—तना°, पर°—व्या-कृ—-—प्रतिपादन करना, व्याख्या करना
- **व्याकृ**—तना°, पर°—व्या-कृ—-—कहना, वर्णन करना
- **सम्कृ**—तना°, पर°—सम्-कृ—-—करना
- **सम्कृ**—तना°, पर°—सम्-कृ—-—निर्माण करना, तैयार करना
- **संस्कृ**—तना°, पर°—सम्-कृ—-—करना, सम्पन्न करना
- **संस्कृ**—तना°, पर°—सम्-कृ—-—अलंकृत करना, शोभा बढ़ाना
- **संस्कृ**—तना°, पर°—सम्-कृ—-—निर्मल करना, चमकना
- **संस्कृ**—तना°, पर°—सम्-कृ—-—वेदमन्त्रों के उच्चारण से अभिमन्त्रित करना
- **संस्कृ**—तना°, पर°—सम्-कृ—-—वेदविहित संस्कारों से पवित्र करना, शुद्ध करने वाले शास्त्रोक्त विधियों का अनुष्ठान करना
- **साचीकृ**—तना°, पर°—साची-कृ—-—एक ओर मुड़ना, परोक्ष रूप से मुड़ना
- **कृकः**—पुं°—-—कृ - कक्—गला
- **कृकणः**—पुं°—-—कृ - कण् - अच्—एक प्रकार का तीतर
- **कृकरः**—पुं°—-—कृ - कृ - ट—एक प्रकार का तीतर
- **कृकलासः <o> कृकुलासः**—पुं°—-—कृक - लस् - अण्—छिपकली, गिरगिट
- **कृकवाकुः**—पुं°—-—कृक - वच् - ञुण्, क् आदेशः—मुर्गा, मोर, छिपकली
- **कृकवाकुध्वजः**—पुं°—कृकवाकु-ध्वजः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **कृकाटिका**—स्त्री°—-—कृक - अट् - अण् = कृकाट - कन् - टाप्, इत्वम्—ग्रीवा का सीधा उठा हुआ भाग
- **कृकाटिका**—स्त्री°—-—कृक - अट् - अण् = कृकाट - कन् - टाप्, इत्वम्—गर्दन का पिछला का भाग
- **कृच्छ्र**—वि°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—कष्ट देने वाला, पीड़ाकर
- **कृच्छ्र**—वि°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—बुरा, विपदग्रस्त, अनिष्टकर
- **कृच्छ्र**—वि°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—दुष्ट, पापी

- **कृच्छ्र**—वि°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—संकटग्रस्त, पीडित
- **कृच्छ्रः**—पुं°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—कठिनाई, कष्ट, कठोरता, विपद्, संकट, भय
- **कृच्छ्रः**—पुं°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—शारीरिक तप, तपस्या, प्रायश्चित्त
- **कृच्छ्रम्**—नपुं°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—कठिनाई, कष्ट, कठोरता, विपद्, संकट, भय
- **कृच्छ्रम्**—नपुं°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—शारीरिक तप, तपस्या, प्रायश्चित्त
- **कृच्छ्रम्**—नपुं°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—बड़ी कठिनाई के साथ, दुःखपूर्वक, बड़े कष्ट के साथ
- **कृच्छ्रेण**—नपुं°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—बड़ी कठिनाई के साथ, दुःखपूर्वक, बड़े कष्ट के साथ
- **कृच्छ्रात्**—नपुं°—-—कृती - रक्, छ आदेशः—बड़ी कठिनाई के साथ, दुःखपूर्वक, बड़े कष्ट के साथ
- **कृच्छ्रप्राण**—वि°—कृच्छ्र-प्राण—-—जिसका जीवन खतरे में है
- **कृच्छ्रप्राण**—वि°—कृच्छ्र-प्राण—-—कष्टपूर्वक साँस लेने वाला
- **कृच्छ्रप्राण**—वि°—कृच्छ्र-प्राण—-—कठिनाई से जीवन यापन करने वाला
- **कृच्छ्रसाध्य**—वि°—कृच्छ्र-साध्य—-—कठिनाई से ठीक हो सके
- **कृच्छ्रसाध्य**—वि°—कृच्छ्र-साध्य—-—कष्टसाध्य
- **कृत्**—तुदा° पर° <कृन्तति>, <कृत्त>—-—-—काटना, काटकर फेंक देना, विभक्त करना, फाड़ना, धज्जियाँ उड़ाना, टुकड़े-टुकड़े करना, नष्ट करना
- **अवकृत्**—तुदा° पर°—अव-कृत्—-—काट फेंकना, विभक्त करना, फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करना
- **उत्कृत्**—तुदा° पर°—उद्-कृत्—-—काटना या काट फेंकना, फाड़ना
- **उत्कृत्**—तुदा° पर°—उद्-कृत्—-—खण्ड खण्ड करना, टुकड़े काटना
- **विकृत्**—तुदा° पर°—वि-कृत्—-—काटना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना
- **विकृत्**—रुधा° पर° <कृणत्ति>, <कृत्त>—वि-कृत्—-—काटना, घेरना
- **°कृत्**—वि°—°कृत्—कृ - क्विप्—निष्पादक, कर्ता, निर्माता, अनुष्ठाता, उत्पादक, रचयिता आदि
- **कृत्**—पुं°—-—कृ - क्विप्—प्रत्ययों का समूह जिनको धातु के साथ जोड़ने से संज्ञा, विशेषण आदि बनते है
- **कृत्**—पुं°—-—कृ - क्विप्—इस प्रकार बना हुआ शब्द
- **कृत**—वि°—-—कृ - क्त—किया हुआ, अनुष्ठित, निर्मित, क्रियान्वित, निष्पन्न, उत्पादित आदि
- **कृतम्**—नपुं°—-—कृ - क्त—कार्य, कृत्य, कर्म
- **कृतम्**—नपुं°—-—कृ - क्त—सेवा, लाभ
- **कृतम्**—नपुं°—-—कृ - क्त—फल, परिणाम
- **कृतम्**—नपुं°—-—कृ - क्त—लक्ष्य, उद्देश्य

- **कृतम्**—नपुं०—-—कृ - क्त—पासे का वह पहलू जिस पर चार बिन्दु अंकित हैं
- **कृतम्**—नपुं०—-—कृ - क्त—संसार के चार युगों में पहला युग जो मनुष्यों के १७२८००० वर्षों के बराबर हैं
- **कृताकृत**—वि०—कृत-अकृत—-—किया न किया अर्थात् कुछ भाग किया गया, पूरा नहीं किया गया
- **कृताङ्क**—वि०—कृत-अङ्क—-—चिह्नित, दागी
- **कृताङ्क**—वि०—कृत-अङ्क—-—संख्यांकित
- **कृताङ्क**—वि०—कृत-अङ्क—-—पासे का वह भाग जिसपर चार बिन्दु अंकित हों
- **कृताञ्जलि**—वि०—कृत-अञ्जलि—-—विनम्रता के कारण दोनों हाथ जोड़े हुए
- **कृतानुकर**—वि०—कृत-अनुकर—-—किये हुए कार्य का अनुकरण करने वाला, अनुसेवी
- **कृतानुसारः**—पुं०—कृत-अनुसारः—-—प्रथा, परिपाटी
- **कृतान्त**—वि०—कृत-अन्त—-—समाप्त करने वाला, अवसायी
- **कृतान्तः**—पुं०—कृत-अन्तः—-—मृत्यु का देवता यम
- **कृतान्तः**—पुं०—कृत-अन्तः—-—भाग्य, प्रारब्ध
- **कृतान्तः**—पुं०—कृत-अन्तः—-—प्रदर्शित उपसंहार, रुढ़ि, प्रमाणित सिद्धान्त
- **कृतान्तः**—पुं०—कृत-अन्तः—-—पापकर्म, अशुभ कर्म
- **कृतान्तः**—पुं०—कृत-अन्तः—-—शनि ग्रह का विशेषण
- **कृतान्तः**—पुं०—कृत-अन्तः—-—शनिवार
- **कृतान्तजनकः**—पुं०—कृत-अन्त-जनकः—-—सूर्य
- **कृतान्नम्**—नपुं०—कृत-अन्नम्—-—पकाया हुआ, भोजन
- **कृतान्नम्**—नपुं०—कृत-अन्नम्—-—पचा हुआ भोजन
- **कृतान्नम्**—नपुं०—कृत-अन्नम्—-—मल
- **कृतापराध**—वि०—कृत-अपराध—-—अपराधी, दोषी, मुजरिम
- **कृताभय**—वि०—कृत-अभय—-—भय या खतरे से सुरक्षित
- **कृताभिषेक**—वि०—कृत-अभिषेक—-—राज्याभिषिक्त, यथा विधि पद पर प्रतिष्ठित किया हुआ
- **कृताभ्यास**—वि०—कृत-अभ्यास—-—अभ्यस्त
- **कृतार्थ**—वि०—कृत-अर्थ—-—जिसने अपना उद्देश्य सिद्ध कर लिया है, सफल
- **कृतार्थ**—वि०—कृत-अर्थ—-—सन्तुष्ट, प्रसन्न, परितृप्त
- **कृतार्थ**—वि०—कृत-अर्थ—-—चतुर

- **कृतार्थीकृ**—————सफल बनाना
- **कृतार्थीकृ**—————भरपाई होना
- **कृतावधान**—वि°—कृत-अवधान———होशियार, सावधान
- **कृतावधि**—वि°—कृत-अवधि———निश्चित, नियत
- **कृतावधि**—वि°—कृत-अवधि———हदबन्दी किया हुआ, सीमित
- **कृतावस्थ**—वि°—कृत-अवस्थ———बुलाया हुआ, प्रस्तुत कराया हुआ
- **कृतावस्थ**—वि°—कृत-अवस्थ———निश्चित, निर्धारित
- **कृतास्त्र**—वि°—कृत-अस्त्र———हथियारबन्द
- **कृतास्त्र**—वि°—कृत-अस्त्र———शस्त्र या अस्त्र विज्ञान में प्रकाशित
- **कृतागम**—वि°—कृत-आगम———प्रगत, प्रवीण
- **कृतागम**—पुं°—कृत-आगम———परमात्मा
- **कृतागस्**—वि°—कृत-आगस्———दोषी, अपराधी, मुजरिम, पापी
- **कृतात्मन्**—वि°—कृत-आत्मन्———संयमी, स्वस्थचित्त, स्थिरात्मा
- **कृतात्मन्**—वि°—कृत-आत्मन्———पवित्र मन वाला
- **कृतायास**—वि°—कृत-आयास———परिश्रम करने वाला, सहन करने वाला
- **कृताह्वान**—वि°—कृत-आह्वान———ललकारा हुआ
- **कृतोत्साह**—वि°—कृत-उत्साह———परिश्रमी, प्रयत्नशील, उद्यमी
- **कृतोद्वाह**—वि°—कृत-उद्वाह———विवाहित
- **कृतोद्वाह**—वि°—कृत-उद्वाह———हाथ उपर उठाकर तपस्या करने वाला
- **कृतोपकार**—वि°—कृत-उपकार———अनुगृहीत, मित्रवत् आचरित, सहायता प्राप्त
- **कृतोपकार**—वि°—कृत-उपकार———मित्रसदृश
- **कृतोपभोग**—वि°—कृत-उपभोग———बरता हुआ, उपभुक्त
- **कृतकर्मन्**—वि°—कृत-कर्मन्———जिसने अपना काम कर लिया है
- **कृतकर्मन्**—वि°—कृत-कर्मन्———दक्ष, चतुर
- **कृतकर्मन्**—पुं°—कृत-कर्मन्———परमात्मा
- **कृतकर्मन्**—पुं°—कृत-कर्मन्———सन्यासी
- **कृतकाम**—वि°—कृत-काम———जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं

- **कृतकाल**—वि॰—कृत-काल—-—समय की दृष्टि से जो स्थिर है, निश्चित
- **कृतकाल**—वि॰—कृत-काल—-—जिसने कुछ काल तक प्रतीक्षा की है
- **कृतकालः**—वि॰—कृत-कालः—-—नियत समय
- **कृतकृत्य**—वि॰—कृत-कृत्य—-—कृतार्थ
- **कृतकृत्य**—वि॰—कृत-कृत्य—-—सन्तुष्ट, परितृप्त
- **कृतकृत्य**—वि॰—कृत-कृत्य—-—जिसने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है
- **कृतक्रयः**—पुं॰—कृत-क्रयः—-—खरीदार
- **कृतक्षण**—वि॰—कृत-क्षण—-—निश्चित समय की आतुरतापूर्वक प्रतीक्षा करने वाला
- **कृतक्षण**—वि॰—कृत-क्षण—-—जिसे कोई अवसर उपलब्ध हो गया है
- **कृतघ्न**—वि॰—कृत-घ्न—-—अकृतज्ञ
- **कृतघ्न**—वि॰—कृत-घ्न—-—जो पहले किये हुए उपकारों को नहीं मानता है
- **कृतचूडः**—पुं॰—कृत-चूडः—-—जिस बालक का मुण्डनसंस्कार हो गया है
- **कृतज्ञ**—वि॰—कृत-ज्ञ—-—उपकार मानने वाला, आभारी
- **कृतज्ञ**—वि॰—कृत-ज्ञ—-—शुद्धाचारी
- **कृतज्ञः**—पुं॰—कृत-ज्ञः—-—कुत्ता
- **कृततीर्थः**—वि॰—कृत-तीर्थः—-—जिसने तीर्थों के दर्शन किये हैं
- **कृततीर्थः**—वि॰—कृत-तीर्थः—-—जो अध्यापक से अध्ययन करता हो
- **कृततीर्थः**—वि॰—कृत-तीर्थः—-—जिसे तरकीबें खूब सूझती हों
- **कृततीर्थः**—वि॰—कृत-तीर्थः—-—पथ प्रदर्शक
- **कृतदासः**—पुं॰—कृत-दासः—-—किसी निश्चित समय के लिए रक्खा हुआ वैतनिक सेवक, वैतनिक सेवक
- **कृतधीः**—पुं॰—कृत-धीः—-—दूरदर्शी, लिहाज रखने वाला
- **कृतधीः**—पुं॰—कृत-धीः—-—विद्वान, शिक्षित, बुद्धिमान
- **कृतनिर्णेजनः**—पुं॰—कृत-निर्णेजनः—-—पश्चात्तापी
- **कृतनिश्चय**—वि॰—कृत-निश्चय—-—कृतसंकल्प, दृढ़प्रतिज्ञ
- **कृतपुङ्ख**—वि॰—कृत-पुङ्ख—-—धनुर्विद्या में निपुण
- **कृतपूर्व**—वि॰—कृत-पूर्व—-—पहले किया हुआ
- **कृतप्रतिकृतम्**—नपुं॰—कृत-प्रतिकृतम्—-—आक्रमण और प्रत्याक्रमण, धावा बोलना और प्रतिरोध करना

- **कृतप्रतिज्ञ**—वि॰—कृत-प्रतिज्ञ—-—जिसने किसी से कोई करार किया हुआ हो
- **कृतप्रतिज्ञ**—वि॰—कृत-प्रतिज्ञ—-—जिसने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर लिया है
- **कृतबुद्धि**—वि॰—कृत-बुद्धि—-—विद्वान, शिक्षित, बुद्धिमान
- **कृतमुख**—वि॰—कृत-मुख—-—विद्वान, बुद्धिमान
- **कृतलक्षण**—वि॰—कृत-लक्षण—-—मुद्रांकित, चिह्नित
- **कृतलक्षण**—वि॰—कृत-लक्षण—-—दागी
- **कृतलक्षण**—वि॰—कृत-लक्षण—-—श्रेष्ठ, सुशील, परिभाषित, विवेचित
- **कृतवर्मन्**—पुं॰—कृत-वर्मन्—-—कौरवपक्ष का एक योद्धा
- **कृतविद्य**—वि॰—कृत-विद्य—-—विद्वान, शिक्षित
- **कृतवेतन**—वि॰—कृत-वेतन—-—वैतनिक, तनखादार
- **कृतवेदिन्**—वि॰—कृत-वेदिन्—-—आभारी
- **कृतवेश**—वि॰—कृत-वेश—-—सुवेशित, विभूषित
- **कृतशोभ**—वि॰—कृत-शोभ—-—शानदार
- **कृतशोभ**—वि॰—कृत-शोभ—-—सुन्दर
- **कृतशोभ**—वि॰—कृत-शोभ—-—पटु, दक्ष
- **कृतशौच**—वि॰—कृत-शौच—-—पवित्र किया हुआ
- **कृतश्रमः**—पुं॰—कृत-श्रमः—-—अध्येता, जिसने अध्ययन कर लिया है
- **कृतपरिश्रमः**—पुं॰—कृत-परिश्रमः—-—अध्येता, जिसने अध्ययन कर लिया है
- **कृतसङ्कल्प**—वि॰—कृत-सङ्कल्प—-—कृतनिश्चय, दृढ़संकल्प
- **कृतसङ्केत**—वि॰—कृत-सङ्केत—-—नियत करने वाला
- **कृतसंज्ञ**—वि॰—कृत-संज्ञ—-—पुनः चेतना प्राप्त, होश में आया हुआ
- **कृतसंज्ञ**—वि॰—कृत-संज्ञ—-—उद्बोधित
- **कृतसन्नाह**—वि॰—कृत-सन्नाह—-—कवचधारी
- **कृतसापत्निका**—स्त्री॰—कृत-सापत्निका—-—वह स्त्री जिसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया है, एक विवाहित स्त्री जिसकी सपत्नी भी विद्यमान हो
- **कृतहस्त**—वि॰—कृत-हस्त—-—दक्ष, चतुर, कुशल, पटु
- **कृतहस्त**—वि॰—कृत-हस्त—-—धनुर्विद्या में कुशल
- **कृतहस्तक**—वि॰—कृत-हस्तक—-—दक्ष, चतुर, कुशल, पटु

- **कृतहस्तक**—वि°—कृत-हस्तक—-—धनुर्विद्या में कुशल
- **कृतहस्तता**—स्त्री°—कृत-हस्तता—-—कौशल, दक्षता
- **कृतहस्तता**—स्त्री°—कृत-हस्तता—-—धनुर्विद्या या शस्त्रविद्या में कुशल
- **कृतक**—वि°—-—कृत - कन्—किया हुआ, निर्मित, सज्जित
- **कृतक**—वि°—-—कृत - कन्—कृत्रिम, बनावटी ढंग से किया हुआ
- **कृतक**—वि°—-—कृत - कन्—झूठा, व्यपदिष्ट या बहाना किया हुआ, मिथ्या, दिखावटी, कल्पित
- **कृतक**—वि°—-—कृत - कन्—दत्तक
- **कृतम्**—अव्य°—-—कृत - कम् बा°—पर्याप्त और अधिक नहीं, बस करो अथवा मत करो
- **कृतिः**—स्त्री°—-—कृ - क्तिन्—करनी, उत्पादन, निर्माण, अनुष्ठान
- **कृतिः**—स्त्री°—-—कृ - क्तिन्—कार्य, कृत्य, कर्म
- **कृतिः**—स्त्री°—-—कृ - क्तिन्—रचना, काम, संरचना
- **कृतिः**—स्त्री°—-—कृ - क्तिन्—जादू, इन्द्रजाल
- **कृतिः**—स्त्री°—-—कृ - क्तिन्—क्षति पहुँचाना, मार डालना
- **कृतिः**—स्त्री°—-—कृ - क्तिन्—बीस की संख्या
- **कृतिकरः**—पुं°—कृति-करः—-—रावण का विशेषण
- **कृतिन्**—वि°—-—कृत - इनि—कृतकार्य, कृतार्थ, संतुष्ट, परितृप्त, प्रसन्न, सफल
- **कृतिन्**—वि°—-—कृत - इनि—सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मतवाला, भाग्यवान
- **कृतिन्**—वि°—-—कृत - इनि—चतुर, सक्षम, योग्य, विशेषज्ञ, कुशल, बुद्धिमान, विद्वान
- **कृतिन्**—वि°—-—कृत - इनि—अच्छा, गुणी, पवित्र, पावन
- **कृतिन्**—वि°—-—कृत - इनि—अनुवर्ती, आज्ञाकारी, आदेशानुसार करने वाला
- **कृते** —अव्य°—-—-—के लिए, के निमित्त, के कारण
- **कृतेन**—अव्य°—-—-—के लिए, के निमित्त, के कारण
- **कृत्तिः**—स्त्री°—-—कृत् - क्तिन्—चमड़ा, खाल
- **कृत्तिः**—स्त्री°—-—कृत् - क्तिन्—मृगचर्म जिसपर विद्यार्थी बैठता है
- **कृत्तिः**—स्त्री°—-—कृत् - क्तिन्—भोजपत्र
- **कृत्तिः**—स्त्री°—-—कृत् - क्तिन्—भोजवृक्ष
- **कृत्तिः**—स्त्री°—-—कृत् - क्तिन्—कृत्तिका नक्षत्र, कृत्तिका मण्डल

- **कृत्तिवासः**—पुं°—कृत्ति-वासः—-—शिव का विशेषण
- **कृत्तिवासस्**—पुं°—कृत्ति-वासस्—-—शिव का विशेषण
- **कृत्तिका**—स्त्री°,ब° व°—-—कृत् - तिकन्, कित्, टाप्—२७ नक्षत्रों में से तीसरा कृत्तिका नक्षत्र
- **कृत्तिका**—स्त्री°,ब° व°—-—कृत् - तिकन्, कित्, टाप्—छः तारे जो, युद्ध के देवता कार्त्तिकेय की परिचारिका का कार्य करने वाली अप्सराओं के रूप में वर्णित हैं
- **कृत्तिकातनयः**—पुं°—कृत्तिका-तनयः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **कृत्तिकापुत्रः**—पुं°—कृत्तिका-पुत्रः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **कृत्तिकासुतः**—पुं°—कृत्तिका-सुतः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **कृत्तिकाभवः**—पुं°—कृत्तिका-भवः—-—चाँद
- **कृत्नु**—वि°—-—कृ - क्तनु—भली भाँति करने वाला, करने के योग्य शक्तिशाली
- **कृत्नु**—वि°—-—कृ - क्तनु—चतुर, कुशल
- **कृत्नुः**—पुं°—-—कृ - क्तनु—कारीगर, कलाकार
- **कृत्य**—वि°—-—कृ - क्यप्, तुक्—जो किया जाना चाहिए, सही, उचित, उपयुक्त
- **कृत्य**—वि°—-—कृ - क्यप्, तुक्—युक्तियुक्त, व्यवहार्य
- **कृत्य**—वि°—-—कृ - क्यप्, तुक्—जो राजभक्ति से पथभ्रष्ट किया जा सके, विश्वासघाती
- **कृत्यम्**—नपुं°—-—कृ - क्यप्, तुक्—जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य, कार्य
- **कृत्यम्**—नपुं°—-—कृ - क्यप्, तुक्—कार्य, व्यवसाय, करनी, कार्यभार
- **कृत्यम्**—नपुं°—-—कृ - क्यप्, तुक्—प्रयोजन, उद्देश्य, लक्ष्य
- **कृत्यम्**—नपुं°—-—कृ - क्यप्, तुक्—मंशा, कारण
- **कृत्यः**—पुं°—-—कृ - क्यप्, तुक्—कर्मवाच्य के कृदन्त के सम्भावनार्थक प्रत्ययों का समूह
- **कृत्या**—स्त्री°—-—कृ - क्यप्, तुक्+टाप्—कार्य, करनी
- **कृत्या**—स्त्री°—-—कृ - क्यप्, तुक्—जादू
- **कृत्या**—स्त्री°—-—कृ - क्यप्, तुक्—एक देवी
- **कृत्रिम**—वि°—-—कृत्या निर्मितम् - कृ - क्ति - मप्—बनावटी, काल्पनिक, जो स्वतः स्फूर्त या मनमाना न हो, अर्जित
- **कृत्रिम**—वि°—-—कृत्या निर्मितम् - कृ - क्ति - मप्—गोद लिया हुआ
- **कृत्रिमः**—पुं°—-—कृत्या निर्मितम् - कृ - क्ति - मप्—नकली या गोद लिया हुआ पुत्र
- **कृत्रिमपुत्रः**—पुं°—कृत्रिम-पुत्रः—-—नकली या गोद लिया हुआ पुत्र

- **कृत्रिमम्**—नपुं°———-—एक प्रकार का नमक
- **कृत्रिमम्**—नपुं°———-—एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य
- **कृत्रिमधूपः**—पुं°—कृत्रिम-धूपः—-—एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, धूप
- **कृत्रिमधूपकः**—पुं°—कृत्रिम-धूपकः—-—एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, धूप
- **कृत्रिमपुत्रः**—पुं°—कृत्रिम-पुत्रः—-—नकली या गोद लिया हुआ पुत्र
- **कृत्रिमपुत्रकः**—पुं°—कृत्रिम-पुत्रकः—-—गुड्डा, पुत्तलिका
- **कृत्रिमभूमिः**—स्त्री°—कृत्रिम-भूमिः—-—बनाया हुआ फर्श
- **कृत्रिमवनम्**—स्त्री°—कृत्रिम-वनम्—-—वाटिका, उद्यान
- **°कृत्वस्**—अव्य°———-—एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के साथ 'तह' और 'गुणा' अर्थ को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है
- **कृत्सम्**—नपुं°———-—जल
- **कृत्सम्**—नपुं°———-—समूह
- **कृत्सः**—पुं°———-—पाप
- **कृत्स्न**—वि°—-—कृत् - क्स्न—सारे, सम्पूर्ण, समस्त
- **कृन्तत्रम्**—नपुं°—-—कृत् - क्त्रन्, नुमागमः—हल
- **कृन्तम्**—नपुं°—-—कृत - ल्युट्—काटना, काटकर फेंक देना, विभक्त करना, फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करना
- **कृपः**—पुं°—-—कृप् - अच्—अश्वत्थामा का मामा
- **कृपण**—वि°—-—कृंप् - क्युन् न स्यणत्वम्—गरीब, दयनीय, अभागा, असहाय
- **कृपण**—वि°—-—कृंप् - क्युन् न स्यणत्वम्—विवेकशून्य, किसी कार्य को करने या विवेचन करने के योग्य अथवा अनिच्छुक
- **कृपण**—वि°—-—कृंप् - क्युन् न स्यणत्वम्—नीच, अधम, दुष्ट
- **कृपण**—वि°—-—कृंप् - क्युन् न स्यणत्वम्—सूम, कंजूस
- **कृपणम्**—नपुं°—-—कृंप् - क्युन् न स्यणत्वम्—दुर्दशा
- **कृपणः**—पुं°—-—कृंप् - क्युन् न स्यणत्वम्—सूम
- **कृपणधीः**—स्त्री°—कृपण-धीः—-—छोटे दिल का, नीच मन का
- **कृपणबुद्धिः**—स्त्री°—कृपण-बुद्धिः—-—छोटे दिल का, नीच मन का
- **कृपणवत्सल**—वि°—कृपण-वत्सल—-—दीनदयालु
- **कृपा**—स्त्री°—-—क्रप् - भिदा° अङ - टाप्, संप्र°—रहम, दयालुता, करुणा
- **सकृपम्**—नपुं°———-—कृपा करके

- **कृपाणः**—पुं॰—-—कृपां नुदति - नुद् - ड संज्ञायां णत्वम् - तारा॰—तलवार
- **कृपाणः**—पुं॰—-—-—चाकू
- **कृपाणिका**—स्त्री॰—-—कृपाण - कन् - टाप्, इत्वम्—बर्छी, छुरी
- **कृपाणी**—स्त्री॰—-—कृपाण - ङीष्—कैंची
- **कृपाणी**—स्त्री॰—-—कृपाण - ङीष्—बर्छी
- **कृपालु**—वि॰—-—कृपां लाति - कृपा - ला आदाने मि॰ डु—दयालु, करुणापूर्ण, सदय
- **कृपी**—स्त्री॰—-—कृप - ङीष्—कृप की बहन तथा द्रोण की पत्नी
- **कृपीपतिः**—पुं॰—कृपी-पतिः—-—द्रोण का विशेषण
- **कृपीसुतः**—पुं॰—कृपी-सुतः—-—अश्वत्थामा का विशेषण
- **कृपीटम्**—नपुं॰—-—कृप - कीटन्—तलझाड़ियाँ, जंगल की लकड़ी
- **कृपीटम्**—नपुं॰—-—कृप - कीटन्—वन, जलाने की लकड़ी
- **कृपीटम्**—नपुं॰—-—कृप - कीटन्—पानी
- **कृपीटम्**—नपुं॰—-—कृप - कीटन्—पेट
- **कृपीटपालः**—पुं॰—कृपीटम्-पालः—-—पतवार
- **कृपीटपालः**—पुं॰—कृपीटम्-पालः—-—समुद्र
- **कृपीटपालः**—पुं॰—कृपीटम्-पालः—-—वायु, हवा
- **कृपीटयोनि**—वि॰—कृपीटम्-योनि—-—अग्नि
- **कृमि**—वि॰—-—क्रम् - इन्, अत इत्वम् संप्र॰—कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त
- **कृमि**—वि॰—-—क्रम् - इन्, अत इत्वम् संप्र॰—कीड़े
- **कृमि**—वि॰—-—क्रम् - इन्, अत इत्वम् संप्र॰—गधा
- **कृमि**—वि॰—-—क्रम् - इन्, अत इत्वम् संप्र॰—मकड़ी
- **कृमि**—वि॰—-—क्रम् - इन्, अत इत्वम् संप्र॰—लाख
- **कृमिकोशः**—पुं॰—कृमि-कोशः—-—रेशम का कोया
- **कृमिकोषः**—पुं॰—कृमि-कोषः—-—रेशम का कोया
- **कृमिकोषः**—पुं॰—कृमि-कोषः—-—रेशमी कपड़ा
- **कृमिजम्**—नपुं॰—कृमि-जम्—-—अगर की लकड़ी
- **कृमिजग्धम्**—नपुं॰—कृमि-जग्धम्—-—अगर की लकड़ी

- **कृमिजा**—स्त्री°—कृमि-जा—-—लाख कीड़ों द्वारा उत्पादित लाल रंग
- **कृमिजलजः**—पुं°—कृमि-जलजः—-—घोंघा, सीपी में रहने वाला कीड़ा
- **कृमिवारिरुहः**—पुं°—कृमि-वारिरुहः—-—घोंघा, सीपी में रहने वाला कीड़ा
- **कृमिपर्वतः**—पुं°—कृमि-पर्वतः—-—बाँबी
- **कृमिशैलः**—पुं°—कृमि-शैलः—-—बाँबी
- **कृमिफलः**—पुं°—कृमि-फलः—-—गूलर का पेड़
- **कृमिशङ्खः**—पुं°—कृमि-शङ्खः—-—शंख के भीतर रहने वाली मछली
- **कृमिशुक्तिः**—स्त्री°—कृमि-शुक्तिः—-—दोहरी पीठ वाला घोंघा
- **कृमिशुक्तिः**—स्त्री°—कृमि-शुक्तिः—-—सीपी में रहने वाला कीड़ा
- **कृमिशुक्तिः**—स्त्री°—कृमि-शुक्तिः—-—घोंघा
- **कृमिण**—वि°—-—कृमि - न, णत्वम्—कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त
- **कृमिल**—वि°—-—कृमि - न, ल वा, णत्वम्—कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त
- **कृमिला**—स्त्री°—-—कृमि - ला - क - टाप्—बहुत सन्तान पैदा करने वाली स्त्री
- **कृश्**—दिवा° पर° <कृश्यति>, <कृश>—-—-—दुर्बल या क्षीण होना
- **कृश्**—दिवा° पर° <कृश्यति>, <कृश>—-—-—उत्तरोत्तर ह्रास होना
- **कृश्**—पुं°—-—-—दुर्बल करना
- **कृश**—वि°—-— —दुबला पतला, दुर्बल, शक्तिहीन, क्षीण
- **कृश**—वि°—-—-—छोटा, थोड़ा, सूक्ष्म
- **कृश**—वि°—-—-—दरिद्र, नगण्य
- **कृशाक्षः**—पुं°—कृश-अक्षः—-—मकड़ी
- **कृशाङ्गः**—वि°—कृश-अङ्गः—-—दुबला पतला
- **कृशाङ्गी**—स्त्री°—कृश-अङ्गी—-—तन्वंगी
- **कृशाङ्गी**—स्त्री°—कृश-अङ्गी—-—प्रियंगु लता
- **कृशोदर**—वि°—कृश-उदर—-—पतली कमर वाला
- **कृशला**—स्त्री°—-—कृश - ला - क - टाप्—बाल
- **कृशानुः**—पुं°—-—कृश - आनुक्—आग
- **कृशानुरेतस्**—पुं°—कृशानु-रेतस्—-—शिव की उपाधि

- **कृशाश्विन्**—पुं॰——कृशाश्व - इनि—नाटक का पात्र
- **कृष्**—तुदा॰ उभ॰ <कृषति>, <कृषते>, <कृष्ट>————हल चलाना, खूड बनाना
- **कृष्**—भ्वा॰ पर॰ <कर्षति>, <कृष्ट>————खींचना, घसीटना, चीरना, खींच देना, फाड़ना
- **कृष्**—भ्वा॰ पर॰ <कर्षति>, <कृष्ट>————किसी की ओर खींचना, आकृष्ट करना
- **कृष्**—भ्वा॰ पर॰ <कर्षति>, <कृष्ट>————नेतृत्व या संचालन करना
- **कृष्**—भ्वा॰ पर॰ <कर्षति>, <कृष्ट>————झुकाना
- **कृष्**—भ्वा॰ पर॰ <कर्षति>, <कृष्ट>————स्वामी होना, दमन करना, परास्त करना, अभिभूत करना
- **कृष्**—भ्वा॰ पर॰ <कर्षति>, <कृष्ट>————हल चलाना, खेती करना
- **कृष्**—भ्वा॰ पर॰ <कर्षति>, <कृष्ट>————प्राप्त करना, हासिल करना
- **कृष्**—भ्वा॰ पर॰ <कर्षति>, <कृष्ट>————किसी से ले लेना, किसी को वंचित करना
- **अपकृष्**—भ्वा॰ पर॰—अप-कृष्———पीछे खींचना, खींच ले जाना, घसीट कर दूर करना, लंबा करना, निचोड़ना
- **अपकृष्**—भ्वा॰ पर॰—अप-कृष्———हटाना
- **अपकृष्**—भ्वा॰ पर॰—अप-कृष्———कम करना, घटाना
- **अवकृष्**—भ्वा॰ पर॰—अव-कृष्———खींचना, खींच लेना
- **आकृष्**—भ्वा॰ पर॰—आ-कृष्———खींचना, समीप पहुँचाना, धकेलना, खींच लेना, निचोड़ना
- **आकृष्**—भ्वा॰ पर॰—आ-कृष्———झुकाना
- **आकृष्**—भ्वा॰ पर॰—आ-कृष्———निचोड़ना, उधार लेना
- **आकृष्**—भ्वा॰ पर॰—आ-कृष्———छीनना, बलपूर्वक ग्रहण करना
- **आकृष्**—भ्वा॰ पर॰—आ-कृष्———किसी दूसरे नियम या वाक्य से शब्द ला देना
- **उत्कृष्**—भ्वा॰ पर॰—उद्-कृष्———ऊपर खींचना, उखाड़ना
- **उत्कृष्**—भ्वा॰ पर॰—उद्-कृष्———बढ़ाना, वृद्धि करना
- **निकृष्**—भ्वा॰ पर॰—नि-कृष्———डुबोना, कम करना, घटाना
- **निष्कृष्**—भ्वा॰ पर॰—निस्-कृष्———बाहर खींचना
- **निष्कृष्**—भ्वा॰ पर॰—निस्-कृष्———खींचतान कर निकालना, बलपूर्वक निकालना, छीनना या जबरदस्ती लेना
- **निष्कृष्**—भ्वा॰ पर॰—परि-कृष्———खींचना, निकालना, घसीटना
- **प्रकृष्**—भ्वा॰ पर॰—प्र-कृष्———खींचना, खींच लेना, आकृष्ट करना
- **प्रकृष्**—भ्वा॰ पर॰—प्र-कृष्———नेतृत्व करना

- **प्रकृष्**—भ्वा° पर°—प्र-कृष्—-—झुकाना
- **प्रकृष्**—भ्वा° पर°—प्र-कृष्—-—बढ़ाना
- **विकृष्**—भ्वा° पर°—वि-कृष्—-—खींचना
- **विकृष्**—भ्वा° पर°—वि-कृष्—-—झुकाना
- **विप्रकृष्**—भ्वा° पर°—विप्र-कृष्—-—हटाना
- **संनिकृष्**—भ्वा° पर°—संनि-कृष्—-—निकट लाना
- **कृषकः**—पुं°—-—कृष् - क्वन्—हलवाहा, किसान, हाली
- **कृषकः**—पुं°—-—कृष् - क्वन्—फाली
- **कृषकः**—पुं°—-—कृष् - क्वन्—बैल
- **कृषाणः**—पुं°—-—कृष् - आनक्, किकन् वा—हलवाहा, किसान
- **कृषिकः**—पुं°—-—कृष् - आनक्, किकन् वा—हलवाहा, किसान
- **कृषिः**—स्त्री°—-—कृष् - इक्—हल चलाना
- **कृषिः**—स्त्री°—-—कृष् - इक्—खेती, काश्तकारी
- **कृषिकर्मन्**—नपुं°—कृषि-कर्मन्—-—खेती का काम
- **कृषिजीविन्**—वि°—कृषि-जीविन्—-—खेती से निर्वाह से करने वाला किसान
- **कृषिफलम्**—नपुं°—कृषि-फलम्—-—खेती से होने वाली उपज, या लाभ
- **कृषिसेवा**—स्त्री°—कृषि-सेवा—-—खेती करना, किसानी
- **कृषीवलः**—पुं°—-—कृषि - वलच्, दीर्घः—जो खेती से अपना जीविकार्जन करे, किसान
- **कृष्करः**—पुं°—-—कृष - कृ = टक् पृषो°—शिव की उपाधि
- **कृष्ट**—वि°—-—कृष् - क्त—खींचा हुआ, उखाड़ा हुआ, घसीटा हुआ, आकृष्ट
- **कृष्ट**—वि°—-—कृष् - क्त—हल चलाया हुआ
- **कृष्टिः**—स्त्री°—-—कृष् - क्तिन्—विद्वान पुरुष
- **कृष्टिः**—स्त्री°—-—कृष् - क्तिन्—खींचना, आकर्षण
- **कृष्टिः**—स्त्री°—-—कृष् - क्तिन्—हल चलाना, भूमि जोतना
- **कृष्ण**—वि°—-—कृष् - नक्—काला, श्याम, गहरा, नीला
- **कृष्ण**—वि°—-—कृष् - नक्—दुष्ट, अनिष्टकर
- **कृष्ण**—वि°—-—कृष् - नक्—काला रंग

- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—काला हरिण
- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—कौआ
- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—कोयल
- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—चान्द्रमास का कृष्णपक्ष
- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—कलियुग
- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—आठवाँ अवतारधारी विष्णु
- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—महाभारत का विख्यात प्रणेता व्यास
- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—अर्जुन
- **कृष्ण**—वि०—-—कृष् - नक्—अगर की लकड़ी
- **कृष्णम्**—नपुं०—-—कृष् - नक्—कालिमा, कालापन
- **कृष्णम्**—नपुं०—-—कृष् - नक्—लोहा
- **कृष्णम्**—नपुं०—-—कृष् - नक्—अंजन
- **कृष्णम्**—नपुं०—-—कृष् - नक्—काली पुतली
- **कृष्णम्**—नपुं०—-—कृष् - नक्—काली मिर्च
- **कृष्णम्**—नपुं०—-—कृष् - नक्—सीसा
- **कृष्णागुरु**—नपुं०—कृष्ण-अगुरु—-—एक प्रकार के चन्दन की लकड़ी
- **कृष्णाचलः**—पुं०—कृष्ण-अचलः—-—रैवतक पर्वत का विशेषण
- **कृष्णाजिनम्**—नपुं०—कृष्ण-अजिनम्—-—काले हरिण का चर्म
- **कृष्णायस्**—नपुं०—कृष्ण-अयस्—-—लोहा, कच्चा या काला लोहा
- **कृष्णामिषम्**—नपुं०—कृष्ण-आमिषम्—-—लोहा, कच्चा या काला लोहा
- **कृष्णाध्वन्**—पुं०—कृष्ण-अध्वन्—-—आग
- **कृष्णार्चिस्**—पुं०—कृष्ण-अर्चिस्—-—आग
- **कृष्णाष्टमी**—स्त्री०—कृष्ण-अष्टमी—-—भाद्रपक्ष कृष्णपक्ष का आठवाँ दिन
- **कृष्णावासः**—पुं०—कृष्ण-आवासः—-—अश्वत्थ वृक्ष
- **कृष्णोदरः**—पुं०—कृष्ण-उदरः—-—एक प्रकार का साँप
- **कृष्णकन्दम्**—नपुं०—कृष्ण-कन्दम्—-—लाल कमल
- **कृष्णकर्मन्**—वि०—कृष्ण-कर्मन्—-—काली करतूत वाला, मुजरिम, दुष्ट, दुश्चरित्र, दोषी

- **कृष्णकाकः**—पुं°—कृष्ण-काकः—-—पहाड़ी कौआ
- **कृष्णकायः**—पुं°—कृष्ण-कायः—-—भैंसा
- **कृष्णकाष्ठम्**—नपुं°—कृष्ण-काष्ठम्—-—एकप्रकार की चंदन की लकड़ी, काला अगर
- **कृष्णकोहलः**—पुं°—कृष्ण-कोहलः—-—जुआरी
- **कृष्णगतिः**—पुं°—कृष्ण-गतिः—-—आग
- **कृष्णग्रीवः**—पुं°—कृष्ण-ग्रीवः—-—शिव का नाम
- **कृष्णतारः**—पुं°—कृष्ण-तारः—-—काले हरिणों की एक जाति
- **कृष्णदेहः**—पुं°—कृष्ण-देहः—-—मधुमक्खी
- **कृष्णधनम्**—नपुं°—कृष्ण-धनम्—-—बुरे तरीकों से कमाया हुआ धन, पाप की कमाई
- **कृष्णद्वैपायनः**—पुं°—कृष्ण-द्वैपायनः—-—व्यास का नाम
- **कृष्णपक्षः**—पुं°—कृष्ण-पक्षः—-—चान्द्रमास का अंधेरा पक्ष
- **कृष्णमृगः**—पुं°—कृष्ण-मृगः—-—काला हरिण
- **कृष्णमुखः**—पुं°—कृष्ण-मुखः—-—काले मुँह का बन्दर
- **कृष्णवक्त्रः**—पुं°—कृष्ण-वक्त्रः—-—काले मुँह का बन्दर
- **कृष्णवदनः**—पुं°—कृष्ण-वदनः—-—काले मुँह का बन्दर
- **कृष्णयजुर्वेदः**—पुं°—कृष्ण-यजुर्वेदः—-—तैत्तिरीय या कृष्ण यजुर्वेद
- **कृष्णलोहः**—पुं°—कृष्ण-लोहः—-—चुम्बक पत्थर
- **कृष्णवर्णः**—पुं°—कृष्ण-वर्णः—-—काला रंग
- **कृष्णवर्णः**—पुं°—कृष्ण-वर्णः—-—राहु
- **कृष्णवर्णः**—पुं°—कृष्ण-वर्णः—-—शूद्र
- **कृष्णवर्त्मन्**—पुं°—कृष्ण-वर्त्मन्—-—आग
- **कृष्णवर्त्मन्**—पुं°—कृष्ण-वर्त्मन्—-—राहु का नाम
- **कृष्णवर्त्मन्**—पुं°—कृष्ण-वर्त्मन्—-—नीच पुरुष, दुराचारी, लुच्चा
- **कृष्णवेणा**—स्त्री°—कृष्ण-वेणा—-—नदी का नाम
- **कृष्णशकुनिः**—पुं°—कृष्ण-शकुनिः—-—कौवा
- **कृष्णसारः**—पुं°—कृष्ण-सारः—-—चितकबरा, काला मृग
- **कृष्णशारः**—पुं°—कृष्ण-शारः—-—चितकबरा, काला मृग

- **कृष्णश्रृङ्गः**—पुं°—कृष्ण-श्रृङ्गः—-—भैंसा
- **कृष्णसखः**—पुं°—कृष्ण-सखः—-—अर्जुन का विशेषण
- **कृष्णसारथिः**—पुं°—कृष्ण-सारथिः—-—अर्जुन का विशेषण
- **कृष्णकम्**—नपुं°—-—कृष्ण - कन्—काले मृग का चमड़ा
- **कृष्णलः**—पुं°—-—कृष्ण - ला - क—घुँघचीं का पौधा, गुंजा-पौधा
- **कृष्णलम्**—नपुं°—-—कृष्ण - ला - क—घुँघचीं, चहुँटली
- **कृष्णा**—स्त्री°—-—कृष्ण - टाप्—द्रौपदी का नाम, पाण्डवों की पत्नी
- **कृष्णा**—स्त्री°—-—कृष्ण - टाप्—दक्षिण भारत की एक नदी जो मुसलीपट्टम् में समुद्र में गिरती है
- **कृष्णिका**—स्त्री°—-—कृष्ण - ठन् - टाप्—काली सरसों
- **कृष्णिमन्**—पुं°—-—कृष्ण - इमनिच्—कालिमा, कालापन
- **कृष्णी**—स्त्री°—-—कृष्ण - ङीष्—अँधेरी रात
- **कॄ**—तुदा° पर° <किरति>, <कीर्ण>—-—-—बिखेरना, इधर-उधर फेंकना, उड़ेलना, डालना, तितर-बितर करना
- **कॄ**—तुदा° पर° <किरति>, <कीर्ण>—-—-—छितराना, ढँकना, भरना
- **अपकॄ** —तुदा° पर°—अप-कॄ —-—बखेरना, इधर-उधर डालना
- **अपकॄ** —तुदा° पर°—अप-कॄ —-—पैरों से खुरचना, पूरा हर्ष
- **अपाकॄ** —तुदा° पर°—अपा-कॄ —-—उतार फेंकना, अस्वीकार करना, निराकरण करना
- **अवकॄ** —तुदा° पर°—अव-कॄ —-—बखेरना, फेंकना
- **आकॄ** —तुदा° पर°—आ-कॄ —-—चारों ओर फैलाना
- **आकॄ** —तुदा° पर°—आ-कॄ —-—खोदना
- **उद्कॄ** —तुदा° पर°—उद्-कॄ —-—ऊपर को बिखेरना, ऊपर को फेंकना
- **उद्कॄ** —तुदा° पर°—उद्-कॄ —-—खोदना, खोदकर खोखला करना
- **उद्कॄ** —तुदा° पर°—उद्-कॄ —-—उत्कीर्ण करना, खुदाई करना, मूर्ति बनाना
- **उपकॄ** —तुदा° पर°—उप-कॄ —-—काटना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना
- **परिकॄ** —तुदा° पर°—परि-कॄ —-—घेरना
- **परिकॄ** —तुदा° पर°—परि-कॄ —-—सोंपना, देना, बाँटना
- **प्रकॄ** —तुदा° पर°—प्र-कॄ —-—बिखेरना, फेंकना उड़ेलना
- **प्रकॄ** —तुदा° पर°—प्र-कॄ —-—बोना

- **प्रतिकॄ** —तुदा॰ पर॰—प्रति-कॄ —-—चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, फाड़ना
- **विकॄ** —तुदा॰ पर॰—वि-कॄ —-—बखेरना, इधर-उधर फेंकना, छितराना, फैलाना
- **विनिकॄ**—तुदा॰ पर॰—विनि-कॄ—-—फकना, छोड़ना, उतार फेंकना
- **संकॄ**—तुदा॰ पर॰—सम्-कॄ—-—मिलाना, सम्मिश्रण करना, एक स्थान पर गड्डमड्ड करना
- **समुत्कॄ**—तुदा॰ पर॰—समुद्-कॄ—-—छेदना, सुराख करना, बींधना
- **कॄ**—क्र्या॰ उभ॰ <कृणाति>, <कृणीते>—-—-—क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना
- **कॄत्**—चुरा॰ उभ॰ <कीर्तयति>, <कीर्तयते>, <कीर्तित>—-—-—उल्लेख करना, दोहराना, उच्चारण करना
- **कॄत्**—चुरा॰ उभ॰ <कीर्तयति>, <कीर्तयते>, <कीर्तित>—-—-—कहना, सस्वर पाठ करना, घोषणा करना, समाचार देना
- **कॄत्**—चुरा॰ उभ॰ <कीर्तयति>, <कीर्तयते>, <कीर्तित>—-—-—नाम लेना, पुकार करना
- **कॄत्**—चुरा॰ उभ॰ <कीर्तयति>, <कीर्तयते>, <कीर्तित>—-—-—स्तुति करना, यशोगान करना, स्मरणार्थ उत्सव मनाना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰ <कल्पते>, <कॢप्त>—-—-—योग्य होना, यथेष्ट होना, फलना, प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, पैदा करना, ढुलकना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰ <कल्पते>, <कॢप्त>—-—-—सुप्रबद्ध तथा विनियमित होना, सफल होना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰ <कल्पते>, <कॢप्त>—-—-—होना, घटित होना, घटना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰ <कल्पते>, <कॢप्त>—-—-—तैयार होना, सज्जित होना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰ <कल्पते>, <कॢप्त>—-—-—अनुकूल होना, किसी के काम आना, अनुसेवन करना, भाग लेना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰—-—-—तैयार करना, क्रम से रखना, सँवारना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰—-—-—निश्चित करना, स्थिर करना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰—-—-—बाँटना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰—-—-—समान जुटाना, उपस्कृत करना
- **कॢप्**—भ्वा॰ आ॰—-—-—विचार करना
- **अवकॢप्**—भ्वा॰ आ॰—अव-कॢप्—-—फलना, झुकना, सम्पन्न करना
- **आकॢप्**—भ्वा॰ आ॰—आ-कॢप्—-—अलंकृत करना, सजाना
- **उपकॢप्**—भ्वा॰ आ॰—उप-कॢप्—-—फलना, परिणाम निकालना
- **उपकॢप्**—भ्वा॰ आ॰—उप-कॢप्—-—तैयार होना, तत्पर होना
- **परिकॢप्**—भ्वा॰ आ॰—परि-कॢप्—-—फैसला करना, निर्धारण करना, निश्चित करना
- **परिकॢप्**—भ्वा॰ आ॰—परि-कॢप्—-—तैयार करना, तैयार होना
- **परिकॢप्**—भ्वा॰ आ॰—परि-कॢप्—-—गुणयुक्त करना

- **प्रक्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—प्र-क्ऌप्—-—होना, घटित होना
- **प्रक्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—प्र-क्ऌप्—-—सफल होना
- **प्रक्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—प्र-क्ऌप्—-—आविष्कार करना, उपाय निकालना, बनाना
- **प्रक्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—प्र-क्ऌप्—-—तैयार करना, तैयार होना
- **विक्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—वि-क्ऌप्—-—सन्देह करना, सन्दिग्ध होना
- **विक्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—वि-क्ऌप्—-—सन्देह करना
- **सम्क्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—सम्-क्ऌप्—-—दृढ़ निश्चय करना, दृढ़ संकल्प करना, निश्चित करना
- **सम्क्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—सम्-क्ऌप्—-—इरादा करना, प्रस्ताव रखना
- **समुपक्ऌप्**—भ्वा॰ आ॰—समुप-क्ऌप्—-—तैयार होना
- **क्ऌप्त**—भू॰ क॰ कृ॰—-—क्ऌप् - क्त—तैयार किया हुआ, किया हुआ, तैयार हुआ, सुसज्जित, विवाहवेष में सुभूषित
- **क्ऌप्त**—भू॰ क॰ कृ॰—-—क्ऌप् - क्त—काटा हुआ, छिला हुआ
- **क्ऌप्त**—भू॰ क॰ कृ॰—-—क्ऌप् - क्त—उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ
- **क्ऌप्त**—भू॰ क॰ कृ॰—-—क्ऌप् - क्त—स्थिर किया हुआ, निश्चित, सोचा हुआ, आविष्कृत
- **क्ऌप्तकीला**—स्त्री॰—क्ऌप्त-कीला—-—अधिकार पत्र, दस्तावेज
- **क्ऌप्तधूपः**—पुं॰—क्ऌप्त-धूपः—-—लोबान
- **क्ऌप्तिः**—स्त्री॰—-—क्ऌप् - क्तिन्—निष्पत्ति, सफलता
- **क्ऌप्तिः**—स्त्री॰—-—क्ऌप् - क्तिन्—आविष्कार, बनावट
- **क्ऌप्तिः**—स्त्री॰—-—क्ऌप् - क्तिन्—क्रमबद्ध करना
- **क्ऌप्तिक**—वि॰—-—क्ऌप्त - ठन्—खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ
- **केकयः**—पुं॰,ब॰ व॰—-—-—एक देश और उसके निवासी
- **केकर**—वि॰—-—-—भेंगी आँख वाला
- **केकरम्**—नपुं॰—-—-—भेंगी आँख
- **केकराक्ष**—वि॰—केकर-अक्ष—-—वक्रदृष्टि, भेंगी आँख वाला
- **केका**—स्त्री॰—-—के - कै - ड - टाप्—मोर की बोली
- **केकावलः**—पुं॰—-—केका - वलच्—मोर
- **केकिकः**—पुं॰—-—केका - वलच्, केका - ठन्—मोर
- **केकिन्**—पुं॰—-—केका - वलच्, केका - ठन्, केका - इनि—मोर

- **केणिका**—स्त्री°—-—के मूर्ध्नि कुत्सितः अणकः - टाप्—तम्बू
- **केतः**—पुं°—-—कित् - घञ्—घर, आवास
- **केतः**—पुं°—-—कित् - घञ्—रहना, बस्ती
- **केतः**—पुं°—-—कित् - घञ्—झण्डा
- **केतः**—पुं°—-—कित् - घञ्—इच्छा शक्ति, इरादा, चाह
- **केतकः**—पुं°—-—कित् - ण्वुल्—एक पौधा
- **केतकः**—पुं°—-—कित् - ण्वुल्—झण्डा
- **केतकम्**—नपुं°—-—कित् - ण्वुल्—केवड़े का फूल
- **केतकी**—स्त्री°—-—कित् - ण्वुल्—एक पौधा - केवड़ा
- **केतकी**—स्त्री°—-—कित् - ण्वुल्—केतकी का फूल
- **केतनम्**—नपुं°—-—कित् - ल्युट्—घर, आवास
- **केतनम्**—नपुं°—-—कित् - ल्युट्—निमन्त्रण, बुलावा
- **केतनम्**—नपुं°—-—कित् - ल्युट्—स्थान, जगह
- **केतनम्**—नपुं°—-—कित् - ल्युट्—पताका, झण्डा
- **केतनम्**—नपुं°—-—कित् - ल्युट्—चिह्न, प्रतीक
- **केतनम्**—नपुं°—-—कित् - ल्युट्—अनिवार्य कर्म
- **केतित**—वि°—-—केत - इतच्—बुलाया गया, आमन्त्रित
- **केतित**—वि°—-—केत - इतच्—आबाद, बसा हुआ
- **केतुः**—पुं°—-—चाय् - तु, की आदेशः—पताका, झण्डा
- **केतुः**—पुं°—-—चाय् - तु, की आदेशः—मुख्य, प्रधान, नेता, प्रमुख, विशिष्ट व्यक्ति
- **केतुः**—पुं°—-—चाय् - तु, की आदेशः—पुच्छलतारा, धूमकेतु
- **केतुः**—पुं°—-—चाय् - तु, की आदेशः—चिह्न, अंक
- **केतुः**—पुं°—-—चाय् - तु, की आदेशः—उज्जवलता, स्वच्छता
- **केतुः**—पुं°—-—चाय् - तु, की आदेशः—प्रकाश की किरण
- **केतुः**—पुं°—-—चाय् - तु, की आदेशः—सौरमण्डल का नवाग्रह
- **केतुग्रहः**—पुं°—केतु-ग्रहः—-—अवरोही शिरोबिन्दु
- **केतुभः**—पुं°—केतु-भः—-—बादल

- **केतुयष्टिः**—स्त्री°—केतु-यष्टिः—-—ध्वज का दण्ड
- **केतुरत्नम्**—नपुं°—केतु-रत्नम्—-—नीलम, वैदूर्य
- **केतुवसनम्**—नपुं°—केतु-वसनम्—-—ध्वजा, पताका
- **केदारः**—पुं°—-—के शिरसि दारोऽस्य - ब° स°—पानी भरा हुआ खेत, चरागाह
- **केदारः**—पुं°—-—के शिरसि दारोऽस्य - ब° स°—थाँवला, आलवाल
- **केदारः**—पुं°—-—के शिरसि दारोऽस्य - ब° स°—पहाड़
- **केदारः**—पुं°—-—के शिरसि दारोऽस्य - ब° स°—केदार नामक एक पहाड़ जो हिमालय का एक भाग है
- **केदारः**—पुं°—-—के शिरसि दारोऽस्य - ब° स°—शिव का नाम
- **केदारखण्डम्**—नपुं°—केदार-खण्डम्—-—मिट्टी का बना एक छोटा सा बाँध जो पानी को रोक सके
- **केदारनाथः**—पुं°—केदार-नाथः—-—शिव का विशेष रुप
- **केनारः**—पुं°—-—के मूर्ध्नि नारः - अलु° स°—सिर
- **केनारः**—पुं°—-—के मूर्ध्नि नारः - अलु° स°—खोपड़ी
- **केनारः**—पुं°—-—के मूर्ध्नि नारः - अलु° स°—गाल
- **केनारः**—पुं°—-—के मूर्ध्नि नारः - अलु° स°—जोड़
- **केनिपातः**—पुं°—-—के जले निपात्यतेऽसौ - के - नि - पत् - णिच् - अच्—पतवार, डाँड़, चप्पू
- **केन्द्रम्**—नपुं°—-—-—वृत्त का मध्य बिन्दु
- **केन्द्रम्**—नपुं°—-—-—वृत्त का प्रमाण
- **केन्द्रम्**—नपुं°—-—-—जन्मकुण्डली में लग्न से पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान
- **केयूरः**—पुं°—-—के बाहौ शिरसि वा याति, या - ऊर किच्च, अलु° स°, तारा°—टाड, बिजायठ, बाजूबन्द
- **केयूरम्**—नपुं°—-—के बाहौ शिरसि वा याति, या - ऊर किच्च, अलु° स°, तारा°—टाड, बिजायठ, बाजूबन्द
- **केयूरः**—पुं°—-—के बाहौ शिरसि वा याति, या - ऊर किच्च, अलु° स°, तारा°—एक रतिबन्ध
- **केरलः**—पुं°—-—-—दक्षिण भारत एक देश और उसके निवासी
- **केरली**—स्त्री°—-—-—केरल देश की स्त्री
- **केरली**—स्त्री°—-—-—ज्योतिर्विज्ञान
- **केल्**—भ्वा° पर° <केलति>, <केलित>—-—-—हिलाना
- **केल्**—भ्वा° पर° <केलति>, <केलित>—-—-—खेलना, खिलाड़ी होना, क्रीड़ापरायण या केलिप्रिय होना
- **केलकः**—पुं°—-—केल् - ण्वुल्—नर्तक, कलाबाजी करने वाला नट

- **केलासः**—पुं°—-—केला विलासः सीदत्यस्मिन् - केला - सद् - ड़—स्फटिक
- **केलिः**—पुं°/स्त्री°—-—केल् - इन्—खेल, क्रीडा
- **केलिः**—पुं°/स्त्री°—-—केल् - इन्—आमोद-प्रमोद, मनोविनोद
- **केलिः**—पुं°/स्त्री°—-—केल् - इन्—परिहास, मखौल, हँसीदिल्लगी
- **केलिः**—स्त्री°—-—केल् - इन्—पृथ्वी
- **केलिकला**—स्त्री°—केलि-कला—-—क्रीड़ाप्रिय कला विलासिता, श्रृंगारप्रिय सम्बोधन
- **केलिकला**—स्त्री°—केलि-कला—-—सरस्वती की वीणा
- **केलिकिलः**—पुं°—केलि-किलः—-—नाटक में नायक का विश्वस्त सहचर
- **केलिकिलावती**—स्त्री°—केलि-किलावती—-—रति, कामदेव की पत्नी
- **केलिकीर्णः**—पुं°—केलि-कीर्णः—-—ऊँट
- **केलिकुंचिका**—स्त्री°—केलि-कुंचिका—-—पत्नी की छोटी बहन
- **केलिकुपित**—वि°—केलि-कुपित—-—खेल में रुष्ट
- **केलिकोषः**—पुं°—केलि-कोषः—-—नाटक का पात्र, नर्तक, नचैया
- **केलिगृहम्**—नपुं°—केलि-गृहम्—-—आमोदभवन, निजी कमरा
- **केलिनिकेतेनम्**—नपुं°—केलि-निकेतेनम्—-—आमोदभवन, निजी कमरा
- **केलिमन्दिरम्**—नपुं°—केलि-मन्दिरम्—-—आमोदभवन, निजी कमरा
- **केलिसदनम्**—नपुं°—केलि-सदनम्—-—आमोदभवन, निजी कमरा
- **केलिनागरः**—पुं°—केलि-नागरः—-—कामासक्त
- **केलिपर**—वि°—केलि-पर—-—क्रीडापर, विलासी, आमोदप्रिय
- **केलिमुखः**—पुं°—केलि-मुखः—-—परिहास, क्रीड़ा, मनोरञ्जन
- **केलिवृक्षः**—पुं°—केलि-वृक्षः—-—कदम्बवृक्ष की जाति
- **केलिशयनम्**—नपुं°—केलि-शयनम्—-—विलासशय्या, सुखशय्या, कोच
- **केलिशुषिः**—स्त्री°—केलि-शुषिः—-—पृथ्वी
- **केलिसचिवः**—पुं°—केलि-सचिवः—-—आमोदप्रिय सखा, विश्रब्ध मित्र
- **केलिकः**—पुं°—-—केलि - कन्—अशोकवृक्ष
- **केली**—स्त्री°—-—केलि - ङीष्—खेल, क्रीडा
- **केली**—स्त्री°—-—केलि - ङीष्—आमोद-क्रीडा

- **केलीपिकः**—पुं॰—केली-पिकः—-—मनोविनोदार्थ रखी हुई कोयल
- **केलीवनी**—स्त्री॰—केली-वनी—-—प्रमोद-वाटिका, केलिकानन, क्रीडोद्यान
- **केलीशुकः**—पुं॰—केली-शुकः—-—मनोरञ्जनार्थ पाला हुआ तोता
- **केवल**—वि॰—-—केव् सेवने वृषा कल—विशिष्ट, एकान्तिक, असाधारण
- **केवल**—वि॰—-—केव् सेवने वृषा कल—अकेला, मात्र, एकल, एकमात्र, इक्का-दुक्का
- **केवल**—वि॰—-—केव् सेवने वृषा कल—पूर्ण, समस्त, परम, पूरा
- **केवल**—वि॰—-—केव् सेवने वृषा कल—नग्न अनावृत
- **केवल**—वि॰—-—केव् सेवने वृषा कल—खालिस, सरल, अभिश्रित, विमल
- **केवलम्**—अव्य॰—-—-—केवल, सिर्फ, एकमात्र, पूर्णरूप से , नितान्त, सर्वथा
- **केवलात्मन्**—वि॰—केवल-आत्मन्—-—परम एकता ही जिसका सार है
- **केवलनैयायिकः**—पुं॰—केवल-नैयायिकः—-—सिर्फ तार्किक
- **केवलतः**—अव्य॰—-—केवल + तसिल्—केवल, निरा, सर्वथा, निपट, सिर्फ
- **केवलिन्**—वि॰—-—केवल + तसिल्—अकेला, एकमात्र
- **केवलिन्**—वि॰—-—केवल + तसिल्—आत्मा की एकता के परम सिद्धान्त का पक्षपाती
- **केशः**—पुं॰—-—क्लिश्यते क्लिश्नाति वा - क्लिश् + अन्, लोलोपश्च—विकीर्णकेशासु परेतभूमिषु @ कु॰ ५।६८
- **केशः**—पुं॰—-—क्लिश्यते क्लिश्नाति वा - क्लिश् + अन्, लोलोपश्च—केशेषु गृहीत्वा - या - केशग्राहं युध्यन्ते @ सिद्धा॰ , मुक्तकेशा @ मनु॰ ७।९१, केशव्यपरोपणादिव @ रघु॰ ३।५६, २।८
- **केशः**—पुं॰—-—क्लिश्यते क्लिश्नाति वा - क्लिश् + अन्, लोलोपश्च—घोड़े या शेर की अयाल
- **केशः**—पुं॰—-—क्लिश्यते क्लिश्नाति वा - क्लिश् + अन्, लोलोपश्च—प्रकाश की किरण
- **केशः**—पुं॰—-—क्लिश्यते क्लिश्नाति वा - क्लिश् + अन्, लोलोपश्च—वरूण का विशेषण
- **केशः**—पुं॰—-—क्लिश्यते क्लिश्नाति वा - क्लिश् + अन्, लोलोपश्च—एकप्रकार का सुगन्धद्रव्य
- **केशान्तः**—पुं॰—केश-अन्तः—-—बाल का सिरा
- **केशान्तः**—पुं॰—केश-अन्तः—-—नीचे लटकते हुए लम्बे बाल, बालों का गुच्छा
- **केशान्तः**—पुं॰—केश-अन्तः—-—मुण्डन संस्कार
- **केशोच्चयः**—पुं॰—केश-उच्चयः—-—अधिक या सुन्दर बाल
- **केशकर्मन्**—नपुं॰—केश-कर्मन्—-—बालों को संभालना
- **केशकलापः**—पुं॰—केश-कलापः—-—बालों का ढेर

- **केशकीटः**—पुं॰—केश-कीटः—-—जूँ
- **केशगर्भः**—पुं॰—केश-गर्भः—-—बालों की मींढी
- **केशगृहीत**—वि॰—केश-गृहीत—-—बालों से पकड़ा हुआ
- **केशग्रहः**—पुं॰—केश-ग्रहः—-—बालों को पकड़ना, बालों से पकड़ना
- **केशग्रहणम्**—नपुं॰—केश-ग्रहणम्—-—बालों को पकड़ना, बालों से पकड़ना
- **केशघ्नम्**—नपुं॰—केश-घ्नम्—-—दूषित गंजापन
- **केशच्छिद्**—पुं॰—केश-च्छिद्—-—नाई, हज्जाम
- **केशजाहः**—पुं॰—केश-जाहः—-—बालों की जड़
- **केशपक्षः**—पुं॰—केश-पक्षः—-—बहुत अधिक या संवारे हुए बाल
- **केशपाशः**—पुं॰—केश-पाशः—-—बहुत अधिक या संवारे हुए बाल
- **केशहस्तः**—पुं॰—केश-हस्तः—-—बहुत अधिक या संवारे हुए बाल
- **केशबन्ध**—पुं॰—केश-बन्ध—-—जूड़ा
- **केशभूः**—पुं॰—केश-भूः—-—सिर या शरीर का अन्य भाग जहाँ बाल उगते है
- **केशभूमिः**—स्त्री॰—केश-भूमिः—-—सिर या शरीर का अन्य भाग जहाँ बाल उगते है
- **केशप्रसाधनी**—स्त्री॰—केश-प्रसाधनी—-—कंघी
- **केशमार्जकम्**—नपुं॰—केश-मार्जकम्—-—कंघी
- **केशमार्जनम्**—नपुं॰—केश-मार्जनम्—-—कंघी
- **केशरचना**—स्त्री॰—केश-रचना—-—बालों को संवारना
- **केशवेशः**—पुं॰—केश-वेशः—-—कबरी-बन्धन
- **केशटः**—पुं॰—-—केश + अट् + अच्, शक॰ पररूपम्—बकरा
- **केशटः**—पुं॰—-—केश + अट् + अच्, शक॰ पररूपम्—विष्णु का नाम
- **केशटः**—पुं॰—-—केश + अट् + अच्, शक॰ पररूपम्—खटमल
- **केशटः**—पुं॰—-—केश + अट् + अच्, शक॰ पररूपम्—भाई
- **केशव**—पुं॰—-—केशः प्रशस्ताः सन्त्यस्य, केश + व—बहुत या सुन्दर बालों वाला
- **केशवः**—पुं॰—-—केशः प्रशस्ताः सन्त्यस्य, केश + व—विष्णु का विशेषण
- **केशवायुधः**—पुं॰—केशव-आयुधः—-—आम का वृक्ष
- **केशवायुधम्**—नपुं॰—केशव-आयुधम्—-—विष्णु का शस्त्र

- **केशवालयः**—पुं°—केशव-आलयः—-—अश्वत्थ वृक्ष
- **केशवावासः**—पुं°—केशव-आवासः—-—अश्वत्थ वृक्ष
- **केशाकेशि**—अव्य°—-— केशेषु केशेषु गृहीत्वा प्रवृत्तं युद्धम् - पूर्वपदस्य आकारः इत्वम् च—एक दूसरे के बाल खींचकर, नोचकर ली जाने वाली लड़ाई , झोंटा-झोंटी
- **केशिक**—वि°—-— केश + ठन्—सुन्दर या अलंकृत बालों वाला
- **केशिन्**—पुं°—-— केश + इनि—सिंह
- **केशिन्**—पुं°—-— केश + इनि—एक राक्षस जिसको कृष्ण ने मार गिराया था
- **केशिन्**—पुं°—-— केश + इनि—एक और राक्षस जो देव सेना को उठा कर ले गया और बाद में इन्द्र द्वारा मारा गया
- **केशिन्**—पुं°—-— केश + इनि—कृष्ण का विशेषण
- **केशिन्**—पुं°—-— केश + इनि—सुन्दर बालों वाला
- **केशिनिषूदनः**—पुं°—केशिन्-निषूदनः—-—कृष्ण का विशेषण
- **केशिमथनः**—पुं°—केशिन्-मथनः—-—कृष्ण का विशेषण
- **केशिनी**—स्त्री°—-— केशिन् + ङीप्—सुन्दर जुड़े वाली स्त्री
- **केशिनी**—स्त्री°—-— केशिन् + ङीप्—विश्रवा की पत्नी, रावण और कुम्भकर्ण की माता
- **केसरः** —पुं°—-— के + सृ + अच्, अलुक् स°—अयाल
- **केसरः** —पुं°—-— के + सृ + अच्, अलुक् स°—फूल का रेशा या तन्तु
- **केसरः** —पुं°—-— के + सृ + अच्, अलुक् स°—बकुल का पेड़
- **केसरः** —पुं°—-— के + सृ + अच्, अलुक् स°—रेशा या सूत्र
- **केशरः**—पुं°—-— के + शृ + अच्, अलुक् स°—अयाल
- **केशरः**—पुं°—-— के + शृ + अच्, अलुक् स°—फूल का रेशा या तन्तु
- **केशरः**—पुं°—-— के + शृ + अच्, अलुक् स°—बकुल का पेड़
- **केशरः**—पुं°—-— के + शृ + अच्, अलुक् स°—रेशा या सूत्र
- **केसरम्**—नपुं°—-— के + सृ + अच्, अलुक् स°—अयाल
- **केसरम्**—नपुं°—-— के + सृ + अच्, अलुक् स°—फूल का रेशा या तन्तु
- **केसरम्**—नपुं°—-— के + सृ + अच्, अलुक् स°—बकुल का पेड़
- **केसरम्**—नपुं°—-— के + सृ + अच्, अलुक् स°—रेशा या सूत्र
- **केशरम्**—नपुं°—-— के + शृ + अच्, अलुक् स°—अयाल

- **केशरम्**—नपुं°—–— के + शृ + अच्, अलुक् स°—फूल का रेशा या तन्तु
- **केशरम्**—नपुं°—–— के + शृ + अच्, अलुक् स°—बकुल का पेड़
- **केशरम्**—नपुं°—–— के + शृ + अच्, अलुक् स°—रेशा या सूत्र
- **केसरम्**—नपुं°—–— के + सृ + अच्, अलुक् स°—बकुल वृक्ष का फूल
- **केशरम्**—नपुं°—–— के + शृ + अच्, अलुक् स°—बकुल वृक्ष का फूल
- **केसराचलः**—पुं°—केसर-अचलः—–—मेरू पहाड़ का विशेषण
- **केसरवरम्**—नपुं°—केसर-वरम्—–—केसर, जाफ़रान
- **केसरिन्**—पुं°—–—केसर - इनि—घोड़ा
- **केसरिन्**—पुं°—–—केसर - इनि—नींबू या गलगल का पेड़
- **केसरिन्**—पुं°—–—केसर - इनि—पुन्नाग का वृक्ष
- **केसरिन्**—पुं°—–—केसर - इनि—हनुमान के पिता का नाम
- **केसरिसुतः**—पुं°—केसरिन्-सुतः—–—हनुमान का विशेषण
- **केशरिन्**—पुं°—–—केशर - इनि—सिंह
- **केशरिन्**—पुं°—–—केशर - इनि—श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अपने वर्ग का प्रमुख
- **केशरिन्**—पुं°—–—केशर - इनि—घोड़ा
- **केशरिन्**—पुं°—–—केशर - इनि—नींबू या गलगल का पेड़
- **केशरिन्**—पुं°—–—केशर - इनि—पुन्नाग का वृक्ष
- **केशरिन्**—पुं°—–—केशर - इनि—हनुमान के पिता का नाम
- **केशरिसुतः**—पुं°—केशरिन्-सुतः—–—हनुमान का विशेषण
- **कै**—भ्वा° पर° <कायति>—–—–—शब्द करना, ध्वनि करना
- **कैंशुकम्**—नपुं°—–—किंशुक - अण्—किंशुक वृक्ष का फूल
- **कैकयः**—पुं°—–—केकय - अण्—केकय देश का राजा
- **कैकसः**—पुं°—–—कीकस - अण्—राक्षस, पिशाच
- **कैकेयः**—पुं°—–—केकयानां राजा - अण्—केकय देश का राजा राजकुमार
- **कैकेयी**—स्त्री°—–—केकय - अण् - ङीप्—केकय देश की राजा की बेटी, राजा दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता
- **कैटभः**—पुं°—–—कीट - भा - ड - अण्—राक्षस का नाम जिसे विष्णु के मार गिराया
- **कैटभारिः**—पुं°—कैटभ-अरिः—–—विष्णु का विशेषण

- **कैटभजित्**—पुं°—कैटभ-जित्—-—विष्णु का विशेषण
- **कैटभरिपुः**—पुं°—कैटभ-रिपुः—-—विष्णु का विशेषण
- **कैटभहन्**—पुं°—कैटभ-हन्—-—विष्णु का विशेषण
- **कैतकम्**—नपुं°—-—केतकी - अण्—केवड़े का फूल
- **कैतवम्**—नपुं°—-—कितव- अण्—जूए में लगाया गया दाँव
- **कैतवम्**—नपुं°—-—कितव- अण्—जूआ खेलना
- **कैतवम्**—नपुं°—-—कितव- अण्—झूठ, धोखा, जालसाजी, चालबाजी, चालाकी
- **कैतवः**—पुं°—-—कितव- अण्—छली, चालबाज
- **कैतवः**—पुं°—-—कितव- अण्—जुआरी
- **कैतवः**—पुं°—-—कितव- अण्—धतूरे का पौधा
- **कैतवप्रयोगः**—पुं°—कैतव-प्रयोगः—-—चालाकी, दाँव
- **कैतववादः**—पुं°—कैतव-वादः—-—झूठ, चालबाजी
- **केदारः**—पुं°—-—केदार - अण्—चावल, अनाज
- **केदारम्**—नपुं°—-—केदार - अण्—खेतों का समूह
- **कैमुतिकः**—पुं°—-—किमुत - ठक्—न्याय, एक प्रकार का तर्क
- **कैरवः**—पुं°—-—के जले रौति - केरवः हंसः तस्य प्रियं - केरव - अण्—जुआरी, धोखा देने वाला, चालबाज
- **कैरवः**—पुं°—-—के जले रौति - केरवः हंसः तस्य प्रियं - केरव - अण्—शत्रु
- **कैरवम्**—नपुं°—-—के जले रौति - केरवः हंसः तस्य प्रियं - केरव - अण्—श्वेत कुमुद जो चन्द्रोदय के समय खिलता है
- **कैरवबन्धुः**—पुं°—कैरव-बन्धुः—-—चन्द्रमा का विशेषण
- **कैरविन्**—पुं°—-—कैरव - इनि—चन्द्रमा
- **कैरविणी**—स्त्री°—-—कैरविन् - ङीप्—श्वेत फूल वाला कुमुद का पौधा
- **कैरविणी**—स्त्री°—-—कैरविन् - ङीप्—वह सरोवर जिसमें श्वेत कमल खिले हों
- **कैरविणी**—स्त्री°—-—कैरविन् - ङीप्—श्वेत कमलों का समूह
- **कैरवी**—स्त्री°—-—कैरव - ङीप्—चाँदनी, ज्योत्सना
- **कैलासः**—पुं°—-—के जले लासो दीप्तिरस्य - केलास - अण्—पहाड़ का नाम, हिमालय की एक चोटी, शिव और कुबेर का निवास स्थान
- **कैलासनाथः**—पुं°—कैलास-नाथः—-—शिव का विशेषण
- **कैलासनाथः**—पुं°—कैलास-नाथः—-—कुबेर का विशेषण

- **कैवर्तः**—पुं०—-—के जले वर्तते - वृत् - अच्, केवर्तः ततः स्वार्थे अण् तारा० —मछुवारा
- **कैवल्यम्**—नपुं०—-—केवल - ष्यञ्—पूर्ण पृथकता, अकेलापन, एकान्तिकता
- **कैवल्यम्**—नपुं०—-—केवल - ष्यञ्—व्यक्तित्व
- **कैवल्यम्**—नपुं०—-—केवल - ष्यञ्—प्रकृति से आत्मा का पार्थक्य, परमात्मा के साथ आत्मा की तद्रूपता
- **कैवल्यम्**—नपुं०—-—केवल - ष्यञ्—मुक्ति, मोक्ष
- **कैशिक**—वि०—-—केश - ठक्—बालों के समान, बालों की भाँति सुन्दर
- **कैशिकः**—पुं०—-—केश - ठक्—श्रृङ्गाररस, विलासिता
- **कैशिकम्**—नपुं०—-—केश - ठक्—बालों का गुच्छा
- **कैशिकी**—स्त्री०—-—केश - ठक्+ङीप्—नाट्य शैली का एकप्रकार
- **कैशोरम्**—नपुं०—-—किशोर - अञ्—किशोरावस्था, बाल्यकाल, कौमार आयु
- **कैश्यम्**—नपुं०—-—केश - ष्यञ्—सारे बाल, बालों का गुच्छा
- **कोकः**—पुं०—-—कुक् आदाने अच् - तारा०—भेड़िया
- **कोकः**—पुं०—-—कुक् आदाने अच् - तारा०—गुलाबी रंग का हंस
- **कोकः**—पुं०—-—कुक् आदाने अच् - तारा०—कोयल
- **कोकः**—पुं०—-—कुक् आदाने अच् - तारा०—मेंढक
- **कोकः**—पुं०—-—कुक् आदाने अच् - तारा०—विष्णु का नाम
- **कोकदेवः**—पुं०—कोक-देवः—-—कबूतर
- **कोकदेवः**—पुं०—कोक-देवः—-—सूर्य का विशेषण
- **कोकनदम्**—पुं०—-—कोकान् चक्रवाकान् नदति नादयति नद् - अच्—लाल कमल
- **कोकाहः**—पुं०—-—कोक - आ - हन् - ड—सफेद घोड़ा
- **कोकिलः**—पुं०—-—कुक् - इलच्—कोयल
- **कोकिलः**—पुं०—-—कुक् - इलच्—जलती हुई लकड़ी
- **कोकिलावासः**—पुं०—कोकिल-आवासः—-—आम का वृक्ष
- **कोकिलोत्सवः**—पुं०—कोकिल-उत्सवः—-—आम का वृक्ष
- **कोङ्कः**—पुं०,ब० व०—-—-—एक देश का नाम, सह्याद्रि और समुद्र का मध्यवर्ती भूखण्ड
- **कोङ्कणः**—पुं०,ब० व०—-—-—एक देश का नाम, सह्याद्रि और समुद्र का मध्यवर्ती भूखण्ड
- **कोङ्कणा**—स्त्री०—-—कोङ्कण - टाप्—रेणुका, जमदग्नि की पत्नी

- **कोङ्कणासुतः**—पुं°—कोङ्कणा-सुतः—-—परशुराम का विशेषण
- **कोजागरः**—पुं°—-—को जागर्ति इति लक्ष्मया उक्तिरत्र काले पृषो° तारा° —आश्विन मास की पूर्णिमा की रात में मनाया जाने वाला आमोदपूर्ण उत्सव
- **कोटः**—पुं°—-—कुट् - घञ्—किला
- **कोटः**—पुं°—-—कुट् - घञ्—झोपड़ी, छप्पर
- **कोटः**—पुं°—-—कुट् - घञ्—कुटिलता
- **कोटः**—पुं°—-—कुट् - घञ्—दाढ़ी
- **कोटरः**—पुं°—-—कोटं कौटिल्यं राति रा - क ता°—वृक्ष की खोखर
- **कोटरी**—स्त्री°—-—कोटं कौटिल्यं राति रा - क ता°—नंगी स्त्री
- **कोटरी**—स्त्री°—-—कोट - री - क्विथ्—दुर्गा देवी का विशेषण
- **कोटवी**—स्त्री°—-—कोट - वी - क्विथ्—नंगी स्त्री
- **कोटवी**—स्त्री°—-—कोट - वी - क्विथ्—दुर्गा देवी का विशेषण
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्—धनुष का मुड़ा हुआ सिरा
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्—चरमसीमा का किनारा, नोक या धार
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्—उच्चतम बिन्दु, आधिक्य पराकोटि, पराकाष्ठा, परमोत्कर्ष
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्—चन्द्रमा की कलाएँ
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्—एक करोड़ की संख्या
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्—९० कोटि के चाप की सम्पूरक रेखा
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्—समकोण त्रिभुज की एक भुजा
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्—श्रेणी, विभाग, राज्य
- **कोटिः**—स्त्री°—-—कुट् - इञ्— विवादास्पद प्रश्न का एक पहलू, विकल्प
- **कोटी**—स्त्री°—-—कोटि - ङीष्—धनुष का मुड़ा हुआ सिरा
- **कोटी**—स्त्री°—-—कोटि - ङीष्—चरमसीमा का किनारा, नोक या धार
- **कोटी**—स्त्री°—-—कोटि - ङीष्—उच्चतम बिन्दु, आधिक्य पराकोटि, पराकाष्ठा, परमोत्कर्ष
- **कोटी**—स्त्री°—-—कोटि - ङीष्—चन्द्रमा की कलाएँ
- **कोटी**—स्त्री°—-—कोटि - ङीष्—एक करोड़ की संख्या
- **कोटी**—स्त्री°—-—कोटि - ङीष्—९० कोटि के चाप की सम्पूरक रेखा
- **कोटी**—स्त्री°—-—कोटि - ङीष्—समकोण त्रिभुज की एक भुजा

- **कोटी**—स्त्री°——कोटि - ङीष्—श्रेणी, विभाग, राज्य
- **कोटी**—स्त्री°——कोटि - ङीष्— विवादास्पद प्रश्न का एक पहलू, विकल्प
- **कोटीश्वरः**—पुं°—कोटि-ईश्वरः——करोड़पति
- **कोटिजित्**—पुं°—कोटि-जित्——कालिदास का विशेषण
- **कोटिज्या**—स्त्री°—कोटि-ज्या——समकोण त्रिभुज में एक कोण की कोज्या
- **कोटिद्वयम्**—नपुं°—कोटि-द्वयम्——दो विकल्प
- **कोटिपात्रम्**—नपुं°—कोटि-पात्रम्——पतवार
- **कोटिपालः**—पुं°—कोटि-पालः——दुर्ग रक्षक
- **कोटिवेधिन्**—वि°—कोटि-वेधिन्——नियत बिन्दू पर प्रहार करने वाला
- **कोटिवेधिन्**—वि°—कोटि-वेधिन्——अत्यन्त कठिन कार्यों को सम्पन्न करने वाला
- **कोटिक**—वि°——कोटि - कै - क—किसी वस्तु का उच्चतम सिरा
- **कोटिरः**—पुं°——कोटिं रातिं रा - क ता°—सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बनी सींग के रुप की बालों की चोटी
- **कोटिरः**—पुं°——कोटिं रातिं रा - क ता°—नेवला
- **कोटिरः**—पुं°——कोटिं रातिं रा - क ता°—इन्द्र का विशेषण
- **कोटिशः**—पुं°——कोटि - शो - क—मैड़ा, पटेला
- **कोटीशः**—पुं°——कोटी - शो - क—मैड़ा, पटेला
- **कोटिशः** —अव्य° ——कोटि - शस्—करोड़ों, असंख्य
- **कोटीरः**—पुं°——कोटिमीरयति ईर् - अण्—मुकुट, ताज
- **कोटीरः**—पुं°——कोटिमीरयति ईर् - अण्—शिखा
- **कोटीरः**—पुं°——कोटिमीरयति ईर् - अण्—सन्यासियों द्वारा मस्तक पर बाँधी गई बालों की चोटी जो सींग जैसी दिखाई देती है, जटा
- **कोट्टः**—पुं°——कुट्ट - घञ्—दुर्ग, किला
- **कोट्टवी**—स्त्री°——कोट्टं वाति वा - क, गौरा° ङीष् तारा° —नग्न स्त्री जिसके बाल बिखरे हुए हों
- **कोट्टवी**—स्त्री°——कोट्टं वाति वा - क, गौरा° ङीष् तारा° —दुर्गा देवी
- **कोट्टवी**—स्त्री°——कोट्टं वाति वा - क, गौरा° ङीष् तारा° —बाण की माता का नाम
- **कोट्टारः**—पुं°——कुट्ट - आरक् पृषो°—किले बन्दी वाला नगर, दुर्ग
- **कोट्टारः**—पुं°——कुट्ट - आरक् पृषो°—तालाब की सीढ़ियाँ
- **कोट्टारः**—पुं°——कुट्ट - आरक् पृषो°—कुआँ, तालाब

- **कोट्टारः**—पुं°—-—कुट्ट - आरक् पृषो°—लम्पट, दुराचारी
- **कोणः**—पुं°—-—कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा°—किनारा, कोना
- **कोणः**—पुं°—-—कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा°—वृत्त का अन्तर्वर्ती बिन्दु
- **कोणः**—पुं°—-—कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा°—वीणा की कमानी, सारंगी बजाने का गज
- **कोणः**—पुं°—-—कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा°—तलवार या शस्त्र की तेज धार
- **कोणः**—पुं°—-—कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा°—लकड़ी, लाठी, गदा
- **कोणः**—पुं°—-—कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा°—ढोल बजाने की लकड़ी
- **कोणः**—पुं°—-—कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा°—मंगल ग्रह
- **कोणः**—पुं°—-—कुण् करणे घञ्, कर्तरि अच् वा तारा°—शनिग्रह
- **कोणाघातः**—पुं°—कोण-आघातः—-—ढोल, ढपड़े बजाना
- **कोणकुणः**—पुं°—कोण-कुणः—-—खटमल
- **कोणपः**—पुं°—-—-—पिशाच, राक्षस
- **कोणाकोणि**—अव्य° —-—-—एक कोण से दूसरे कोण तक, एक किनारे से दूसरे किनारे तक, तिरछे, आड़े
- **कोदण्डः**—पुं°—-—कु - विच् = कोः शब्दायमानो दण्डो यस्य ब° स°—धनुष
- **कोदण्डन्**—पुं°—-—कु - विच् = कोः शब्दायमानो दण्डो यस्य ब° स°—धनुष
- **कोदण्डः**—पुं°—-—कु - विच् = कोः शब्दायमानो दण्डो यस्य ब° स°—भौं
- **कोद्रवः**—पुं°—-—कु - विच् = को, द्रु - अक् = द्रव, कर्म° स°—कोदो का अनाज जिसे गरीब लोग खाते है
- **कोपः**—पुं°—-—कुप् - घञ्—क्रोध, गुस्सा, रोष, क्रोध मत करो
- **कोपः**—पुं°—-—कुप् - घञ्—शारीरिक त्रिदोष विकार
- **कोपाकुल**—वि°—कोप-आकुल—-—क्रुद्ध, प्रकुपित
- **कोपाविष्ट**—वि°—कोप-आविष्ट—-—क्रुद्ध, प्रकुपित
- **कोपक्रमः**—पुं°—कोप-क्रमः—-—क्रोधी या रुष्ट पुरुष
- **कोपक्रमः**—पुं°—कोप-क्रमः—-—क्रोध का मार्ग
- **कोपपदम्**—नपुं°—कोप-पदम्—-—क्रोध का कारण
- **कोपपदम्**—नपुं°—कोप-पदम्—-—बनावटी क्रोध
- **कोपवशः**—पुं°—कोप-वशः—-—क्रोध की वश्यता
- **कोपवेगः**—पुं°—कोप-वेगः—-—क्रोध की प्रचण्डता, तीक्ष्णता

- **कोपन**—वि०—-—कुप् - ल्युट्—रोषशील, चिड़चिड़ा, क्रोधी
- **कोपन**—वि०—-—कुप् - ल्युट्—क्रोध पैदा करने वाला
- **कोपन**—वि०—-—कुप् - ल्युट्—प्रकोपी, श्रीर के त्रिदोषों में प्रबल विकार उत्पन्न करने वाला
- **कोपना**—स्त्री०—-—कुप् - ल्युट्+टाप्—रोषशील या क्रोधी स्त्री
- **कोपिन्**—वि०—-—कोप - इनि—क्रोधी, चिड़चिड़ा
- **कोपिन्**—वि०—-—कोप - इनि—क्रोध उत्पन्न करने वाला
- **कोपिन्**—वि०—-—कोप - इनि—चिड़चिड़ा, शरीर में त्रिदोष विकारों को उत्पन्न करने वाला
- **कोमल**—वि०—-—कु - कलच्, मुट् च नि० गुणः—सुकुमार, मृदु, नाजुक
- **कोमल**—वि०—-—कु - कलच्, मुट् च नि० गुणः—मृदु, मन्द
- **कोमल**—वि०—-—कु - कलच्, मुट् च नि० गुणः—रुचिकर, सुहावना, मधुर
- **कोमल**—वि०—-—कु - कलच्, मुट् च नि० गुणः—मनोहर, सुन्दर
- **कोमलकम्**—नपुं०—-—कोमल - कन्—कमलडण्डी के रेशे
- **कोयष्टिः**—पुं०—-—कं जलं यष्टिरिवास्य ब० स० पृषो० अकारस्य उकारः - कोयष्टि - कन्—टिटहिरी, कुररी
- **कोयष्टिकः**—पुं०—-—कं जलं यष्टिरिवास्य ब० स० पृषो० अकारस्य उकारः - कोयष्टि - कन्—टिटहिरी, कुररी
- **कोरक**—वि०—-— कुर् - वुन्—कली, अनखिला फूल
- **कोरक**—वि०—-— कुर् - वुन्—कली के समान कोई वस्तु
- **कोरक**—वि०—-— कुर् - वुन्—कमलडण्डी के रेशे
- **कोरक**—वि०—-— कुर् - वुन्—एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य
- **कोरकम्**—नपुं०—-— कुर् - वुन्—कली, अनखिला फूल
- **कोरकम्**—नपुं०—-— कुर् - वुन्—कली के समान कोई वस्तु
- **कोरकम्**—नपुं०—-— कुर् - वुन्—कमलडण्डी के रेशे
- **कोरकम्**—नपुं०—-— कुर् - वुन्—एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य
- **कोरदूषः**—पुं०—-—-—कोदो का अनाज जिसे गरीब लोग खाते है
- **कोरित**—वि०—-—कोर - इतच्—कलीयुक्त, अङ्कुरित
- **कोरित**—वि०—-—कोर - इतच्—पिसा हुआ, चूरा किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ
- **कोलः**—पुं०—-—कुल् - अच्—सुअर, वराह
- **कोलः**—पुं०—-—कुल् - अच्—लट्ठों का बना बेड़ा, नाव

- **कोलः**—पुं°—-—कुल् - अच्—स्त्री की छाती
- **कोलः**—पुं°—-—कुल् - अच्—नितम्ब प्रदेश, कूल्हा, गोद
- **कोलः**—पुं°—-—कुल् - अच्—आलिङ्गन
- **कोलः**—पुं°—-—कुल् - अच्—शनिग्रह
- **कोलः**—पुं°—-—कुल् - अच्—बहिष्कृत, पतित जाति का व्यक्ति
- **कोलः**—पुं°—-—कुल् - अच्—जंगली
- **कोलम्**—नपुं°—-—कुल् - अच्—एक तोले का भार
- **कोलम्**—नपुं°—-—कुल् - अच्—काली मिर्च
- **कोलम्**—नपुं°—-—कुल् - अच्—एक प्रकार का बेर
- **कोलाञ्चः**—पुं°—कोलम्-अञ्चः—-—कलिंग देश का नाम
- **कोलपुच्छः**—पुं°—कोलम्-पुच्छः—-—बगला
- **कोलम्बकः**—पुं°—-—-—वीणा का ढाँचा
- **कोला**—स्त्री°—-—कुल् - अम्बच् - कन्—बेर का पेड़
- **कोला**—स्त्री°—-—कुल् - अम्बच् - कन्—बदरिका
- **कोला**—स्त्री°—-—कुल् - ण - टाप्—बेर का पेड़
- **कोला**—स्त्री°—-—कुल् - ण - टाप्—बदरिका
- **कोलीः**—स्त्री°—-—कुल् - इन्—बेर का पेड़
- **कोलीः**—स्त्री°—-—कुल् - इन्—बदरिका
- **कोलाहलः**—पुं°—-—कुल - अच् - ङीष् वा—एक साथ बहुत से लोगों के बोलने का शब्द, हंगामा
- **कोलाहलम्**—नपुं°—-—कोल - आ - हल् - अच्—एक साथ बहुत से लोगों के बोलने का शब्द, हंगामा
- **कोविद्**—वि°—-—कोल - आ - हल् - अच्—अनुभवी, विद्वान, कुशल, बुद्धिमान, प्रवीण
- **कोविदारः**—पुं°—-—कु - विच्, तं वेत्ति - विद् - क—एक वृक्ष का नाम, कचनार
- **कोविदारम्**—नपुं°—-—कु - वि - दृ - अण्—एक वृक्ष का नाम, कचनार
- **कोशः**—पुं°—-—कु - वि - दृ - अण्—तरल पदार्थों को रखने का बर्तन, बाल्टी
- **कोशः**—पुं°—-—कुश् - घञ्, अच् वा—डोल, कटोरा
- **कोशः**—पुं°—-—कुश् - घञ्, अच् वा—पात्र
- **कोशः**—पुं°—-—कुश् - घञ्, अच् वा—संदूक, डोली, दराज, ट्रंक

- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—म्यान, आवरण
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—पेटी, ढकना, ढक्कन
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—भण्डार, ढेर
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—भण्डारगृह
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—खजाना, रुपया पैसा रखने का स्थान
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—निधि, रुपया, दौलत
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—सोना, चाँदी
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह, शब्दावली
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—अनखिला फूल, कली
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—किसी फल की गिरी
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—फली
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—जायफल, कठोरत्वचा
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—रेशम का कोया
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—झिल्ली, गर्भाशय
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—अण्डा
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—अण्डकोश, फोते
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—शिश्न
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—गेंद, गोला
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—पाँच कोष जो सब मिलकर शरीर रचना करते हैं - जिसमें आत्मा निवास करती है, अन्नमय, प्राणमय आदि
- **कोशः**—पुं॰———कुश् - घञ्, अच् वा—एक प्रकार की अपराधियों की अग्निपरीक्षा
- **कोषः**—पुं॰———कुष् - घञ्, अच् वा—तरल पदार्थों को रखने का बर्तन, बाल्टी
- **कोषः**—पुं॰———कुष् - घञ्, अच् वा—डोल, कटोरा
- **कोषः**—पुं॰———कुष् - घञ्, अच् वा—पात्र
- **कोषः**—पुं॰———कुष् - घञ्, अच् वा—संदूक, डोली, दराज, ट्रंक
- **कोषः**—पुं॰———कुष् - घञ्, अच् वा—म्यान, आवरण
- **कोषः**—पुं॰———कुष् - घञ्, अच् वा—पेटी, ढकना, ढक्कन
- **कोषः**—पुं॰———कुष् - घञ्, अच् वा—भण्डार, ढेर

- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—भण्डारगृह
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—खजाना, रुपया पैसा रखने का स्थान
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—निधि, रुपया, दौलत
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—सोना, चाँदी
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह, शब्दावली
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—अनखिला फूल, कली
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—किसी फल की गिरी
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—फली
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—जायफल, कठोरत्वचा
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—रेशम का कोया
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—झिल्ली, गर्भाशय
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—अण्डा
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—अण्डकोश, फोते
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—शिश्न
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—गेंद, गोला
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—पाँच कोष जो सब मिलकर शरीर रचना करते हैं - जिसमें आत्मा निवास करती है, अन्नमय, प्राणमय आदि
- **कोषः**—पुं°—–—कुष् - घञ्, अच् वा—एक प्रकार की अपराधियों की अग्निपरीक्षा
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—तरल पदार्थों को रखने का बर्तन, बाल्टी
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—डोल, कटोरा
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—पात्र
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—संदूक, डोली, दराज, ट्रंक
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—म्यान, आवरण
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—पेटी, ढकना, ढक्कन
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—भण्डार, ढेर
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—भण्डारगृह
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—खजाना, रुपया पैसा रखने का स्थान
- **कोशम्**—नपुं°—–—कुश् - घञ्, अच् वा—निधि, रुपया, दौलत

- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—सोना, चाँदी
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह, शब्दावली
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—अनखिला फूल, कली
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—किसी फल की गिरी
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—फली
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—जायफल, कठोरत्वचा
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—रेशम का कोया
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—झिल्ली, गर्भाशय
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—अण्डा
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—अण्डकोश, फोते
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—शिश्न
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—गेंद, गोला
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—पाँच कोष जो सब मिलकर शरीर रचना करते हैं - जिसमें आत्मा निवास करती है, अन्नमय, प्राणमय आदि
- **कोशम्**—नपुं॰—-—कुश् - घञ्, अच् वा—एक प्रकार की अपराधियों की अग्निपरीक्षा
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—तरल पदार्थों को रखने का बर्तन, बाल्टी
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—डोल, कटोरा
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—पात्र
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—संदूक, डोली, दराज, ट्रंक
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—म्यान, आवरण
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—पेटी, ढकना, ढक्कन
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—भण्डार, ढेर
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—भण्डारगृह
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—खजाना, रुपया पैसा रखने का स्थान
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—निधि, रुपया, दौलत
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—सोना, चाँदी
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—शब्दकोश, शब्दार्थ संग्रह, शब्दावली
- **कोषम्**—नपुं॰—-—कुष् - घञ्, अच् वा—अनखिला फूल, कली

- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—किसी फल की गिरी
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—फली
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—जायफल, कठोरत्वचा
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—रेशम का कोया
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—झिल्ली, गर्भाशय
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—अण्डा
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—अण्डकोश, फोते
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—शिश्न
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—गेंद, गोला
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—पाँच कोष जो सब मिलकर शरीर रचना करते हैं - जिसमें आत्मा निवास करती है, अन्नमय, प्राणमय आदि
- **कोषम्**—नपुं°—-—कुष् - घञ्, अच् वा—एक प्रकार की अपराधियों की अग्निपरीक्षा
- **कोशाधिपतिः**—पुं°—कोश-अधिपतिः—-—खजानची, वेतनाध्यक्ष
- **कोशाधिपतिः**—पुं°—कोश-अधिपतिः—-—कुबेर
- **कोशागारः**—पुं°—कोश-अगारः—-—खजाना, भण्डारगृह
- **कोशकारः**—पुं°—कोश-कारः—-—म्यान बनाने वाला
- **कोशकारः**—पुं°—कोश-कारः—-—शब्दकोश का निर्माता
- **कोशकारः**—पुं°—कोश-कारः—-—कोये के रुप में रेशम का कीड़ा
- **कोशकारः**—पुं°—कोश-कारः—-—कोशशायी
- **कोशकारकः**—पुं°—कोश-कारकः—-—रेशम का कीड़ा
- **कोशकृत्**—पुं°—कोश-कृत्—-—एक प्रकार का ईख
- **कोशगृहम्**—नपुं°—कोश-गृहम्—-—खजाना, भाण्डागार
- **कोशचञ्चुः**—पुं°—कोश-चञ्चुः—-—सारस
- **कोशनायकः**—पुं°—कोश-नायकः—-—खजांची, कोशाध्यक्ष
- **कोशपालः**—पुं°—कोश-पालः—-—खजांची, कोशाध्यक्ष
- **कोशपेटकः**—पुं°—कोश-पेटकः—-—धन रखने का सन्दूक, तिजौरी
- **कोशपेटकम्**—नपुं°—कोश-पेटकम्—-—धन रखने का सन्दूक, तिजौरी
- **कोशवासिन्**—पुं°—कोश-वासिन्—-—सीपी में रहने वाला कीड़ा, कोशशायी

- **कोशवृद्धिः**—पुं°—कोश-वृद्धिः—-—धन की वृद्धि
- **कोशवृद्धिः**—पुं°—कोश-वृद्धिः—-—फोतों का बढ़ जाना
- **कोशशायिका**—स्त्री°—कोश-शायिका—-—म्यान में रखा हुआ चाकू, बन्द किया हुआ चाकू
- **कोशस्थ**—वि°—कोश-स्थ—-—पेटी में बन्द, म्यान में बन्द
- **कोशस्थः**—पुं°—कोश-स्थः—-—कोशकीट, कोशशायी
- **कोशहीन**—वि°—कोश-हीन—-—धनहीन, निर्धन
- **कोशलिकम्**—नपुं°—-—कुशल - ठन्—रिश्वत, घूस
- **कोशातकिन्**—पुं°—-—कोश - अत् - क्वुन् = कोशातक - इनि—वाणिज्य, व्यापार
- **कोशातकिन्**—पुं°—-—कोश - अत् - क्वुन् = कोशातक - इनि—व्यापारी, सौदागर
- **कोशातकिन्**—पुं°—-—कोश - अत् - क्वुन् = कोशातक - इनि—बड़वानल
- **कोशिन्**—वि°—-—कोश - इनि—आम का वृक्ष
- **कोषिन्**—वि°—-—कोष - इनि—आम का वृक्ष
- **कोष्ठः**—पुं°—-—कुष् - थन्—हृदय, फेफड़ा आदि शरीर के भीतरी अंग या आशय
- **कोष्ठः**—पुं°—-—कुष् - थन्—पेट, उदर
- **कोष्ठः**—पुं°—-—कुष् - थन्—आभ्यन्तर कक्ष
- **कोष्ठः**—पुं°—-—कुष् - थन्—अन्नभण्डार, अन्न का कोठा
- **कोष्ठम्**—नपुं°—-—कुष् - थन्—चहारदीवारी
- **कोष्ठम्**—नपुं°—-—कुष् - थन्—किसी फल का कड़ा छिलका
- **कोष्ठागारम्**—नपुं°—कोष्ठ-अगारम्—-—भण्डार, भण्डारघर
- **कोष्ठाग्निः**—पुं°—कोष्ठ-अग्निः—-—पाचनशक्ति, आमाशय का रस
- **कोष्ठपालः**—पुं°—कोष्ठ-पालः—-—कोषाध्यक्ष, भण्डारी
- **कोष्ठपालः**—पुं°—कोष्ठ-पालः—-—चौकीदार, पहरेदार
- **कोष्ठपालः**—पुं°—कोष्ठ-पालः—-—सिपाही
- **कोष्ठशुद्धिः**—पुं°—कोष्ठ-शुद्धिः—-—मलोत्सर्ग
- **कोष्ठकः**—पुं°—-—कोष्ठ - कन्—अन्नभण्डार
- **कोष्ठकः**—पुं°—-—कोष्ठ - कन्—चहारदीवारी
- **कोष्ठकम्**—नपुं°—-—कोष्ठ - कन्—ईंट चूने से बनाया गया पशुओं के पानी पीने का स्थान

- **कोष्ण**—वि°—-—ईष्दुष्णः - कोः कादेशः—थोड़ा गरम, गुनगुना
- **कोष्णम्**—नपुं°—-—ईष्दुष्णः - कोः कादेशः—गरमी
- **कोशलः**—पुं°—-—-—एक देश और उसके निवासियों का नाम
- **कोसलः**—पुं°—-—-—एक देश और उसके निवासियों का नाम
- **कोहलः**—पुं°—-—कौ हलति स्पर्धते - अच् पृषो° तारा°—एक प्रकार का वाद्ययन्त्र
- **कोहलः**—पुं°—-—कौ हलति स्पर्धते - अच् पृषो° तारा°—एक प्रकार की मदिरा
- **कौक्कटिकः**—पुं°—-—कुक्कुट - ठक्—मुर्गे पालने वाला, या मुर्गे का व्यवसाय करने वाला
- **कौक्कटिकः**—पुं°—-—कुक्कुट - ठक्—वह साधु जो चलते समय अपना ध्यान नीचे जमीन पर रखता है जिससे कि कोई कीड़ा आदि पैरों के नीचे न दब जाय
- **कौक्कटिकः**—पुं°—-—कुक्कुट - ठक्—दम्भी
- **कौक्षः**—वि°—-—कुक्षि - अण्—कोख से बन्धा हुआ या कोख पर होने वाला
- **कौक्षः**—वि°—-—कुक्षि - अण्—पेट से सम्बन्ध होने वाला
- **कौक्षेय**—वि°—-—कुक्षि - ढञ्—पेट में होने वाला
- **कौक्षेय**—वि°—-—कुक्षि - ढञ्—म्यान में स्थित
- **कौक्षेयकः**—पुं°—-—कुक्षौ बद्धोऽसिः ढकञ्—तलवार, खड्ग
- **कौङ्कः**—पुं°—-—कुङ्क - अण्—एक देश तथा उसके निवासी शासकों का नाम
- **कौङ्कणः**—पुं°—-—कोङ्कण - अण्—एक देश तथा उसके निवासी शासकों का नाम
- **कौट**—वि°—-—कूट + अञ्—अपने निजी घर में रहने वाला, स्वतंत्र, मुक्त
- **कौट**—वि°—-—कूट + अञ्—पालतु, घरेलू, घर में पला हुआ
- **कौट**—वि°—-—कूट + अञ्—जालसाज, बेईमान
- **कौट**—वि°—-—कूट + अञ्—जाल में फँसा हुआ
- **कौटः**—पुं°—-—कूट + अञ्—जालसाजी, बेईमानी
- **कौटः**—पुं°—-—कूट + अञ्—झूठी गवाही देने वाला
- **कौटजः**—पुं°—कौट-जः—-—कुटज वृक्ष
- **कौटतक्षः**—पुं°—कौट-तक्षः—-—स्वतंत्र बढ़ई जो अपनी इच्छानुसार अपना कार्य करता है, गाँव का कार्य नहीं
- **कौटसाक्षिन्**—पुं°—कौट-साक्षिन्—-—झूठा गवाह
- **कौटसाक्ष्यम्**—नपुं°—कौट-साक्ष्यम्—-—झूठी गवाही

- **कौटकिकः**—पुं॰—-—कूट + कन्, कूटक + ठञ्, कूट + ठक्—बहेलिया, जिसका व्यवसाय पक्षियों को पकड़ पिंजरे में बन्द कर बेचना है
- **कौटकिकः**—पुं॰—-—कूट + कन्, कूटक + ठञ्, कूट + ठक्—पक्षियों के मांस का विक्रेता, कसाई, शिकारचोर
- **कौटिकः**—पुं॰—-—कूट + कन्, कूटक + ठञ्, कूट + ठक्—बहेलिया, जिसका व्यवसाय पक्षियों को पकड़ पिंजरे में बन्द कर बेचना है
- **कौटिकः**—पुं॰—-—कूट + कन्, कूटक + ठञ्, कूट + ठक्—पक्षियों के मांस का विक्रेता, कसाई, शिकारचोर
- **कौटलिकः**—पुं॰—-—कुटिलिकया हरति मृगान् अङ्गारान् वा - कुटिलिका + अण्—शिकारी, लुहार
- **कौटिल्यम्**—नपुं॰—-—कुटिल + ष्यञ्—कुटिलपना
- **कौटिल्यम्**—नपुं॰—-—कुटिल + ष्यञ्—दुष्टता
- **कौटिल्यम्**—नपुं॰—-—कुटिल + ष्यञ्—बेईमानी, जालसाजी
- **कौटिल्यः**—पुं॰—-—कुटिल + ष्यञ्—नीतिशास्त्र का प्रख्यात प्रणेता चाण्क्य
- **कौटुम्ब**—वि॰—-—कुटुम्बं तद्भरणं भोजनमस्य - कुटुम्ब + अण्—किसी परिवार या गृहस्थ के लिए आवश्यक
- **कौटुम्बम्**—नपुं॰—-—कुटुम्बं तद्भरणं भोजनमस्य - कुटुम्ब + अण्—पारिवारिक सम्बन्ध
- **कौटुम्बिक**—वि॰—-—कुटुम्बे तद्भरणे प्रसृतः - कुटुम्ब + ठक्—परिवार को बनाने वाला
- **कौटुम्बिकः**—पुं॰—-—कुटुम्बे तद्भरणे प्रसृतः - कुटुम्ब + ठक्—किसी परिवार या पिता का स्वामी
- **कौणपः**—पुं॰—-—कुणप + अण्—पिशाच, राक्षस
- **कौणपदन्तः**—पुं॰—कौणप-दन्तः—-—भीष्म का विशेषण
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—इच्छा, कुतूहल, कामना
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—उत्सुकता, आवेग, आतुरता
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—आश्चर्यजनक वस्तु
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—वैवाहिक कंगना बांधने की प्रथा
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—पर्व, उत्सव
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—विशेषकर विवाह आदि शुभ उत्सव
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—खुशी, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—खेल, मनोविनोद
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—गीत, नृत्य, तमाशा
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—हँसी, मजाक
- **कौतुकम्**—नपुं॰—-—कुतुक + अण्—बधाई, अभिवादन
- **कौतुकागारः**—पुं॰—कौतुकम्-आगारः—-—आमोद-भवन

- **कौतुकागारम्**—नपुं°—कौतुकम्-आगारम्—-—आमोद-भवन
- **कौतुकगृहम्**—नपुं°—कौतुकम्-गृहम्—-—आमोद-भवन
- **कौतुकक्रिया**—स्त्री°—कौतुकम्-क्रिया—-—महान् उत्सव
- **कौतुकक्रिया**—स्त्री°—कौतुकम्-क्रिया—-—विशेषता विवाह-संस्कार
- **कौतुकमङ्गलम्**—नपुं°—कौतुकम्-मङ्गलम्—-—महान् उत्सव
- **कौतुकमङ्गलम्**—नपुं°—कौतुकम्-मङ्गलम्—-—विशेषता विवाह-संस्कार
- **कौतुकतोरणः**—पुं°—कौतुकम्-तोरणः—-—उत्सव के अवसरों पर बनायें गए मंगलसूचक विजय द्वार
- **कौतुहलम्**—नपुं°—-—कुतुहल + अण्, ष्यञ् वा—इच्छा, जिज्ञासा, रूचि
- **कौतुहलम्**—नपुं°—-—कुतुहल + अण्, ष्यञ् वा—उत्सुकता, उत्कण्ठा
- **कौतुहलम्**—नपुं°—-—कुतुहल + अण्, ष्यञ् वा—कुतूहलवर्धक, आश्चर्यजनक
- **कौन्तिकः**—पुं°—-—कुन्तः प्रहरणमस्य - ठञ्—भाला चलाने वाला, नेजाबरदार
- **कौन्तेयः**—पुं°—-—कुन्त्याः अपत्यं ढक्—कुन्ती क पुत्र, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का विशेषण
- **कौप**—वि°—-—कूप + अण्—कुँए से सम्बन्ध रखने वाला या कुँए से आता हुआ
- **कौपीनम्**—नपुं°—-—कूप + खञ्—योनि, उपस्थ
- **कौपीनम्**—नपुं°—-—कूप + खञ्—गुप्ताङ्ग, गुह्येन्द्रिय
- **कौपीनम्**—नपुं°—-—कूप + खञ्—लंगोटी
- **कौपीनम्**—नपुं°—-—कूप + खञ्—चिथड़ा
- **कौपीनम्**—नपुं°—-—कूप + खञ्—पाप, अनुचित कर्म
- **कौब्ज्यम्**—नपुं°—-—कुब्ज + ष्यञ्—टेढ़ापन, कुटिलता
- **कौब्ज्यम्**—नपुं°—-—कुब्ज + ष्यञ्—कुबड़ापन
- **कौमार**—वि°—-—कुमार + अण्—तरूण, युवा, कन्या, कुँवारी
- **कौमार**—वि°—-—कुमार + अण्—मृदु, कोमल
- **कौमारम्**—नपुं°—-—कुमार + अण्—बचपन, कुँवारीपना, कुमारीपन
- **कौमारभृत्यम्**—नपुं°—कौमार-भृत्यम्—-—बच्चों का पालनपोषण व चिकित्सा
- **कौमारहर**—वि°—कौमार-हर—-—विवाह करने वाला, कन्या को पत्नी रूप में ग्रहण करने वाला
- **कौमारकम्**—नपुं°—-—कौमार + कन—बचपन, तारूण्य, किशोरावस्था
- **कौमारिकः**—पुं°—-—कुमारी + ठक्—वह पिता जिसकी सन्तान लड़कियाँ ही हों

- **कौमारिकेयः**—पुं°—-—कुमारिका + ढक्—अविवाहित स्त्री का पुत्र
- **कौमुदः**—पुं°—-—कुमुद + अण्—कार्तिक का महीना
- **कौमुदी**—स्त्री°—-—कौमुद + ङीप्—चाँदनी, ज्योत्सना
- **कौमुदी**—स्त्री°—-—कौमुद + ङीप्—चाँदनी का काम देने वाली कोई चीज
- **कौमुदी**—स्त्री°—-—कौमुद + ङीप्—कार्तिक मास की पूर्णिमा
- **कौमुदी**—स्त्री°—-—कौमुद + ङीप्—अश्विन मास की पुर्णीमा
- **कौमुदी**—स्त्री°—-—कौमुद + ङीप्—उत्सव
- **कौमुदी**—स्त्री°—-—कौमुद + ङीप्—विशेषतः वह उत्सव जब घरों में, मन्दिरों में सर्वत्र दीपावली होती है
- **कौमुदी**—स्त्री°—-—कौमुद + ङीप्—व्याख्या, स्पष्टीकरण, प्रस्तुत विषय पर विकास डालने वाली
- **कौमुदीपतिः**—पुं°—कौमुदी-पतिः—-—चन्द्रमा
- **कौमुदीवृक्षः**—पुं°—कौमुदी-वृक्षः—-—दीवट
- **कौमोदकी**—स्त्री°—-—कोः पृथिव्याः मोदकः = कुमोदक + अण् + ङीप् कुं पृथिवी मोदयति = कुमोद + अण् + ङीप्—विष्णु की गदा
- **कौमोदी**—स्त्री°—-—कोः पृथिव्याः मोदकः = कुमोदक + अण् + ङीप् कुं पृथिवी मोदयति = कुमोद + अण् + ङीप्—विष्णु की गदा
- **कौरव**—वि°—-—कुरु + अण्—कुरूओं से सम्बन्ध रखने वाला
- **कौरवः**—पुं°—-—कुरु + अण्—कुरू की सन्तान
- **कौरवः**—पुं°—-—कुरु + अण्—कुरूओं का राजा
- **कौरव्यः**—पुं°—-—कुरु + ण्य—कुरू की सन्तान
- **कौरव्यः**—पुं°—-—कुरु + ण्य—कुरूओं का शासक
- **कौर्प्यः**—पुं°—-—-—वृश्चिक राशि
- **कौल**—वि°—-—कुल + अण्—परिवार से सम्बन्ध रखने वाली, पैतृक, आनुवंशिक
- **कौल**—वि°—-—कुल + अण्—अच्छे घराने का, सुजात
- **कौलः**—पुं°—-—कुल + अण्—वाममार्गी सिद्धान्तों के अनुसार ‘शक्ति’ का पूजा करने वाला
- **कौलम्**—नपुं°—-—कुल + अण्—वाममार्गी शाक्तों के सिद्धान्त और व्यवहार
- **कौलकेयः**—पुं°—-—कुल + ढक्, कुक्—व्याभिचारिणी स्त्री का पुत्र, हरामी, वर्णसंकर
- **कौलटिनेयः**—पुं°—-—कुलटा + ढक्, इनङादेशः—सती भिखारिणी का पुत्र
- **कौलटिनेयः**—पुं°—-—कुलटा + ढक्, इनङादेशः—वर्णसंकर
- **कौलिक**—वि°—-—-—किसी वंश से समबन्ध रखने वाला

- **कौलिक**—वि°—————कुल में प्रचलित, पैतृक, वंशपरंपरागत
- **कौलिकः**—पुं°—————जुलाहा
- **कौलिकः**—पुं°—————विधर्मी
- **कौलिकः**—पुं°—————वाममार्गी, शाक्त सिद्धान्तों का अनुयायी
- **कौलीन**—वि°———कुल + खञ्—खदानी, कुलीन
- **कौलीनः**—पुं°———कुल + खञ्—भिखारिणी स्त्री का पुत्र
- **कौलीनः**—पुं°———कुल + खञ्—वाममार्गी शाक्त सिद्धान्तों का अनुयायी
- **कौलीनम्**—नपुं°———कुल + खञ्—लोकापवाद, कुत्सा
- **कौलीनम्**—नपुं°———कुल + खञ्—अनुचित कर्म, दुराचरण
- **कौलीनम्**—नपुं°———कुल + खञ्—पशुओं की लड़ाई
- **कौलीनम्**—नपुं°———कुल + खञ्—मुर्गों की लड़ाई
- **कौलीनम्**—नपुं°———कुल + खञ्—संग्राम, युद्ध
- **कौलीनम्**—नपुं°———कुल + खञ्—उच्च कुल में जन्म
- **कौलीनम्**—नपुं°———कुल + खञ्—गुप्तांग, योनि
- **कौलीन्यम्**—नपुं°———कुलीन + ष्यञ्—कुलीनता
- **कौलीन्यम्**—नपुं°———कुलीन + ष्यञ्—वंश की कुत्सा
- **कौलूतः**—पुं°———कुलूत + अण्—कुलूतों का राजा
- **कौलेयकः**—पुं°———कूल + ढकञ्—कुत्ता, शिकारी कुत्ता
- **कौल्य**—वि°———कुल + ष्यञ्—उच्च कुल में उत्पन्न, खानदानी
- **कौबेर**—वि°———कुबेर + अण्—कुबेर से सम्बन्ध रखने वाला, कुबेर के पास से आने वाला
- **कौवेर**—वि°———कुवेर + अण्—कुबेर से सम्बन्ध रखने वाला, कुबेर के पास से आने वाला
- **कौबेरी**—स्त्री°———कुबेर + अण्+ङीप्—उत्तरदिशाः
- **कौवेरी**—स्त्री°———कुबेर + अण्+ङीप्—उत्तरदिशाः
- **कौश**—वि°———कुश् + अण्—रेशमी
- **कौश**—वि°———कुश् + अण्—कुश घास का बना हुआ
- **कौशलम्**—नपुं°———कुशल + अण्, ष्यञ् वा—कुशलक्षेम, प्रसन्नता, समृद्धि
- **कौशलम्**—नपुं°———कुशल + अण्, ष्यञ् वा—कुशलता, दक्षता, चतुराई

- **कौशलिकम्**—नपुं०—-—कुशल + ठक्—घूस, रिश्वत
- **कौशलिका**—स्त्री०—-—कौशलिक + टाप्—उपहार, चढ़ावा
- **कौशलिका**—स्त्री०—-—कौशलिक + टाप्—कुशल प्रश्न पूछना, अभिवादन
- **कौशली**—स्त्री०—-—कुशल + अण् + ङीप्—उपहार, चढ़ावा
- **कौशली**—स्त्री०—-—कुशल + अण् + ङीप्—कुशल प्रश्न पूछना, अभिवादन
- **कौशलेयः**—पुं०—-—कौशल्या + ढक्, यलोपः—राम का विशेषण, कौशल्या का पुत्र
- **कौशल्या**—स्त्री०—-—कोशलदेशे भवा - छय—दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी तथा राम की माता
- **कौशल्यायनिः**—पुं०—-—कौशल्या + फिज्—कौशल्या का पुत्र राम
- **कौशाम्बी**—स्त्री०—-—कुशाम्ब + अण् + ङीप्—गंगा के किनारे स्थित एक प्रचीन नगर
- **कौशिक**—वि०—-—कुशिक + अण्—डब्बे में बन्द, म्यान में रखा हुआ
- **कौशिक**—वि०—-—कुशिक + अण्—रेशमी
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—विश्वामित्र का विशेषण
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—उल्लू
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—कोशकार
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—गूदा
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—गुग्गुल
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—नेवला
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—सपेरा
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—शृङ्गाररस
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—जो गुप्त धन को जानता है
- **कौशिकः**—पुं०—-—कुशिक + अण्—इन्द्र का विशेषण
- **कौशिका**—स्त्री०—-—कुशिक + अण्+टाप्—प्याला, पानपात्र
- **कौशिकी**—स्त्री०—-—कुशिक + अण्+ङीप्—बिहार प्रदेश में बहने वाली एक नदी का नाम
- **कौशिकी**—स्त्री०—-—कुशिक + अण्+ङीप्—दुर्गा देवी का नाम
- **कौशिकी**—स्त्री०—-—कुशिक + अण्+ङीप्—चार प्रकार की नाट्यशैलियों में एक
- **कौशिकारातिः**—पुं०—कौशिक-अरातिः—-—कौवा
- **कौशिकारिः**—पुं०—कौशिक-अरिः—-—कौवा

- **कौशिकफलः**—पुं°—कौशिक-फलः—-—नारियल का वृक्ष
- **कौशिकप्रियः**—पुं°—कौशिक-प्रियः—-—राम का विशेषण
- **कौशेयम्**—नपुं°—-—कोशस्य विकारः - ढञ्—रेशम
- **कौशेयम्**—नपुं°—-—कोशस्य विकारः - ढञ्—रेशमी कपड़ा
- **कौशेयम्**—नपुं°—-—कोशस्य विकारः - ढञ्—रेशम का बना स्त्री का पेटीकोट
- **कौषेयम्**—नपुं°—-—कोशस्य विकारः - ढञ्—रेशम
- **कौषेयम्**—नपुं°—-—कोशस्य विकारः - ढञ्—रेशमी कपड़ा
- **कौषेयम्**—नपुं°—-—कोशस्य विकारः - ढञ्—रेशम का बना स्त्री का पेटीकोट
- **कौसीद्यम्**—नपुं°—-—कुसीद + ष्यञ्—ब्याज लेने का व्यवसाय
- **कौसीद्यम्**—नपुं°—-—कुसीद + ष्यञ्—आलस्य, अकर्मण्यता
- **कौसृतिकः**—पुं°—-—कुसृति + ठक्—ठग, बदमाश
- **कौसृतिकः**—पुं°—-—कुसृति + ठक्—बाजीगर
- **कौस्तुभः**—पुं°—-—कुस्तुभो जलधिस्तत्र भवः - अण्—एक विख्यात रत्न
- **कौस्तुभलक्षणः**—पुं°—कौस्तुभ-लक्षणः—-—विष्णु के विशेषण
- **कौस्तुभवक्षः**—पुं°—कौस्तुभ-वक्षस्—-—विष्णु के विशेषण
- **कौस्तुभहृदयः**—पुं°—कौस्तुभ-हृदयः—-—विष्णु के विशेषण
- **क्नूय्**—भ्वा° आ° - <क्नूयते>—-—-—चूं चूं शब्द करना
- **क्नूय्**—भ्वा° आ° - <क्नूयते>—-—-—डूबना
- **क्नूय्**—भ्वा° आ° - <क्नूयते>—-—-—गीला होना
- **क्रकचः**—पुं°—-—क्र इति कचति शब्दायते - क्र + कच् + अच्—आरा
- **क्रकचच्छदः**—पुं°—क्रकच-च्छदः—-—केतक वृक्ष
- **क्रकचपत्रः**—पुं°—क्रकच-पत्रः—-—सागौन वृक्ष
- **क्रकचपादः**—पुं°—क्रकच-पादः—-—छिपकली
- **क्रकरः**—पुं°—-—क्र इति शब्दं कर्तुं शीलमस्य - क्र + कृ + अच्—एक प्रकार का तीतर
- **क्रकरः**—पुं°—-—क्र इति शब्दं कर्तुं शीलमस्य - क्र + कृ + अच्—आरा
- **क्रकरः**—पुं°—-—क्र इति शब्दं कर्तुं शीलमस्य - क्र + कृ + अच्—निर्धन व्यक्ति
- **क्रकरः**—पुं°—-—क्र इति शब्दं कर्तुं शीलमस्य - क्र + कृ + अच्—रोग

- **क्रतुः**—पुं०—-—कृ + कतु—यज्ञ
- **क्रतुः**—पुं०—-—कृ + कतु—विष्णु का विशेषण
- **क्रतुः**—पुं०—-—कृ + कतु—दस प्रजापतियों में एक
- **क्रतुः**—पुं०—-—कृ + कतु—प्रज्ञा, बुद्धि
- **क्रतुः**—पुं०—-—कृ + कतु—शक्ति, योग्यता
- **क्रतूत्तमः**—पुं०—क्रतु- उत्तमः—-—राजसूय यज्ञ
- **क्रतुद्रुह्**—पुं०—क्रतु- द्रुह्—-—राक्षस, पिशाच
- **क्रतुद्विष्**—पुं०—क्रतु- द्विष्—-—राक्षस, पिशाच
- **क्रतुध्वंसिन्**—पुं०—क्रतु- ध्वंसिन्—-—शिव का विशेषण
- **क्रतुपतिः**—पुं०—क्रतु- पतिः—-—यज्ञ का अनुष्ठाता
- **क्रतुपशुः**—पुं०—क्रतु- पशुः—-—यज्ञीय घोड़ा
- **क्रतुपुरूषः**—पुं०—क्रतु- पुरूषः—-—विष्णु का विशेषण
- **क्रतुभुज्**—पुं०—क्रतु- भुज्—-—देवता, देव
- **क्रतुराज्**—पुं०—क्रतु- राज्—-—यज्ञों का स्वामी
- **क्रतुराज्**—पुं०—क्रतु- राज्—-—राजसूय यज्ञ
- **क्रथ्**—भ्वा० पर० <क्रथति>, <क्रथित>—-—-—क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना
- **क्रथकैशिकः**—पुं०—-—-—एक देश का नाम
- **क्रथनम्**—नपुं०—-—क्रथ् + ल्युट्—वध, हत्या
- **क्रथनकः**—पुं०—-—क्रथन + कन्—ऊँट
- **क्रन्द्**—भ्वा० पर० <क्रन्दति>, <क्रन्दित>—-—-—चिल्लाना, रोना, आंसू बहाना
- **क्रन्द्**—भ्वा० पर० <क्रन्दति>, <क्रन्दित>—-—-—पुकारना, दया की पुकार करना
- **क्रन्द्**—चुरा० पर० या प्रेर०—-—-—लगातार, चिल्लाना
- **क्रन्द्**—चुरा० पर० या प्रेर०—-—-—रूलाना
- **आक्रन्द्**—चुरा० पर० —आ-क्रन्द्—-—चिल्लाना, चीखना, चरमराना, चीत्कार करना
- **आक्रन्द्**—चुरा० पर० —आ-क्रन्द्—-—पुकार करना
- **क्रन्दनम्**—नपुं०—-—क्रन्द् + ल्युट्, क्त वा—आर्तनाद, रोना, विलाप करना
- **क्रन्दनम्**—नपुं०—-—क्रन्द् + ल्युट्, क्त वा—पारस्परिक ललकार, चुनौति

- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————चलना, पर्दापण करना, जाना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————चले जाना, पहुँचना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————जाना, पार करना, पार जाना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————कूदना, छलांग मारना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————ऊपर जाना, चढ़ना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————अधिकार में रखना, वश में करना, अधिकार में लेना, भरना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————आगे बढ़ना, आगे निकल जाना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————उत्तरदायित्व लेना, संप्रयास करना, योग्य या सक्षम होना, शक्ति दिखलाना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————बढ़ना या विकसित होना, पूरा क्षेत्र मिलना, स्वस्थ होना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————पूरा करना, निष्पन्न करना
- **क्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर° <क्रामति>, <क्रमते>, <क्राम्यति>, <क्रान्त>————मैथुन करना
- **अतिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अति-क्रम्———पार करना, पार जाना
- **अतिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अति-क्रम्———परे जाना, लांघना
- **अतिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अति-क्रम्———बढ़ जाना, आगे निकल जाना
- **अतिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अति-क्रम्———उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना, आगे कदम रखना
- **अतिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अति-क्रम्———अवहेलना करना, पृथक करना, उपेक्षा करना
- **अतिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अति-क्रम्———गुजारना, बीतना
- **अधिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अधि-क्रम्———चढ़ना
- **अध्याक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अध्या-क्रम्———अधिकार करना, भरना, ग्रहण करना
- **अनुक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अनु-क्रम्———अनुगमन करना
- **अनुक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अनु-क्रम्———आरम्भ करना
- **अनुक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अनु-क्रम्———अन्तर्वस्तु देना
- **अन्वाक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अन्वा-क्रम्———एक के पश्चात दूसरे का दर्शन करना
- **अपक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अप-क्रम्———छोड़ जाना, चले जाना
- **अभिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अभि-क्रम्———जाना, पहुँचना, प्रविष्ट होना
- **अभिक्रम्**—भ्वा° उभ°, दिवा° पर°—अभि-क्रम्———घूमना, भ्रमण करना

- **अभिक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—अभि-क्रम्——आक्रमण करना
- **अवक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—अव-क्रम्——वापिस हटना
- **आक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—आ-क्रम्——पहुँचना, की ओर जाना
- **आक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—आ-क्रम्——आक्रमण करना, दमन करना, जीतना, परास्त करना
- **आक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—आ-क्रम्——भरना, प्रविष्ट होना, अधिकार में करना
- **आक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—आ-क्रम्——आरम्भ करना, शुरू करना
- **आक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—आ-क्रम्——उन्नत होना, उदय होना
- **आक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—आ-क्रम्——चढ़ना, सवारी करना, अधिकार में करना
- **उत्क्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उद्-क्रम्——ऊपर होना, परे जाना, उपर जाना
- **उत्क्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उद्-क्रम्——अवहेलना करना, उपेक्षा करना
- **उत्क्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उद्-क्रम्——परे कदम रखना
- **उपक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उप-क्रम्——की ओर जाना, पहुँचना
- **उपक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उप-क्रम्——धावा बोलना, आक्रमण करना
- **उपक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उप-क्रम्——बर्ताव करना, उपचार करना, चिकित्सा करना, स्वस्थ करना
- **उपक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उप-क्रम्——प्रेम करना, प्रेम से जीत लेना
- **उपक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उप-क्रम्—— अनुष्ठान करना, प्रस्थान करना
- **उपक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—उप-क्रम्——आरम्भ करना, शुरू करना
- **निष्क्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—निस्-क्रम्——चले जाना, चल देना, विदा होना
- **निष्क्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—निस्-क्रम्——निकलना, प्रकाशित होना
- **पराक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—परा-क्रम्——साहस प्रदर्शित करना, शक्ति या शूरवीरता दिखाना, बहादुरी के साथ करना
- **पराक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—परा-क्रम्——वापिस मुड़ना
- **पराक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—परा-क्रम्——चढ़ाई करना, आक्रमण करना
- **परिक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—परि-क्रम्——इधर उधर घूमना, चक्कर लगाना
- **परिक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—परि-क्रम्——पकड़ लेना
- **प्रक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—प्र-क्रम्——आरम्भ करना, शुरू करना
- **प्रक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—प्र-क्रम्——कुचलना, ऊपर पैर रखकर चलना
- **प्रक्रम्**—भ्वा० उभ०, दिवा० पर०—प्र-क्रम्——जाना, प्रस्थान करना

- **प्रतिक्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—प्रति-क्रम्—-—वापिस आना
- **विक्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—वि-क्रम्—-—में से चलना
- **विक्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—वि-क्रम्—-—छापा मारना, पराजित करना, जीतना
- **विक्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—वि-क्रम्—-—फाड़ना, खोलना
- **व्यतिक्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—व्यति-क्रम्—-—उल्लंघन करना
- **व्यतिक्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—व्यति-क्रम्—-—समय बिताना
- **व्युत्क्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—उद्-क्रम्—-—ऊपर होना, परे जाना, उपर जाना
- **व्युत्क्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—उद्-क्रम्—-—अवहेलना करना, उपेक्षा करना
- **व्युत्क्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—उद्-क्रम्—-—परे कदम रखना
- **सङ्क्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—सम्-क्रम्—-—आना या एकत्र होना
- **सङ्क्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—सम्-क्रम्—-—पार जाना, पार करना, में से जाना
- **सङ्क्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—सम्-क्रम्—-—पहुँचना, जाना
- **सङ्क्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—सम्-क्रम्—-—पार चले जाना, स्थानान्तरित होना
- **सङ्क्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—सम्-क्रम्—-—दाखिल होना, प्रविष्ट होना
- **समाक्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—समा-क्रम्—-—अधिकार करना, कब्जे में लेना, भरना
- **समाक्रम्**—भ्वा॰ उभ॰, दिवा॰ पर॰—समा-क्रम्—-—छापा मारना, जीतना, दमन करना
- **क्रमः**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—कदम, पग
- **क्रमः**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—पैर
- **क्रमः**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—गति, प्रगमन, मार्ग
- **क्रमात्**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—दौरान में, क्रमशः
- **क्रमेण**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—दौरान में, क्रमशः
- **कालक्रमेण**—अव्य॰—काल-क्रमेण—-—उत्तरोत्तर, समय पाकर
- **भाग्यक्रमः**—पुं॰—भाग्यक्रमः—क्रम् + घञ्—भाग्य का उलट जाना
- **क्रमः**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—प्रदर्शन, आरंभ
- **क्रमः**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—नियमित मार्ग, क्रम, श्रेणी, उत्तराधिकारिता
- **क्रमः**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—प्रणाली, रीति
- **क्रमः**—पुं॰—-—क्रम् + घञ्—ग्रसना, पकड़

- **क्रमः**—पुं०—-—क्रम् + घञ्—स्थिति
- **क्रमः**—पुं०—-—क्रम् + घञ्—तैयारी, तत्परता
- **क्रमः**—पुं०—-—क्रम् + घञ्—व्यवसाय, साहसिक कार्य
- **क्रमः**—पुं०—-—क्रम् + घञ्—कर्म या कार्य, कार्यविधि
- **क्रमः**—पुं०—-—क्रम् + घञ्—वेदमन्त्रों कों सस्वर उच्चारण करने की विशेष रीति
- **क्रमः**—पुं०—-—क्रम् + घञ्—शक्ति, सामर्थ्य
- **क्रमम्**—नपुं०—-—क्रम् + घञ्—गारा
- **क्रमानुसारः**—पुं०—क्रम-अनुसारः—-—नियमित क्रम, समुचित व्यवस्था
- **क्रमान्वयः**—पुं०—क्रम-अन्वयः—-—नियमित क्रम, समुचित व्यवस्था
- **क्रमागत**—वि०—क्रम-आगत—-—वंशपरम्पराप्राप्त, आनुवंशिक
- **क्रमायात**—वि०—क्रम-आयात—-—वंशपरम्पराप्राप्त, आनुवंशिक
- **क्रमज्या**—स्त्री०—क्रम-ज्या—-—ग्रह की लंब रेखा, क्षय
- **क्रमभङ्ग**—वि०—क्रम-भङ्ग—-—अनियमितता
- **क्रमक**—वि०—-—क्रम् + वुन्—क्रमबद्ध, प्रणाली के अनुसार
- **क्रमकः**—पुं०—-—क्रम् + वुन्—वह विद्यार्थी जो किसी नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है ।
- **क्रमणः**—पुं०—-—क्रम् + ल्युट्—पैर, घोड़ा
- **क्रमणम्**—नपुं०—-—क्रम् + ल्युट्—कदम
- **क्रमणम्**—नपुं०—-—क्रम् + ल्युट्—पग रखना
- **क्रमणम्**—नपुं०—-—क्रम् + ल्युट्—आगे बढ़ना
- **क्रमणम्**—नपुं०—-—क्रम् + ल्युट्—उल्लंघन
- **क्रमतः**—अव्य०—-—क्रम् + तसिल्—क्रमशः, उत्तरोत्तर, सिलसिलेवार
- **क्रमतः**—अव्य०—-—क्रम् + तसिल्—वंशपरंपरागत, पैतृक, आनुवंशिक
- **क्रमुः**—पुं०—-—क्रम् + उ—सुपारी का पेड़
- **क्रमुकः**—पुं०—-—क्रम् + उ, कन् च—सुपारी का पेड़
- **क्रमेलः**—पुं०—-—क्रम् + एल् + अच्—ऊँट
- **क्रमेलकः**—पुं०—-—क्रम् + एल् + अच्, कन् च—ऊँट
- **क्रयः**—पुं०—-—क्री + अच्—खरीदना, मोल लेना

- **क्रयारोहः**—पुं°—क्रय-आरोहः—-—मंडी, मेला
- **क्रयक्रीत**—वि°—क्रय-क्रीत—-—मोल लिया हुआ
- **क्रयलेख्यम्**—नपुं°—क्रय-लेख्यम्—-—बैनामा, विक्रयनामा, दानपत्र
- **क्रयविक्रयौ**—पुं°—क्रय-विक्रयौ—-—व्यापार, व्यवसाय, खरीद-फरौख्त
- **क्रयविक्रयिकः**—पुं°—क्रय-विक्रयिकः—-—व्यापारी सौदागार
- **क्रयणम्**—नपुं°—-—क्री + ल्युट्—खरीदना, मोल लेना
- **क्रयिकः**—पुं°—-—क्रय + ठन्—व्यापारी, सौदागर
- **क्रयिकः**—पुं°—-—क्रय + ठन्—क्रेता, मोल लेने वाला
- **क्रव्य**—वि°—-—क्री + यत्, नि° —मंडी में विक्रय के लिए रखी हुई वस्तु, बिकाऊ
- **क्रव्यम्**—नपुं°—-—क्लव + यत्, रस्य लः—कच्चा मांस, मुरदार
- **क्रशिमन्**—पुं°—-—कृश + इमनिच्—पतलापन, कृशता, दुबलापतलापन
- **क्राकचिकः**—पुं°—-—क्रकच + ठक्—आराकश
- **क्रान्त**—वि°—-—क्रम + क्त—गया हुआ, आरपार गया हुआ
- **क्रान्तः**—भू° क° कृ°—-—क्रम + क्त—घोड़ा
- **क्रान्तः**—भू° क° कृ°—-—क्रम + क्त—पैर, पग
- **क्रान्तदर्शिन्**—वि°—क्रान्त-दर्शिन्—-—सर्वज्ञ
- **क्रान्तिः**—स्त्री°—-—क्रम् + क्तिन्—गति, प्रगमन
- **क्रान्तिः**—स्त्री°—-—क्रम् + क्तिन्—कदम, पग
- **क्रान्तिः**—स्त्री°—-—क्रम् + क्तिन्—आगे बढ़ने वाला
- **क्रान्तिः**—स्त्री°—-—क्रम् + क्तिन्—आक्रमण करने वाला, अभिभूत करने वाला
- **क्रान्तिः**—स्त्री°—-—क्रम् + क्तिन्—नक्षत्र की कोणीय दूरी
- **क्रान्तिः**—स्त्री°—-—क्रम् + क्तिन्—क्रांतिवलय, सूर्य का भ्रमण मार्ग
- **क्रान्तिकक्षः**—पुं°—क्रान्ति-कक्षः—-—सूर्य का भ्रमण मार्ग
- **क्रान्तिमण्डलम्**—नपुं°—क्रान्ति-मण्डलम्—-—सूर्य का भ्रमण मार्ग
- **क्रान्तिवृत्तम्**—नपुं°—क्रान्ति-वृत्तम्—-—सूर्य का भ्रमण मार्ग
- **क्रान्तिपातः**—पुं°—क्रान्ति-पातः—-—वह बिंदु जहाँ क्रांतिवलय विषुवत रेखा से मिलता है
- **क्रान्तिवलयः**—पुं°—क्रान्ति-वलयः—-—सूर्य का भ्रमण मार्ग

- **क्रान्तिवलयः**—पुं०—क्रान्ति-वलयः—-—उष्ण कटिबंध
- **क्रायकः**—पुं०—-—क्री + ण्वुल् - क्रय + ठक्—क्रेता, खरीददार
- **क्रायकः**—पुं०—-—क्री + ण्वुल् - क्रय + ठक्—व्यापारी, सौदागर
- **क्रायिकः**—पुं०—-—क्री + ण्वुल् - क्रय + ठक्—क्रेता, खरीददार
- **क्रायिकः**—पुं०—-—क्री + ण्वुल् - क्रय + ठक्—व्यापारी, सौदागर
- **क्रिमिः**—पुं०—-—क्रम् + इन्, इत्वम्—कीड़ा
- **क्रिमिः**—पुं०—-—क्रम् + इन्, इत्वम्—कीट
- **क्रिमिः**—पुं०—-—क्रम् + इन्, इत्वम्—कीड़ों से भरा हुआ, कीटयुक्त
- **क्रिमिः**—पुं०—-—क्रम् + इन्, इत्वम्—कीड़े
- **क्रिमिः**—पुं०—-—क्रम् + इन्, इत्वम्—गधा
- **क्रिमिः**—पुं०—-—क्रम् + इन्, इत्वम्—मकड़ी
- **क्रिमिः**—पुं०—-—क्रम् + इन्, इत्वम्—लाख
- **क्रिमिजम्**—नपुं०—क्रिमि-जम्—-—अगर की लकड़ी
- **क्रिमिशैलः**—पुं०—क्रिमि-शैलः—-—बांबी
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—करना, कार्यान्वित, कार्य-सम्पादन, निष्पादन करना
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—कर्म, कृत्य, व्यवसाय, जिम्मेदारी
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—चेष्टा, शारीरिक चेष्टा, श्रम
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—अध्यापन, शिक्षण
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—किसी कला पर आधिपत्य, ज्ञान
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—आचरण
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—साहित्यिक रचना
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—शुद्धि-संस्कार, धार्मिक संस्कार
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—प्रायश्चित्तस्वरूप संस्कार, प्रायश्चित
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—श्राद्ध
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—और्ध्वदेहिक संस्कार
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—पूजन
- **क्रिया**—स्त्री०—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—औषधोपचार, चिकित्सा-प्रयोग, इलाज, शीतक्रिया,शीतल उपचार

- **क्रिया**—स्त्री॰—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—क्रिया के द्वारा अभिहीत कर्म
- **क्रिया**—स्त्री॰—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—चेष्टा या कर्म
- **क्रिया**—स्त्री॰—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—विशेषतः वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित सात द्रव्यों में से एक
- **क्रिया**—स्त्री॰—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—साक्ष्यादिक मानवसाधनों से तथा अन्य परीक्षाओं द्वारा अभियोग की छानबीन करना
- **क्रिया**—स्त्री॰—-—कृ + श, रिङ् आदेशः, इयङ्—प्रमाण-भार
- **क्रियान्वित**—वि॰—क्रिया-अन्वित—-— शास्त्रोक्त सत्कर्मों को करने वाला
- **क्रियापवर्गः**—पुं॰—क्रिया-अपवर्गः—-—किसी कार्य की संपूर्ति या इतिश्री, कार्यसम्पादन
- **क्रियापवर्गः**—पुं॰—क्रिया-अपवर्गः—-—कर्मकाण्ड से मुक्ति, छुटकारा
- **क्रियाभ्युपगमः**—पुं॰—क्रिया-अभ्युपगमः—-—विशेष प्रकार का करार या प्रतिज्ञा-पत्र
- **क्रियावसन्न**—वि॰—क्रिया-अवसन्न—-—गवाहों के बयान के कारण मुकदमा हार जाने वाला व्यक्ति
- **क्रियेन्द्रियम्**—नपुं॰—क्रिया-इन्द्रियम्—-—काम करने वाली इन्द्रियाँ जो ज्ञानेन्द्रियों से भिन्न हैं
- **क्रियाकलापः**—पुं॰—क्रिया-कलापः—-—हिन्दू-धर्मशास्त्र द्वारा विहित समस्त कार्य
- **क्रियाकलापः**—पुं॰—क्रिया-कलापः—-—किसी व्यवसाय के समस्त विवरण
- **क्रियाकारः**—पुं॰—क्रिया-कारः—-—अभिकर्ता, कार्यकर्ता
- **क्रियाकारः**—पुं॰—क्रिया-कारः—-—शिक्षारंभ करने वाला, नौसिखिया, नवच्छात्र
- **क्रियाकारः**—पुं॰—क्रिया-कारः—-—इकरारनामा, प्रतिज्ञापत्र
- **क्रियाद्वेषिन्**—पुं॰—क्रिया-द्वेषिन्—-—वह साक्षी जिसका साक्ष्य पक्षपातपूर्ण हो
- **क्रियानिर्देशः**—पुं॰—क्रिया-निर्देशः—-—गवाही, साक्ष्य
- **क्रियापटु**—वि॰—क्रिया-पटु—-—कार्यदक्ष
- **क्रियापथः**—पुं॰—क्रिया-पथः—-—औषधोपचार की रीति
- **क्रियापदम्**—नपुं॰—क्रिया-पदम्—-—क्रियावाचक शब्द
- **क्रियापर**—वि॰—क्रिया-पर—-—अपने कर्त्तव्य-पालन में परिश्रम शील
- **क्रियापादः**—पुं॰—क्रिया-पादः—-—अभियोक्ता या वादी के द्वारा अपने दावे की पुष्टि में दिए गये प्रमाण, दस्तावेज तथा गवाहियाँ आदि जो कानूनी अभियोग का तीसरा अंग है
- **क्रियायोगः**—पुं॰—क्रिया-योगः—-—क्रिया के साथ संबंध
- **क्रियायोगः**—पुं॰—क्रिया-योगः—-—तरकीब और साधनों का प्रयोग
- **क्रियालोपः**—पुं॰—क्रिया-लोपः—-—आवश्यक धार्मिक अनुष्ठानों का परित्याग

- **क्रियावशः**—पुं°—क्रिया-वशः—-—आवश्यकता, क्रियाओं का अवश्यंभावी प्रभाव
- **क्रियावाचक**—वि°—क्रिया-वाचक—-—क्रम को प्रकट करने वाला, क्रिया से बना संज्ञा शब्द
- **क्रियावाचिन्**—वि°—क्रिया-वाचिन्—-—क्रम को प्रकट करने वाला, क्रिया से बना संज्ञा शब्द
- **क्रियावादिन्**—पुं°—क्रिया-वादिन्—-—वादी, अभियोक्ता
- **क्रियाविधिः**—पुं°—क्रिया-विधिः—-—कार्य करने का नियम, किसी धर्मकृत्य को सम्पन्न करने की रीति
- **क्रियाविशेषणम्**—नपुं°—क्रिया-विशेषणम्—-—क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाला शब्द
- **क्रियाविशेषणम्**—नपुं°—क्रिया-विशेषणम्—-—विधेय विशेषण
- **क्रियासङ्क्रान्ति**—स्त्री°—क्रिया-सङ्क्रान्ति—-—दूसरों को ज्ञान देना, अध्यापन
- **क्रियासमभिहारः**—पुं°—क्रिया-समभिहारः—-—किसी कार्य की आवृत्ति
- **क्रियावत्**—वि°—-—क्रिया + मतुप्—कर्म में व्यस्त, किसी कार्य के व्यवहार को जानने वाला
- **क्री**—क्रया ° उभ° <क्रीणाति>, <क्रीणीते>, <क्रीत>—-—-—खरीदना, मोल लेना
- **क्री**—क्रया ° उभ° <क्रीणाति>, <क्रीणीते>, <क्रीत>—-—-—विनिमय, अदलाबदली
- **आक्री**—क्रया ° उभ°—आ-क्री—-—खरीदना
- **निष्क्री**—क्रया ° उभ°—निस्-क्री—-—कुछ देकर पिंड छुड़ाना, दाम देकर फिर से खरीद लेना, निस्तार करना
- **परिक्री**—क्रया ° उभ°—परि-क्री—-—मोल लेना
- **परिक्री**—क्रया ° उभ°—परि-क्री—-—किराये पर लेना, कुछ समय के लिए मोल लेना
- **परिक्री**—क्रया ° उभ°—परि-क्री—-—वापिस करना, बदला देना, चुकाना
- **विक्री**—क्रया ° उभ°—वि-क्री—-—बेचना
- **विक्री**—क्रया ° उभ°—वि-क्री—-—विनिमय, अदलाबदली
- **क्रीड्**—भ्वा° पर° <क्रीडति, <क्रीडित>—-—-—खेलना, मनोरंजन करना
- **क्रीड्**—भ्वा° पर° <क्रीडति, <क्रीडित>—-—-—जूआ खेलना, पासों से खेलना
- **क्रीड्**—भ्वा° पर° <क्रीडति, <क्रीडित>—-—-—हँसी दिल्ल्गी करना, मजाक करना, खिल्ली उड़ाना
- **अनुक्रीड्**—भ्वा° आ°—अनु-क्रीड्—-—खेलना, किलोल करना, जी बहलाना
- **आक्रीड्**—भ्वा° आ°—आ-क्रीड्—-—खेलना, कौतुक करना
- **परिक्रीड्**—भ्वा° आ°—परि-क्रीड्—-—खेलना, कौतुक करना
- **सङ्क्रीड्**—भ्वा° आ°—सम्-क्रीड्—-—खेलना, कौतुक करना
- **सङ्क्रीड्**—भ्वा° पर°—सम्-क्रीड्—-—'कोलाहल करने ' के अर्थ को प्रकट करता है

- **क्रीडः**—पुं°—-—क्रीड् + घञ्—किलोल, मनबहलाव, खेल, आमोद
- **क्रीडः**—पुं°—-—क्रीड् + घञ्—हंसी दिल्लगी, मजाक
- **क्रीडनम्**—नपुं°—-—क्रीड् + ल्युट्—खेलना, किलोल करना
- **क्रीडनम्**—नपुं°—-—क्रीड् + ल्युट्—खेलने की चीज, खिलौना
- **क्रीडनकः**—पुं°—-—क्रीडन + कन्—खेलने की चीज, खिलौना
- **क्रीडनकम्**—नपुं°—-—क्रीडन + कन्, क्रीड + अनीयर्—खेलने की चीज, खिलौना
- **क्रीडनीयम्**—नपुं°—-—क्रीडनीय + कन्—खेलने की चीज, खिलौना
- **क्रीडनीयकम्**—नपुं°—-—क्रीडनीय + कन्—खेलने की चीज, खिलौना
- **क्रीडा**—स्त्री°—-—क्रीड् + अ + टाप्—किलोल, जी बहलाना, खेलना, आमोद
- **क्रीडा**—स्त्री°—-—क्रीड् + अ + टाप्—हंसी, दिल्लगी
- **क्रीडागृहम्**—नपुं°—क्रीडा-गृहम्—-—आमोद भवन
- **क्रीडाशैलः**—पुं°—क्रीडा-शैलः—-—आमोद
- **क्रीडानारी**—स्त्री°—क्रीडा-नारी—-—वेश्या
- **क्रीडाकोपः**—पुं°—क्रीडा-कोपः—-—झूठमूठ का क्रोध
- **क्रीडामयूरः**—पुं°—क्रीडा-मयूरः—-—मनोरंजन के लिए पाला गया मोर
- **क्रीडारत्नम्**—नपुं°—क्रीडा-रत्नम्—-—कामकेलि, मैथुन
- **क्रीत**—वि°—-—क्री + क्त—मोल लिया हुआ
- **क्रीतः**—पुं°—-—क्री + क्त—हिन्दुधर्मशास्त्र में प्रतिपादित १२ प्रकार के पुत्रों में एक, अपने नैसर्गिक माता पिता से मोल लिया हुआ पुत्र
- **क्रीतानुशयः**—पुं°—क्रीत-अनुशयः—-—किसी वस्तु को मोल लेकर पछताना, किये का निराकरण करना, खरीदी हुई वस्तु को वापिस करना
- **क्रुञ्च्**—पुं°—-—क्रुञ्च् + क्विन्—जलकुक्कुटी, बगला
- **क्रुञ्चः**—पुं°—-—क्रुञ्च् + क्विन् अच् वा—जलकुक्कुटी, बगला
- **क्रुध्**—दिवा° पर° <क्रुध्यति>, <क्रुद्ध>—-—गुस्से होना
- **प्रतिक्रुध्**—दिवा° पर° —प्रति-क्रुध्—-—बदले में कुपित होना
- **सङ्क्रुध्**—दिवा° पर° —सम्-क्रुध्—-—कुपित होना
- **क्रुध्**—स्त्री°—-—क्रुध् + क्विप्—क्रोध, कोप
- **क्रुश्**—भ्वा° पर° <क्रोशति>, <क्रुष्ट>—-—चिल्लाना, रोना, विलाप करना, शोक मनाना
- **क्रुश्**—भ्वा° पर° <क्रोशति>, <क्रुष्ट>—-—चीखना, किलकिलाना, कूका देना, चीत्कार करना, पुकारना

- **अनुक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—अनु-क्रुश्—-—दया करना, करुणा करना
- **अभिक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—अभि-क्रुश्—-—विलाप करना
- **आक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—आ-क्रुश्—-—चिल्लाना, जोर से पुकारना
- **आक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—आ-क्रुश्—-—खरीखोटी सुनाना, गालियाँ देना
- **परिक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—परि-क्रुश्—-—विलाप करना
- **प्रत्याक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—प्रत्या-क्रुश्—-—गाली के उत्तर में गाली देना
- **विक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—वि-क्रुश्—-—चीखना, चिल्लाना
- **विक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—वि-क्रुश्—-—उच्चारण करना
- **विक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—वि-क्रुश्—-—पुकारना
- **विक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—वि-क्रुश्—-—गूंजना
- **व्याक्रुश्**—भ्वा॰ पर॰—व्या-क्रुश्—-—विलाप करना, शोक मनाना
- **क्रुष्ट**—वि॰—-—क्रुश् + क्त—चिल्लाया हुआ
- **क्रुष्ट**—वि॰—-—क्रुश् + क्त—पुकारा हुआ
- **क्रुष्टम्**—नपुं॰—-—क्रुश् + क्त—चिल्लाना, चीखना, रोना
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—निर्दय, निष्ठुर, कठोरहृदय, निष्करुण
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—कठोर, कड़ा
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—दारूण, भयंकर, भीषण
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—नाशकारी, अनिष्टकर
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—घायल, चोट लगा हुआ
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—खूनी
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—कच्चा
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—मजबूत
- **क्रूर**—वि॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—गरम, तेज, अरूचिकर
- **क्रूरः**—पुं॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—बाज, बगला
- **क्रूरम्**—नपुं॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—घाव
- **क्रूरम्**—नपुं॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—हत्या, क्रूरता
- **क्रूरम्**—नपुं॰—-—कृत् + रक् घातोः क्रू—भीषण कृत्य

- **क्रूराकृति**—वि°—क्रूर-आकृति—-—डरावनी सूरत वाला
- **क्रूराकृतिः**—पुं°—क्रूर-आकृतिः—-—रावण का विशेषण
- **क्रूराचार**—वि°—क्रूर-आचार—-—क्रूर और बर्बर आचरण करने वाला
- **क्रूराशय**—वि°—क्रूर-आशय—-—भयानक जीवजन्तुओं से भरा हुआ
- **क्रूराशय**—वि°—क्रूर-आशय—-—क्रूर स्वभाव का
- **क्रूरकर्मन्**—नपुं°—क्रूर-कर्मन्—-—रक्तरंजित करतूत
- **क्रूरकर्मन्**—नपुं°—क्रूर-कर्मन्—-—कठोर श्रम्
- **क्रूरकृत्**—वि°—क्रूर-कृत्—-—भीषण, क्रूर, निर्मम
- **क्रूरकोष्ठ**—वि°—क्रूर-कोष्ठ—-—कड़े कोठे वाला जिस पर मृदु विरेचन का असर न हो
- **क्रूरगन्धः**—पुं°—क्रूर-गन्धः—-—गन्धक
- **क्रूरदृश्**—वि°—क्रूर-दृश्—-—बुरी दृष्टि वाला, कुदृष्टी डालने वाला
- **क्रूरदृश्**—वि°—क्रूर-दृश्—-—खल, दुष्ट
- **क्रूरराबिन्**—पुं°—क्रूर-राबिन्—-—पहाड़ी कौवा
- **क्रूरलोचनः**—पुं°—क्रूर-लोचनः—-—शनिग्रह का विशेषण
- **क्रेतृ**—पुं°—-—क्री + तृच्—क्रेता, खरीददार
- **क्रोञ्चः**—पुं°—-—क्रुञ्च् + अच्, बा° गुणः—एक पहाड़ का नाम
- **क्रोडः**—पुं°—-—क्रुड् + घञ्—सूअर, वृक्ष की खोडर, गढ़ा
- **क्रोडः**—पुं°—-—क्रुड् + घञ्—सीना, वक्षस्थल, छाती
- **क्रोडीकृ**—-—-—-—छाती से लगाना
- **क्रोडः**—पुं°—-—क्रुड् + घञ्—किसी वस्तु मध्य भाग
- **क्रोडः**—पुं°—-—क्रुड् + घञ्—शनिग्रह का विशेषण
- **क्रोडम्**—नपुं°—-—क्रुड् + घञ्—छाती, सीना, कन्धों के बीच का भाग
- **क्रोडम्**—नपुं°—-—क्रुड् + घञ्—किसी वस्तु का मध्यवर्ती भाग, गढ़ा, कोटर
- **क्रोडा**—स्त्री°—-—क्रुड् + घञ्+टाप्—छाती, सीना, कन्धों के बीच का भाग
- **क्रोडा**—स्त्री°—-—क्रुड् + घञ्+टाप्—किसी वस्तु का मध्यवर्ती भाग, गढ़ा, कोटर
- **क्रोडाङ्कः**—पुं°—क्रोड-अङ्कः—-—कछुवा
- **क्रोडाङ्घ्रिः**—पुं°—क्रोड-अङ्घ्रिः—-—कछुवा

- **क्रोडपादः**—पुं°—क्रोड-पादः—-—कछुवा
- **क्रोडपत्रम्**—नपुं°—क्रोड-पत्रम्—-—प्रान्तवर्ती लेख
- **क्रोडपत्रम्**—नपुं°—क्रोड-पत्रम्—-—पत्र का पश्चलेख
- **क्रोडपत्रम्**—नपुं°—क्रोड-पत्रम्—-—सम्पूरक
- **क्रोडपत्रम्**—नपुं°—क्रोड-पत्रम्—-—वसीयतनामे का परवर्ती उत्तराधिकार-पत्र
- **क्रोडीकरणम्**—नपुं°—-—क्रोड् + च्वि + कृ + ल्युट—आलिंगन करना, छाती से लगाना
- **क्रोडीमुखः**—पुं°—-—क्रोड्याः मुखमिव मुखमस्याः ब° स°—गेंडा
- **क्रोधः**—पुं°—-—क्रुध् + घञ्—कोप, गुस्सा
- **क्रोधः**—पुं°—-—क्रुध् + घञ्—क्रोध एकप्रकार की भावना है जिससे रौद्ररस का उदय होता है
- **क्रोधोज्झित**—वि°—क्रोध-उज्झित—-—क्रोध से मुक्त, शान्त, स्वस्थ
- **क्रोधमूर्छित**—वि°—क्रोध-मूर्छित—-—क्रोध से अभिभूत या क्रोधोन्मत्त
- **क्रोधन**—वि°—-—क्रुध् + ल्युट्—गुस्से से भरा हुआ, क्रोधाविष्ट, क्रुद्ध, चिड़चिड़ा
- **क्रोधनम्**—नपुं°—-—क्रुध् + ल्युट्—क्रुद्ध होना, कोप
- **क्रोधालु**—वि°—-—क्रुध् + आलुच्—क्रोधाविष्ट, चिड़चिड़ा, गुस्सैल
- **क्रोशः**—पुं°—-—क्रुश् + घञ्—चिल्लाना, चीख, चीत्कार, कूका देना, कोलाहल
- **क्रोशः**—पुं°—-—क्रुश् + घञ्—चौथाई योजना, एक कोस
- **क्रोशतालः**—पुं°—क्रोश-तालः—-—एक बड़ा ढोल
- **क्रोशध्वनिः**—पुं°—क्रोश-ध्वनिः—-—एक बड़ा ढोल
- **क्रोशन**—वि°—-—क्रुश् + ल्युट्—चिल्लाने वाला
- **क्रोशनम्**—नपुं°—-—क्रुश् + ल्युट्—चीख चिल्लाहट
- **क्रोष्टु**—पुं°—-—क्रुश् + तुन्—गीदड़
- **क्रौञ्चः**—नपुं°—-—क्रुञ्च् + अण्—जलकुक्कुटी, कुररी, बगला
- **क्रौञ्चः**—नपुं°—-—-—एक पर्वत का नाम
- **क्रौञ्चादनम्**—नपुं°—क्रौञ्च-अदनम्—-—कमलडंडी के रेशे
- **क्रौञ्चारातिः**—पुं°—क्रौञ्च-अरातिः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **क्रौञ्चारातिः**—पुं°—क्रौञ्च-अरातिः—-—परशुराम का विशेषण
- **क्रौञ्चारिः**—पुं°—क्रौञ्च-अरिः—-—कार्तिकेय का विशेषण

- **क्रौञ्चारिः**—पुं°—क्रौञ्च-अरिः—-—परशुराम का विशेषण
- **क्रौञ्चरिपुः**—पुं°—क्रौञ्च-रिपुः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **क्रौञ्चरिपुः**—पुं°—क्रौञ्च-रिपुः—-—परशुराम का विशेषण
- **क्रौञ्चदारणः**—पुं°—क्रौञ्च-दारणः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **क्रौञ्चदारणः**—पुं°—क्रौञ्च-दारणः—-—परशुराम का विशेषण
- **क्रौञ्चसूदनः**—पुं°—क्रौञ्च-सूदनः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **क्रौञ्चसूदनः**—पुं°—क्रौञ्च-सूदनः—-—परशुराम का विशेषण
- **क्रौर्यम्**—नपुं°—-—क्रूर + ष्यञ्—क्रूरता, कठोरहृदयता
- **क्लन्द्**—भ्वा° पर° <क्लन्दति>, <क्लन्दित>—-—-—पुकारना, चिल्लाना
- **क्लन्द्**—भ्वा° पर° <क्लन्दति>, <क्लन्दित>—-—-—रोना, विलाप करना
- **क्लन्द्**—भ्वा° आ° <क्लन्दते>, <क्लदते>—-—-—घबड़ा जाना
- **क्लम्**—भ्वा° दिवा°, पर° <क्लामति>, <क्लाम्यति>, <क्लान्त>—-—-—थक जाना, थककर चूर होना, अवसन्न होना
- **विक्लम्**—भ्वा° दिवा°, पर°—वि-क्लम्—-—थक जाना
- **क्लमः**—पुं°—-—क्लम् + घञ्—थकावट, कलान्ति अवसाद
- **क्लमथः**—पुं°—-—क्लम् + घञ्, अथच् वा—थकावट, कलान्ति अवसाद
- **क्लान्त**—वि°—-—क्लम् + क्त—थका हुआ, थक कर चूर हुआ
- **क्लान्त**—वि°—-—क्लम् + क्त—मुर्झाया हुआ, म्लान
- **क्लान्त**—वि°—-—क्लम् + क्त—दुबला-पतला
- **क्लान्ति**—स्त्री°—-—क्लम् + क्तिन्—थकावट
- **क्लान्तिछिद**—वि°—क्लान्ति-छिद—-—थकावट दूर करने वाला, बलदायक
- **क्लिद्**—दिवा° पर° <क्लिद्यति>, <क्लिन्न>—-—-—गीला होना, आर्द्र होना, तर होना
- **क्लिद्**—पुं°—-—-—तय करना, गीला करना
- **क्लिन्न**—वि°—-—क्लिद् + क्त—गीला, तर
- **अक्षक्लिन्न**—वि°—अक्ष-क्लिन्न—-—चौंधियाई आँखों वाला
- **क्लिश्**—दिवा°आ° <क्लिश्यते>, <क्लिष्ट>, <क्लिशित>—-—-—दुःखी होना, पीड़ित होना, कष्ट होना
- **क्लिश्**—दिवा°आ° <क्लिश्यते>, <क्लिष्ट>, <क्लिशित>—-—-—दुःख देना, सताना
- **क्लिश्**—क्रया° पर° <क्लिश्नाति>, <क्लिष्ट>, <क्लिशित>—-—-—दुःख देना, सताना, पीड़ित करना, सताना, कष्ट देना

- **क्लिशित**—वि०—–—क्लिश् + क्त—दुःखी, पीड़ित, संकट ग्रस्त, सताया हुआ
- **क्लिशित**—वि०—–—क्लिश् + क्त—मुर्झाया हुआ
- **क्लिशित**—वि०—–—क्लिश् + क्त—असंगत, विरोधी
- **क्लिशित**—वि०—–—क्लिश् + क्त—परिष्कृत, कृत्रिम
- **क्लिशित**—वि०—–—क्लिश् + क्त—लज्जित
- **क्लिष्ट**—वि०—–—क्लिश् + क्त—दुःखी, पीड़ित, संकट ग्रस्त, सताया हुआ
- **क्लिष्ट**—वि०—–—क्लिश् + क्त—मुर्झाया हुआ
- **क्लिष्ट**—वि०—–—क्लिश् + क्त—असंगत, विरोधी
- **क्लिष्ट**—वि०—–—क्लिश् + क्त—परिष्कृत, कृत्रिम
- **क्लिष्ट**—वि०—–—क्लिश् + क्त—लज्जित
- **क्लिष्टिः**—स्त्री०—–—क्लिश् + क्तिन्—कष्ट वेदना, दुःख, पीडा
- **क्लिष्टिः**—स्त्री०—–—क्लिश् + क्तिन्—सेवा
- **क्लीब** —वि०—–—क्लीब् + क—हिजड़ा, नपुंसक, बधिया किया हुआ
- **क्लीब** —वि०—–—क्लीब् + क—पुरुषार्थहीन, भिरू, दुर्बल, दुर्बलमना
- **क्लीब** —वि०—–—क्लीब् + क—कायर
- **क्लीब** —वि०—–—क्लीब् + क—नीच अधम
- **क्लीब** —वि०—–—क्लीब् + क—सुस्त
- **क्लीब** —वि०—–—क्लीब् + क—नपुंसक लिंग का
- **क्लीव**—वि०—–—क्लीव् + क—हिजड़ा, नपुंसक, बधिया किया हुआ
- **क्लीव**—वि०—–—क्लीव् + क—पुरुषार्थहीन, भिरू, दुर्बल, दुर्बलमना
- **क्लीव**—वि०—–—क्लीव् + क—कायर
- **क्लीव**—वि०—–—क्लीव् + क—नीच अधम
- **क्लीव**—वि०—–—क्लीव् + क—सुस्त
- **क्लीव**—वि०—–—क्लीव् + क—नपुंसक लिंग का
- **क्लीबः**—पुं०—–—क्लीब् + क—नामर्द, हिजड़ा
- **क्लीबः**—पुं०—–—क्लीब् + क—नपुंसक लिंग
- **क्लीवः**—पुं०—–—क्लीव् + क—नामर्द, हिजड़ा

- **क्लीवः**—पुं°—–—क्लीव् + क—नपुंसक लिंग
- **क्लीबम्**—नपुं°—-—क्लीब् + क—नामर्द, हिजड़ा
- **क्लीबम्**—नपुं°—-—क्लीब् + क—नपुंसक लिंग
- **क्लीवम्**—नपुं°—-—क्लीव् + क—नामर्द, हिजड़ा
- **क्लीवम्**—नपुं°—-—क्लीव् + क—नपुंसक लिंग
- **क्लेदः**—पुं°—-—क्लिद् + घञ्—गीलापन, आर्द्रता, तरी, नमी
- **क्लेदः**—पुं°—-—क्लिद् + घञ्—बहने वाला, घाव से निकलने वाला मवाद
- **क्लेदः**—पुं°—-—क्लिद् + घञ्—दुःख, कष्ट
- **क्लेशः**—पुं°—–—क्लिश् + घञ्—पीड़ा, वेदना, कष्ट, दुःख, तकलीफ
- **क्लेशः**—पुं°—–—क्लिश् + घञ्—गुस्सा, क्रोध
- **क्लेशः**—पुं°—–—क्लिश् + घञ्—सांसारिक कामकाज
- **क्लेशक्षम**—वि°—क्लेश-क्षम—-—कष्ट सहने में समर्थ
- **क्लैब्यम्**—नपुं°—-—क्लीब + ष्यञ्—नामर्दी
- **क्लैब्यम्**—नपुं°—-—क्लीब + ष्यञ्—पुरूषार्थहीनता, भीरूता, कायरता
- **क्लैब्यम्**—नपुं°—-—क्लीब + ष्यञ्—अनुपयुक्तता, नामर्दी, शक्तिहीनता
- **क्लैव्यम्**—नपुं°—-—क्लीव + ष्यञ्—नामर्दी
- **क्लैव्यम्**—नपुं°—-—क्लीव + ष्यञ्—पुरूषार्थहीनता, भीरूता, कायरता
- **क्लैव्यम्**—नपुं°—-—क्लीव + ष्यञ्—अनुपयुक्तता, नामर्दी, शक्तिहीनता
- **क्लोमम्**—नपुं°—–—क्लु + मनिन्—फेफड़े
- **क्व**—अव्य°—–—किम् + अत्, कु आदेशः—किधर, कहाँ
- **क्वक्व**—अव्य°—क्व-क्व—-—जब किसी सामान्य वाक्य खण्ड में प्रयुक्त होता हैं तो इसका अर्थ है -'भारी' 'अन्तर' 'असंगति'
- **क्वक्व**—अव्य°—क्व-क्व—-—कभी कभी 'क्व' का प्रयोग 'किम्' शब्द के अधिकार का होता है
- **क्वापि**—अव्य°—क्व-अपि—-—कहीं, किसी जगह
- **क्वापि**—अव्य°—क्व-अपि—-—कभीकभी
- **क्वचित्**—अव्य°—क्व-चित्—-—कुछ स्थानों पर
- **क्वचित्**—अव्य°—क्व-चित्—-—कुछ बातों में
- **क्वचित्क्वचित्**—अव्य°—क्वचित्-क्वचित्—-—एक जगह - दूसरी जगह, यहाँ-वहाँ

- **क्वचित्क्वचित्**—अव्य०—क्वचित्-क्वचित्—-—कभी-कभी
- **क्वण्**—भ्वा० पर० <क्वणति>, <क्वणित>—-—-—अस्पष्ट शब्द करना, झनझन शब्द, टनटन शब्द
- **क्वण्**—भ्वा० पर० <क्वणति>, <क्वणित>—-—-—भिनभिनाना, गुंजन, अस्पष्ट गायन
- **क्वणः**—पुं०—-—क्वण् + अप्—सामान्य शब्द
- **क्वणः**—पुं०—-—क्वण् + अप्—किसी भी वाद्ययन्त्र की ध्वनि
- **क्वणनम्**—नपुं०—-—क्वण् + ल्युट् क्तम्—किसी भी वाद्ययन्त्र की ध्वनि
- **क्वणितम्**—नपुं०—-—क्वण् + ल्युट् क्तम्—किसी भी वाद्ययन्त्र की ध्वनि
- **क्वाणः**—पुं०—-—क्वण् + घञ् —किसी भी वाद्ययन्त्र की ध्वनि
- **क्वत्य**—वि०—-—क्व + त्यप्—किस स्थान पर सम्बन्ध रखने वाला, कहाँ पर होने वाला
- **क्वथ्**—भ्वा० पर० <क्वथति>, <क्वथित>—-—-—उबालना, काढ़ा बनाना
- **क्वथ्**—भ्वा० पर० <क्वथति>, <क्वथित>—-—-—पचाना
- **क्वथः**—पुं०—-—क्वाथ् + अच्, घञ् वा—काढा, लगातार मन्दी आँच में तैयार किया गया घोल
- **क्वाचित्क**—वि०—-—-—अकस्मात घटित, विरल, असाधारण
- **क्षः**—पुं०—-—क्षि + ड—नाश
- **क्षः**—पुं०—-—क्षि + ड—अन्तर्धान, हानि
- **क्षः**—पुं०—-—क्षि + ड—बिजली
- **क्षः**—पुं०—-—क्षि + ड—खेत
- **क्षः**—पुं०—-—क्षि + ड—किसान
- **क्षः**—पुं०—-—क्षि + ड—विष्णु का नरसिंहावतार
- **क्षः**—पुं०—-—क्षि + ड—राक्षस
- **क्षण्** —तना० उभ० <क्षणोति>, <क्षणुते>, <क्षुत्त>—-—-—चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना
- **क्षण्** —तना० उभ० <क्षणोति>, <क्षणुते>, <क्षुत्त>—-—-—तोड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना
- **क्षन्**—तना० उभ० <क्षणोति>, <क्षणुते>, <क्षुत्त>—-—-—चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना
- **क्षन्**—तना० उभ० <क्षणोति>, <क्षणुते>, <क्षुत्त>—-—-—तोड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना
- **उपक्षण्**—तना० उभ० —उप-क्षण्—-—उसी अर्थ में प्रयोग जो ‘क्षण’ का मूल अर्थ है।
- **परिक्षण्**—तना० उभ० —परि-क्षण्—-—उसी अर्थ में प्रयोग जो ‘क्षण’ का मूल अर्थ है।
- **विक्षण्**—तना० उभ० —वि-क्षण्—-—उसी अर्थ में प्रयोग जो ‘क्षण’ का मूल अर्थ है।

- **क्षणः**—पुं°—-—क्षण् + अच्—लमहा, निमेष, एक सैकंड से ४।५ भाग के बराबर समय की माप
- **क्षणः**—पुं°—-—क्षण् + अच्—अवकाश
- **क्षणः**—पुं°—-—क्षण् + अच्—उपयुक्त क्षण या अवसर
- **क्षणः**—पुं°—-—क्षण् + अच्—उत्सव, हर्ष, खुशी
- **क्षणः**—पुं°—-—क्षण् + अच्—आश्रय, दासता
- **क्षणः**—पुं°—-—क्षण् + अच्—केन्द्र, मध्यभाग
- **क्षणम्**—नपुं°—-—क्षण् + अच्—लमहा, निमेष, एक सैकंड से ४।५ भाग के बराबर समय की माप
- **क्षणम्**—नपुं°—-—क्षण् + अच्—अवकाश
- **क्षणम्**—नपुं°—-—क्षण् + अच्—उपयुक्त क्षण या अवसर
- **क्षणम्**—नपुं°—-—क्षण् + अच्—उत्सव, हर्ष, खुशी
- **क्षणम्**—नपुं°—-—क्षण् + अच्—आश्रय, दासता
- **क्षणम्**—नपुं°—-—क्षण् + अच्—केन्द्र, मध्यभाग
- **क्षणान्तरे**—अव्य°—क्षण-अन्तरे—-—दूसरे क्षण, कुछ देर के पश्चात
- **क्षणक्षेपः**—पुं°—क्षण-क्षेपः—-—क्षणिक विलंब
- **क्षणदः**—पुं°—क्षण-दः—-—ज्योतिषी
- **क्षणदम्**—नपुं°—क्षण-दम्—-—पानी
- **क्षणदा**—स्त्री°—क्षण-दा—-—रात
- **क्षणदा**—स्त्री°—क्षण-दा—-—हल्दी
- **क्षणदकरः**—पुं°—क्षण-द-करः—-—चाँद
- **क्षणदपतिः**—पुं°—क्षण-द-पतिः—-—चाँद
- **क्षणदचरः**—पुं°—क्षण-द-चरः—-—रात में घूमने वाला, राक्षस
- **क्षणदान्ध्यम्**—पुं°—क्षण-द-आन्ध्यम्—-—रात्रि में अन्धापन, रतौंधी
- **क्षणद्युतिः**—स्त्री°—क्षण-द्युतिः—-—बिजली
- **क्षणप्रकाशा**—स्त्री°—क्षण-प्रकाशा—-—बिजली
- **क्षणप्रभा**—स्त्री°—क्षण-प्रभा—-—बिजली
- **क्षणनिश्वासः**—पुं°—क्षण-निश्वासः—-—शिंशुक
- **क्षणभङ्गुर**—वि°—क्षण-भङ्गुर—-—क्षणस्थायी, चंचल, नश्वर

- **क्षणमात्रम्**—अव्य°—क्षण-मात्रम्—-—क्षणभर के लिए
- **क्षणरामिन्**—पुं°—क्षण-रामिन्—-—कबूतर
- **क्षणविध्वंसिन्**—वि°—क्षण-विध्वंसिन्—-—क्षणभर में नष्ट होने वाला
- **क्षणविध्वंसिन्**—पुं°—क्षण-विध्वंसिन्—-—नास्तिक दार्शनिकों का सम्प्रदाय जो यह मानता है कि प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट होकर नया बनता रहता हैं।
- **क्षणतुः**—पुं°—-—क्षण् + अतु—घाव, फोड़ा
- **क्षणनम्**—नपुं°—-—क्षण् + ल्युट्—क्षति पहुँचाना, घायल करना, मार डालना
- **क्षणिक**—वि°—-—क्षण + ठन्—क्षणस्थायी, अचिरस्थायी
- **क्षणिका**—स्त्री°—-—क्षण + ठन्—बिजली
- **क्षणिन्**—वि°—-—क्षण + इनि—अवकाश रखने वाला
- **क्षणिन्**—वि°—-—क्षण + इनि—क्षणस्थायी
- **क्षणिनी**—स्त्री°—-—क्षण + इनि—बिजली
- **क्षत**—वि°—-—क्षण् + क्त—घायल, चोट लगा हुआ, क्षतिग्रस्त, काटा हुआ, फाड़ा हुआ, चीरा हुआ, तोड़ा हुआ
- **क्षतम्**—नपुं°—-—क्षण् + क्त—खरोच
- **क्षतम्**—नपुं°—-—क्षण् + क्त—घाव, चोट, क्षति
- **क्षतम्**—नपुं°—-—क्षण् + क्त—भय, विनाश, खतरा
- **क्षतअरि**—वि°—क्षत-अरि—-—विजयी
- **क्षतउदरम्**—नपुं°—क्षत-उदरम्—-—पेचिश
- **क्षतकासः**—पुं°—क्षत-कासः—-—आघात से उत्पन्न खांसी
- **क्षतजम्**—नपुं°—क्षत-जम्—-—रुधिर
- **क्षतजम्**—नपुं°—क्षत-जम्—-—पीप, मवाद
- **क्षतयोनिः**—स्त्री°—क्षत-योनिः—-—भ्रष्ट स्त्री, वह स्त्री जिसका कौमार्य भंग हो चुका हो
- **क्षतविक्षत**—वि°—क्षत-विक्षत—-—विक्षतांग, जिसका शरीर बहुत जगह से कट गया हो, तथा घावों से भरा हो
- **क्षतवृत्तिः**—स्त्री°—क्षत-वृत्तिः—-—दरिद्रता, जीविका के साधनों से वंचित
- **क्षतव्रतः**—पुं°—क्षत-व्रतः—-—वह विद्यार्थी जिसने अपनी धार्मिक प्रतिज्ञा या व्रत भंग कर दिया हो
- **क्षतिः**—स्त्री°—-—क्षण् +क्तिन्—चोट, घाव
- **क्षतिः**—स्त्री°—-—क्षण् +क्तिन्—नाश, काट, फाड़

- **क्षतिः**—स्त्री°——क्षण् +क्तिन्—बर्बादी, हानि, नुकसान
- **क्षतिः**—स्त्री°——क्षण् +क्तिन्—ह्रास, क्षय, न्यूनता
- **क्षत्तृ**—पुं°——क्षद् + तृच्—जो काटने और रूपरेखा खोदने का काम करता है
- **क्षत्तृ**—पुं°——क्षद् + तृच्—परिचारक, द्वारपाल
- **क्षत्तृ**—पुं°——क्षद् + तृच्—कोचवान, सारथि
- **क्षत्तृ**—पुं°——क्षद् + तृच्—शुद्रपिता तथा क्षत्रिय माता से उत्पन्न संतान
- **क्षत्तृ**—पुं°——क्षद् + तृच्—दासी का पुत्र
- **क्षत्तृ**—पुं°——क्षद् + तृच्—ब्रह्मा
- **क्षत्तृ**—पुं°——क्षद् + तृच्—मछली
- **क्षत्रः**—पुं°——क्षण् + क्विप् = क्षत्, ततः त्रायते - त्रै + क—अधिराज्य, शक्ति, प्रभुता, सामर्थ्य
- **क्षत्रः**—पुं°——क्षण् + क्विप् = क्षत्, ततः त्रायते - त्रै + क—क्षत्रिय जाति का पुरूष
- **क्षत्रान्तकः**—पुं°—क्षत्र-अन्तकः——परशुराम का विशेषण
- **क्षत्रधर्मः**—पुं°—क्षत्र-धर्मः——बहादुरी, सैनिक शूरवीरता
- **क्षत्रधर्मः**—पुं°—क्षत्र-धर्मः——क्षत्रिय के कर्तव्य
- **क्षत्रपः**—पुं°—क्षत्र-पः——राज्यपाल, उपशासक
- **क्षत्रबन्धुः**—पुं°—क्षत्र-बन्धुः——क्षत्रिय जाति का पुरूष
- **क्षत्रबन्धुः**—पुं°—क्षत्र-बन्धुः——क्षत्रिय मात्र, अपक्षत्रिय, घृणित या निकम्मा क्षत्रिय
- **क्षत्रम्**—नपुं°——क्षण् + क्विप् = क्षत्, ततः त्रायते - त्रै + क—अधिराज्य, शक्ति, प्रभुता, सामर्थ्य
- **क्षत्रम्**—नपुं°——क्षण् + क्विप् = क्षत्, ततः त्रायते - त्रै + क—क्षत्रिय जाति का पुरूष
- **क्षत्रान्तकः**—पुं°—क्षत्रम्-अन्तकः——परशुराम का विशेषण
- **क्षत्रधर्मः**—पुं°—क्षत्रम्-धर्मः——बहादुरी, सैनिक शूरवीरता
- **क्षत्रधर्मः**—पुं°—क्षत्रम्-धर्मः——क्षत्रिय के कर्तव्य
- **क्षत्रपः**—पुं°—क्षत्रम्-पः——राज्यपाल, उपशासक
- **क्षत्रबन्धुः**—पुं°—क्षत्रम्-बन्धुः——क्षत्रिय जाति का पुरूष
- **क्षत्रबन्धुः**—पुं°—क्षत्रम्-बन्धुः——क्षत्रिय मात्र, अपक्षत्रिय, घृणित या निकम्मा क्षत्रिय
- **क्षत्रियः**—पुं°——क्षत्रे राष्ट्रे साधु तस्यापत्यं जातौ वा घः तारा°)—दूसरे वर्ण या सैनिक जाति का पुरूष
- **क्षत्रियहणः**—पुं°—क्षत्रिय-हणः——परशुराम का विशेषण

- **क्षत्रियका**—स्त्री°—-—क्षत्रिया + कन् + टाप्, ह्रस्वः —क्षत्रिय जाति का स्त्री
- **क्षत्रिया**—स्त्री°—-—क्षत्रिय + टाप् —क्षत्रिय जाति का स्त्री
- **क्षत्रियिका**—स्त्री°—-—क्षत्रिया + कन् + टाप् इत्वम् वा—क्षत्रिय जाति का स्त्री
- **क्षत्रियाणी**—स्त्री°—-—क्षत्रिया + ङीष्, आनुक्—क्षत्रिय जाति का स्त्री
- **क्षत्रियाणी**—स्त्री°—-—क्षत्रिया + ङीष्, आनुक्—क्षत्रिय की पत्नी
- **क्षन्तृ**—वि°—-—क्षम् + तृच्—प्रशान्त, सहिष्णु, विनम्र
- **क्षप्**—भ्वा° <क्षपति>, <क्षपते>, <क्षपित>—-—-—उपवास करना, संयमी होना
- **क्षप्**—भ्वा° <क्षपति>, <क्षपते>, <क्षपित>—-—-—फेकना, भेजना, डालना
- **क्षप्**—भ्वा° <क्षपति>, <क्षपते>, <क्षपित>—-—-—चूक जाना
- **क्षपणः**—पुं°—-—क्षप् + ल्युट्—बौद्धभिक्षु
- **क्षपणम्**—नपुं°—-—क्षप् + ल्युट्—अपवित्रता, अशौच
- **क्षपणम्**—नपुं°—-—क्षप् + ल्युट्—नाश करना, दबाना, निकाल देना
- **क्षपणकः**—पुं°—-—क्षपण + कन्—बौद्ध या जैन साधु
- **क्षपणी**—स्त्री°—-—क्षप् + ल्युट् + ङीष्—चप्पू
- **क्षपणी**—स्त्री°—-—क्षप् + ल्युट् + ङीष्—जाल
- **क्षपण्युः**—पुं°—-—क्षप् + अन्यु, णत्वम्—अपराध
- **क्षपा**—स्त्री°—-—क्षप् + अच् + टाप्—रात
- **क्षपा**—स्त्री°—-—क्षप् + अच् + टाप्—हल्दी
- **क्षपाटः**—पुं°—क्षपा-अटः—-—रात में घूमने वाला
- **क्षपाटः**—पुं°—क्षपा-अटः—-—राक्षस, पिशाच
- **क्षपाकरः**—पुं°—क्षपा-करः—-—चन्द्रमा
- **क्षपाकरः**—पुं°—क्षपा-करः—-—कपूर
- **क्षपानाथः**—पुं°—क्षपा-नाथः—-—चन्द्रमा
- **क्षपानाथः**—पुं°—क्षपा-नाथः—-—कपूर
- **क्षपाघनः**—पुं°—क्षपा-घनः—-—काला बादल
- **क्षपाचरः**—पुं°—क्षपा-चरः—-—राक्षस, पिशाच
- **क्षम्**—भ्वा° आ° <क्षमते>, <क्षाम्यति>, <क्षान्त> या <क्षमित>—-—-—अनुमति देना, इजाजत देना, चलने देना

- **क्षम्**—भ्वा° आ° <क्षमते>, <क्षाम्यति>, <क्षान्त> या <क्षमित>———-—क्षमा करना, माफ करना देना
- **क्षम्**—भ्वा° आ° <क्षमते>, <क्षाम्यति>, <क्षान्त> या <क्षमित>———-—धैर्यवान होना, चुप होना, प्रतीक्षा करना
- **क्षम्**—भ्वा° आ° <क्षमते>, <क्षाम्यति>, <क्षान्त> या <क्षमित>———-—सहन करना, गम का जाना, भुगतना
- **क्षम्**—भ्वा° आ° <क्षमते>, <क्षाम्यति>, <क्षान्त> या <क्षमित>———-—विरोध करना, रोकना
- **क्षम्**—भ्वा° आ° <क्षमते>, <क्षाम्यति>, <क्षान्त> या <क्षमित>———-—सक्षम या योग्य होना
- **क्षम**—वि°—-—क्षम् + अच्—धैर्यवान
- **क्षम**—वि°—-—क्षम् + अच्—सहनशील, विनम्र
- **क्षम**—वि°—-—क्षम् + अच्—पर्याप्त, सक्षम, योग्य
- **क्षम**—वि°—-—क्षम् + अच्—समुपयुक्त, योग्य, उचित, उपयुक्त
- **क्षम**—वि°—-—क्षम् + अच्—योग्य, समर्थ, अनुरूप
- **क्षम**—वि°—-—क्षम् + अच्—सहने योग्य, सह्य
- **क्षम**—वि°—-—क्षम् + अच्—अनुकूल, मित्रवत्
- **क्षमा**—स्त्री°—-—क्षम् + अङ् + टाप्—धैर्य, सहिष्णुता, माफी
- **क्षमा**—स्त्री°—-—क्षम् + अङ् + टाप्—पृथ्वी
- **क्षमा**—स्त्री°—-—क्षम् + अङ् + टाप्—दुर्गा का विशेषण
- **क्षमाजः**—पुं°—क्षमा-जः—-—मंगलग्रह
- **क्षमाभुज्**—पुं°—क्षमा-भुज्—-—राजा
- **क्षमाभुजः**—पुं°—क्षमा-भुजः—-—राजा
- **क्षमितृ**—वि°—-—क्षम् + तृच्, स्त्रियाँ ङीप्—धैर्यवान, सहनशील, क्षमा करने के स्वभाव वाला
- **क्षमिन्**—वि°—-—क्षम् + घिनुण्, स्त्रियाँ ङीप्—धैर्यवान, सहनशील, क्षमा करने के स्वभाव वाला
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—घर, निवास, आवास
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—हानि, ह्रास, छीजन, घटाव, पतन, न्यूनता
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—विनाश, अंत, समाप्ति
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—आर्थिक क्षति
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—गिरना
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—हटाना
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—प्रलय

- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—तपेदिक
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—रोग
- **क्षयः**—पुं°—-—क्षि + अच्—निर्गुणता, ऋण
- **क्षयकर**—वि°—क्षय-कर—-—नाश या तबाही करने वाला, बर्बादी करने वाला
- **क्षयकालः**—पुं°—क्षय-कालः—-—प्रलयकाल
- **क्षयकालः**—पुं°—क्षय-कालः—-—अवनति का समय
- **क्षयकासः**—पुं°—क्षय-कासः—-—तपेदिक की खांसी
- **क्षयपक्षः**—पुं°—क्षय-पक्षः—-—कृष्णपक्ष, अँधेरापक्ष
- **क्षययुक्तिः**—स्त्री°—क्षय-युक्तिः—-—नाश करने का अवसर
- **क्षययोगः**—पुं°—क्षय-योगः—-—नाश करने का अवसर
- **क्षयरोगः**—पुं°—क्षय-रोगः—-—तपेदिक, राज्यक्षमा
- **क्षयवायुः**—पुं°—क्षय-वायुः—-—प्रलयकाल की हवा
- **क्षयसम्पद्**—स्त्री°—क्षय-सम्पद्—-—सर्वनाश, बर्बादी
- **क्षयथु**—नपुं°—-—क्षि + अथुच्—तपेदिक के रोगी की खांसी, तपेदिक
- **क्षयिन्**—वि°—-—क्षय + इनि—ह्रासमान, मुर्झाने वाला
- **क्षयिन्**—वि°—-—क्षय + इनि—क्षयरोगग्रस्त
- **क्षयिन्**—वि°—-—क्षय + इनि—नश्वर, भंगुर
- **क्षयिन्**—पुं°—-—क्षय + इनि—चन्द्रमा
- **क्षयिष्णु**—वि°—-—क्षि + इष्णुच्—बर्बाद करने वाला, नाश कारी
- **क्षयिष्णु**—वि°—-—क्षि + इष्णुच्—नश्वर, भंगुर
- **क्षर्**—भ्वा° पर° <क्षरति>, <क्षरित>—-—-—बहना, सरकना
- **क्षर्**—भ्वा° पर° <क्षरति>, <क्षरित>—-—-—भेज देना, नदी की भाँति बहना, उडेलना, निकालना
- **क्षर्**—भ्वा° पर° <क्षरति>, <क्षरित>—-—-—बूँद-बूँद करके गिरना, टपकना, रिसना
- **क्षर्**—भ्वा° पर° <क्षरति>, <क्षरित>—-—-—नष्ट होना, घटना, मिटना
- **क्षर्**—भ्वा° पर° <क्षरति>, <क्षरित>—-—-—व्यर्थ होना, प्रभाव न होना
- **क्षर्**—भ्वा° पर° <क्षरति>, <क्षरित>—-—-—खिसकना, वञ्चित होना
- **क्षर्**—भ्वा° पर°, प्रेर°—-—-—आरोप लगाना, बदनाम करना

- **विक्षर्**—भ्वा० पर०—वि-क्षर्—-—पिघलना, घुल जाना
- **क्षर**—वि०—-—क्षर् + अच्—पिघलने वाला
- **क्षर**—वि०—-—क्षर् + अच्—जंगम
- **क्षर**—वि०—-—क्षर् + अच्—नश्वर
- **क्षरः**—पुं०—-—क्षर् + अच्—बादल
- **क्षरन्**—नपुं०—-—-—पानी
- **क्षरन्**—नपुं०—-—-—शरीर
- **क्षरनम्**—नपुं०—-—क्षर् + ल्युट्—बहने, टपकने, बूँद-बूँद गिरने और रिसने की क्रिया
- **क्षरनम्**—नपुं०—-—क्षर् + ल्युट्—पसीना आ जाना
- **क्षरिन्**—पुं०—-—क्षर + इनि—बरसात का मौसम
- **क्षल्**—चुरा० उभ० <क्षालयति>, <क्षालयते>, <क्षालित>—-—-—धोना, धो देना, पवित्र करना, साफ करना
- **क्षल्**—चुरा० उभ० <क्षालयति>, <क्षालयते>, <क्षालित>—-—-—मिटा देना
- **विक्षल्**—चुरा० उभ०—वि-क्षल्—-—धोकर साफ करना
- **क्षवः**—पुं०—-—क्षु + अप्—छींक
- **क्षवः**—पुं०—-—क्षु + अप्—खांसी
- **क्षवथुः**—पुं०—-—क्षु + अथुच् —छींक
- **क्षवथुः**—पुं०—-—क्षु + अथुच् —खांसी
- **क्षात्र**—वि०—-—क्षत्र + अण्—सैनिक जाति से संबंध रखने वाला
- **क्षात्रम्**—नपुं०—-—क्षत्र + अण्—क्षत्रिय जाति
- **क्षात्रम्**—नपुं०—-—क्षत्र + अण्—क्षत्रिय के गुण
- **क्षान्त**—भू० क० कृ०—-—क्षम् + क्त—धैर्यवान्, सहन शील, सहिष्णु
- **क्षान्त**—भू० क० कृ०—-—क्षम् + क्त—क्षमा किया गया
- **क्षान्ता**—स्त्री०—-—-—पृथ्वी
- **क्षान्तिः**—स्त्री०—-—-—धैर्य, सहनशीलता, क्षमा
- **क्षान्तु**—वि०—-—क्षम् + तुन् , वृद्धि—धैर्यवान, सहनशील
- **क्षान्तुः**—पुं०—-—क्षम् + तुन् , वृद्धि—पिता
- **क्षाम**—वि०—-—क्षै + क्त—दग्ध, झुलसा हुआ

- **क्षाम**—वि॰—-—क्षै + क्त—क्षीण, पतला, परिक्षीण, कृश, दुबला-पतला
- **क्षाम**—वि॰—-—क्षै + क्त—क्षुद्र, तुच्छ, अल्प
- **क्षाम**—वि॰—-—क्षै + क्त—दुर्बल, निःशक्त
- **क्षार**—वि॰—-—क्षर् + ण बा॰—संक्षरणशील, क्षारक या दाहक, तिक्त, चरपरा, कटु, खारी
- **क्षारः**—पुं॰—-—क्षर् + ण बा॰—रस, अर्क
- **क्षारः**—पुं॰—-—क्षर् + ण बा॰—शीरा, राब
- **क्षारः**—पुं॰—-—क्षर् + ण बा॰—कोई क्षारीय या खट्टा पदार्थ
- **क्षारः**—पुं॰—-—क्षर् + ण बा॰—शीशा
- **क्षारः**—पुं॰—-—क्षर् + ण बा॰—बदमाश, ठग
- **क्षारम्**—नपुं॰—-—क्षर् + ण बा॰—काला नमक
- **क्षारम्**—नपुं॰—-—क्षर् + ण बा॰—पानी
- **क्षाराच्छम्**—नपुं॰—क्षार-अच्छम्—-—समुद्री नमक
- **क्षाराञ्जनम्**—नपुं॰—क्षार-अञ्जनम्—-—सज्जी का लेप
- **क्षाराम्बु**—नपुं॰—क्षार-अम्बु—-—खारी रस या खारा पानी
- **क्षारोदः**—पुं॰—क्षार-उदः—-—खारा समुद्र
- **क्षारोदकः**—पुं॰—क्षार-उदकः—-—खारा समुद्र
- **क्षारोदधिः**—पुं॰—क्षार-उदधिः—-—खारा समुद्र
- **क्षारसमुद्रः**—पुं॰—क्षार-समुद्रः—-—खारा समुद्र
- **क्षारत्रयम्**—नपुं॰—क्षार-त्रयम्—-—सज्जी, शोरा, सुहागा
- **क्षारत्रियतम्**—नपुं॰—क्षार-त्रियतम्—-—सज्जी, शोरा, सुहागा
- **क्षारनदी**—स्त्री॰—क्षार-नदी—-—नरक में खारे पानी की नदी
- **क्षारभूमिः**—स्त्री॰—क्षार-भूमिः—-—रिहाली भूमि
- **क्षारमृत्तिका**—स्त्री॰—क्षार-मृत्तिका—-—रिहाली भूमि
- **क्षारमेलकः**—पुं॰—क्षार-मेलकः—-—खारा पदार्थ
- **क्षाररसः**—पुं॰—क्षार-रसः—-—खारा रस
- **क्षारकः**—पुं॰—-—क्षार + कन्—खार, रेह
- **क्षारकः**—पुं॰—-—क्षार + कन्—रस, अर्क

- **क्षारकः**—पुं॰—–—क्षार + कन्—पिंजरा, पक्षियों की रहने की टोकरी या जाल
- **क्षारकः**—पुं॰—–—क्षार + कन्—धोबी
- **क्षारकः**—पुं॰—–—क्षार + कन्—मंजरी, कलिका
- **क्षारणम्**—नपुं॰—-—क्षर् + णिच् + ल्युट्, युच् वा—दोषारोपण, विशेषकर व्याभिचार का
- **क्षारणा**—स्त्री॰—-—क्षर् + णिच् + ल्युट्, युच् वा—दोषारोपण, विशेषकर व्याभिचार का
- **क्षारिका**—स्त्री॰—-—क्षर् + ण्वुल् + टाप्, इत्वम्—भूख
- **क्षारित**—वि॰—–—–—खारे पानी में से टपकाया हुआ
- **क्षारित**—वि॰—–—–—जिस पर मिथ्या अपवाद लगाया गया हो
- **क्षालनम्**—नपुं॰—–—क्षल् + णिच् + ल्युट्—धोना, साफ करना
- **क्षालनम्**—नपुं॰—–—क्षल् + णिच् + ल्युट्—छिड़कना
- **क्षालित**—वि॰—-—क्षल् + णिच् + क्त—धोया हुआ, साफ किया हुआ, पवित्र किया हुआ
- **क्षालित**—वि॰—-—क्षल् + णिच् + क्त—पोंछा हुआ, प्रतिदत्त
- **क्षि**—भ्वा॰ पर॰ <क्षयति>, <क्षित>, <क्षीण>—–—–—मुर्झाना, छीजना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ क्र्या॰ <क्षयति>, <क्षिणोति>, <क्षिणाति>—-—–—नष्त करना, ग्रस्त कर लेना, बर्बाद करना, भ्रष्ट करना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ क्र्या॰ <क्षयति>, <क्षिणोति>, <क्षिणाति>—-—–—न्यून करना, बर्बाद करना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ क्र्या॰ <क्षयति>, <क्षिणोति>, <क्षिणाति>—-—–—मार डालना, क्षति पहुँचाना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰ <क्षयति>, <क्षिणोति>, <क्षिणाति>—-—-—नष्त करना, ग्रस्त कर लेना, बर्बाद करना, भ्रष्ट करना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰ <क्षयति>, <क्षिणोति>, <क्षिणाति>—-—-—न्यून करना, बर्बाद करना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰ <क्षयति>, <क्षिणोति>, <क्षिणाति>—-—–—मार डालना, क्षति पहुँचाना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰, कर्मवाच्य॰ <क्षीयते>—–—–—बर्बाद होना, घटना, नष्ट होना, न्यून होना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—–—–—नष्ट करना, दूर हटा देना, समाप्त कर देना
- **क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—–—–—समय बिताना
- **अपक्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—अप-क्षि—-—घटना, क्षीण होना, न्यून होना
- **परिक्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—परि-क्षि—-—कम होना, क्षीण होना
- **परिक्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—परि-क्षि—-—कृश होना, दुबला-पतला होना
- **प्रक्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—प्र-क्षि—-—कम होना, क्षीण होना
- **प्रक्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—प्र-क्षि—-—कृश होना, दुबला-पतला होना

- **सङ्क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—सम्-क्षि—-—कम होना, क्षीण होना
- **सङ्क्षि**—भ्वा॰ स्वा॰ पर॰—सम्-क्षि—-—कृश होना, दुबला-पतला होना
- **क्षितिः**—स्त्री॰—-—क्षि + क्तिन्—पृथ्वी
- **क्षितिः**—स्त्री॰—-—क्षि + क्तिन्—निवास, आवास, घर
- **क्षितिः**—स्त्री॰—-—क्षि + क्तिन्—हानि, विनाश
- **क्षितिः**—स्त्री॰—-—क्षि + क्तिन्—प्रलय
- **क्षितीशः**—पुं॰—क्षिति-ईशः—-—राजा
- **क्षितीश्वरः**—पुं॰—क्षिति-ईश्वरः—-—राजा
- **क्षितिकणः**—पुं॰—क्षिति-कणः—-—धूल
- **क्षितिकम्पः**—पुं॰—क्षिति-कम्पः—-—भूचाल
- **क्षितिक्षित्**—पुं॰—क्षिति-क्षित्—-—राजा, राजकुमार
- **क्षितिजः**—पुं॰—क्षिति-जः—-—वृक्ष
- **क्षितिजः**—पुं॰—क्षिति-जः—-—गंडोआ, केंचुआ
- **क्षितिजः**—पुं॰—क्षिति-जः—-—मंगल ग्रह
- **क्षितिजः**—पुं॰—क्षिति-जः—-—विष्णु के द्वारा मारा गया नरक नाम का राक्षस
- **क्षितिजम्**—नपुं॰—क्षिति-जम्—-—जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं
- **क्षितिजा**—स्त्री॰—क्षिति-जा—-—सीता का विशेषण
- **क्षितितलम्**—नपुं॰—क्षिति-तलम्—-—पृथ्वी की सतह
- **क्षितिदेवः**—पुं॰—क्षिति-देवः—-—ब्राह्मण
- **क्षितिधरः**—पुं॰—क्षिति-धरः—-—पहाड़
- **क्षितिनाथः**—पुं॰—क्षिति-नाथः—-—राजा, प्रभु
- **क्षितिपः**—पुं॰—क्षिति-पः—-—राजा, प्रभु
- **क्षितिपतिः**—पुं॰—क्षिति-पतिः—-—राजा, प्रभु
- **क्षितिपालः**—पुं॰—क्षिति-पालः—-—राजा, प्रभु
- **क्षितिभुज्**—पुं॰—क्षिति-भुज्—-—राजा, प्रभु
- **क्षितिरक्षिन्**—पुं॰—क्षिति-रक्षिन्—-—राजा, प्रभु
- **क्षितिपुत्रः**—पुं॰—क्षिति-पुत्रः—-—मंगल ग्रह

- **क्षितिप्रतिष्ठ**—वि°—क्षिति-प्रतिष्ठ—-—पृथ्वी पर रहने वाला
- **क्षितिभृत्**—पुं°—क्षिति-भृत्—-—पहाड़
- **क्षितिभृत्**—पुं°—क्षिति-भृत्—-—राजा
- **क्षितिमण्डलम्**—नपुं°—क्षिति-मण्डलम्—-—भूमण्डल
- **क्षितिरन्ध्रम्**—नपुं°—क्षिति-रन्ध्रम्—-—खाई, खोडर
- **क्षितिरुह्**—पुं°—क्षिति-रुह्—-—वृक्ष
- **क्षितिवर्धनः**—पुं°—क्षिति-वर्धनः—-—शव, मुर्दा शरीर
- **क्षितिवृत्तिः**—स्त्री°—क्षिति-वृत्तिः—-—पृथ्वी की गति, धैर्ययुक्तव्यवहार
- **क्षितिव्युदासः**—पुं°—क्षिति-व्युदासः—-—गुफा, बिल
- **क्षिद्रः**—पुं°—-—क्षिंद् + रक्—रोग
- **क्षिद्रः**—पुं°—-—क्षिंद् + रक्—सूर्य
- **क्षिद्रः**—पुं°—-—क्षिंद् + रक्—सींग
- **क्षिप्**—तुदा° उभ° <क्षिपति>, <क्षिपते>—-—-—फेंकना, डालना, भेजना, प्रेषित करना, विसर्जन, जाने देना
- **क्षिप्**—तुदा° उभ° <क्षिपति>, <क्षिपते>—-—-—रखना, पहनना, लगाना
- **क्षिप्**—तुदा° उभ° <क्षिपति>, <क्षिपते>—-—-—आरोपित करना, लगाना
- **क्षिप्**—तुदा° उभ° <क्षिपति>, <क्षिपते>—-—-—फेंक देना, डाल देना, उतार देना, मुक्त होना
- **क्षिप्**—तुदा° उभ° <क्षिपति>, <क्षिपते>—-—-—दूर करना, नष्ट करना
- **क्षिप्**—तुदा° उभ° <क्षिपति>, <क्षिपते>—-—-—अस्वीकार करना, घृणा करना
- **क्षिप्**—तुदा° उभ° <क्षिपति>, <क्षिपते>—-—-—अपमान करना, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना, धमकाना
- **क्षिप्**—दिवा° पर° <क्षिप्यति>, <क्षिप्त>—-—-—फेंकना, डालना, भेजना, प्रेषित करना, विसर्जन, जाने देना
- **क्षिप्**—दिवा° पर° <क्षिप्यति>, <क्षिप्त>—-—-—रखना, पहनना, लगाना
- **क्षिप्**—दिवा° पर° <क्षिप्यति>, <क्षिप्त>—-—-—आरोपित करना, लगाना
- **क्षिप्**—दिवा° पर° <क्षिप्यति>, <क्षिप्त>—-—-—फेंक देना, डाल देना, उतार देना, मुक्त होना
- **क्षिप्**—दिवा° पर° <क्षिप्यति>, <क्षिप्त>—-—-—दूर करना, नष्ट करना
- **क्षिप्**—दिवा° पर° <क्षिप्यति>, <क्षिप्त>—-—-—अस्वीकार करना, घृणा करना
- **क्षिप्**—दिवा° पर° <क्षिप्यति>, <क्षिप्त>—-—-—अपमान करना, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना, धमकाना
- **अधिक्षिप्**—तुदा° उभ°,दिवा° पर°—अधि-क्षिप्—-—निन्दा करना, कलंक लगाना

- **अधिक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—अधि-क्षिप्—-—नाराज करना, अपवाद करना
- **अधिक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—अधि-क्षिप्—-—आगे बढ़ जाना
- **अवक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—अव-क्षिप्—-—उतार फेंकना, छोड़ना, त्यागना
- **अवक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—अव-क्षिप्—-—तिरस्कार करना, भर्त्सना करना
- **आक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—आ-क्षिप्—-—फेंकना, डाल देना, प्रहार करना
- **आक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—आ-क्षिप्—-—सिकोड़ना
- **आक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—आ-क्षिप्—-—वापिस लेना, छीनना, खींचना, ले लेना
- **आक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—आ-क्षिप्—-—संकेत करना, इशारा करना
- **आक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—आ-क्षिप्—-—परिस्थितियों से अनुमान लगाना
- **आक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—आ-क्षिप्—-—आक्षेप करना
- **आक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—आ-क्षिप्—-—अवहेलना करना, उपेक्षा करना
- **आक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—आ-क्षिप्—-—तिरस्कार करना
- **उत्क्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—उद्-क्षिप्—-—उछालना
- **उपक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—उप-क्षिप्—-—डालना, फेंकना
- **उपक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—उप-क्षिप्—-—संकेत करना, इशारा करना, निष्कर्ष निकालना
- **उपक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—उप-क्षिप्—-—आरम्भ करना, शुरु करना
- **उपक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—उप-क्षिप्—-—अपमान करना, डाटना-फटकारना
- **निक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—नि-क्षिप्—-—नीचे रखना, स्थापित करना, धर देना
- **निक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—नि-क्षिप्—-—सौपना, देख रेख में सुपुर्द करना
- **निक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—नि-क्षिप्—-—शिविर में रखना
- **निक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—नि-क्षिप्—-—फेंक देना, अस्वीकार करना
- **निक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—नि-क्षिप्—-—प्रदान करना
- **परिक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—परि-क्षिप्—-—घेरना
- **परिक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—परि-क्षिप्—-—आलिंगन करना
- **पर्याक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—पर्या-क्षिप्—-—बाँधना, एकत्र करना
- **प्रक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—प्र-क्षिप्—-—रखना, डालना
- **प्रक्षिप्**—तुदा॰ उभ॰,दिवा॰ पर॰—प्र-क्षिप्—-—बीच में डालना, अन्तर्हित करना

- **विक्षिप्**—तुदा० उभ०,दिवा० पर०—वि-क्षिप्—-—फेंकना, डालना
- **विक्षिप्**—तुदा० उभ०,दिवा० पर०—वि-क्षिप्—-—मन मोड़ना
- **विक्षिप्**—तुदा० उभ०,दिवा० पर०—वि-क्षिप्—-—ध्यान हटाना
- **संक्षिप्**—तुदा० उभ०,दिवा० पर०—सम्-क्षिप्—-—संचय करना, ढेर लगाना
- **संक्षिप्**—तुदा० उभ०,दिवा० पर०—सम्-क्षिप्—-—पीछे हटना, नष्ट करना
- **संक्षिप्**—तुदा० उभ०,दिवा० पर०—सम्-क्षिप्—-—छोटा करना, कमी करना, संक्षिप्त करना
- **क्षपणम्**—नपुं०—-—क्षिप् + क्युन् बा०—भेजना, फेंकना, डालना
- **क्षपणम्**—नपुं०—-—क्षिप् + क्युन् बा०—झिड़कना, दुर्वचन कहना
- **क्षिपणि**—स्त्री०—-—क्षिप् + अनि—चप्पू
- **क्षिपणि**—स्त्री०—-—क्षिप् + अनि—जाल
- **क्षिपणि**—स्त्री०—-—क्षिप् + अनि—हथियार
- **क्षिपणी**—स्त्री०—-—क्षिप् + अनि, क्षिपणि + ङीष्—चप्पू
- **क्षिपणी**—स्त्री०—-—क्षिप् + अनि, क्षिपणि + ङीष्—जाल
- **क्षिपणी**—स्त्री०—-—क्षिप् + अनि, क्षिपणि + ङीष्—हथियार
- **क्षिपणिः**—स्त्री०—-—क्षिप् + अनि, क्षिपणि + ङीष्—प्रहार
- **क्षिपण्युः**—पुं०—-—क्षिप् + क्न्युच्—शरीर
- **क्षिपण्युः**—पुं०—-—क्षिप् + क्न्युच्—वसन्त ऋतु
- **क्षिपा**—स्त्री०—-—क्षिप् + अङ् + टाप्—भेजना, फेंकना, डालना
- **क्षिपा**—स्त्री०—-—क्षिप् + अङ् + टाप्—रात्रि
- **क्षिप्त**—भू० क० कृ०—-—क्षिप् + क्त—फेंका हुआ, बिखेरा हुआ, उछाला हुआ, डाला हुआ
- **क्षिप्त**—भू० क० कृ०—-—क्षिप् + क्त—त्यागा हुआ
- **क्षिप्त**—भू० क० कृ०—-—क्षिप् + क्त—अवज्ञात, उपेक्षित, अनादृत
- **क्षिप्त**—भू० क० कृ०—-—क्षिप् + क्त—स्थापित
- **क्षिप्त**—भू० क० कृ०—-—क्षिप् + क्त—ध्यान हटाया हुआ, पागल
- **क्षिप्तम्**—नपुं०—-—क्षिप् + क्त—गोली लगने से बना घाव
- **क्षिप्तकुक्कुरः**—पुं०—क्षिप्तम्-कुक्कुरः—-—पागल कुत्ता
- **क्षिप्तचित्त**—वि०—क्षिप्तम्-चित्त—-—उचाट मन, विमना

- **क्षिप्तदेह**—वि°—क्षिप्तम्-देह—-—प्रसृत शरीर, लेटा हुआ
- **क्षिप्तिः**—स्त्री°—-—क्षिप् + क्तिन्—फेंकना, भेज देना
- **क्षिप्तिः**—स्त्री°—-—क्षिप् + क्तिन्—कूट अर्थ को प्रकट करना
- **क्षिप्र**—वि°—-—क्षिप् + रक्—सजीव, आशुगामी
- **क्षिप्रम्**—अव्य°—-—-—जल्दी, फुर्ती से, तुरन्त
- **क्षिप्रकारिन्**—वि°—क्षिप्रम्-कारिन्—-—आशुकारी, अविलम्बी
- **क्षिया**—स्त्री°—-—क्षि + अङ् + टाप्—हानि, विनाश, बर्वादी, ह्रास
- **क्षिया**—स्त्री°—-—क्षि + अङ् + टाप्—अनौचित्य, सर्वसम्मत आचार का उल्लंघन
- **क्षीजनम्**—नपुं°—-—क्षीज् + ल्युट्—पोले नरकुलों में से निकली हुई सरसराहट की ध्वनि
- **क्षीण**—वि°—-—क्षि + क्त, दीर्घः—पतला, कृश, क्षयप्राप्त, निर्बल घटा हुआ, थका हुआ या समाप्त, खर्च कर डाला हुआ
- **क्षीण**—वि°—-—क्षि + क्त, दीर्घः—सुकुमार, नाजुक
- **क्षीण**—वि°—-—क्षि + क्त, दीर्घः—थोड़ा अल्प
- **क्षीण**—वि°—-—क्षि + क्त, दीर्घः—निर्धन, संकटग्रस्त
- **क्षीण**—वि°—-—क्षि + क्त, दीर्घः—शक्तिहीन, दुर्बल
- **क्षीणचन्द्रः**—पुं°—क्षीण-चन्द्रः—-—घटता हुआ अर्थात् कृष्णपक्ष का चन्द्रमा
- **क्षीणधन**—वि°—क्षीण-धन—-—जिसके पास पैसा न रहा हो, निर्धन
- **क्षीणपाप**—वि°—क्षीण-पाप—-—जो अपने पाप कर्मो का फल भुगत कर निष्पाप हो गया हो
- **क्षीणपुण्य**—वि°—क्षीण-पुण्य—-—जो अपने सब पुण्य कर्मों का फल भोग चुका हो, तथा अगले जन्म के लिए जिसे और पुण्य कार्य करने चाहिए
- **क्षीणमध्य**—वि°—क्षीण-मध्य—-—जिसकी कमर पतली हो
- **क्षीणवासिन्**—वि°—क्षीण-वासिन्—-—खंडहर में रहने वाला
- **क्षीणविक्रान्त**—वि°—क्षीण-विक्रान्त—-—साहसहीन, पौरुषहीन
- **क्षीणवृत्ति**—वि°—क्षीण-वृत्ति—-—जीविका के साधनों से वञ्चित, बेरोजगार
- **क्षीब्**—भ्वा° - दिवा°, पर° <क्षीबति>, <क्षीब्यति>—-—-—मतवाला होना, मदोन्मत्त होना, नशे में होना
- **क्षीब्**—भ्वा° - दिवा°, पर° <क्षीबति>, <क्षीब्यति>—-—-—थूकना, मुंह से निकालना
- **क्षीब**—वि°—-—क्षीब् + क्त नि°—उत्तेजित, मतवाला, मदोन्मत्त
- **क्षीरः**—पुं°—-—घस्यते अद्यसे घस् + ईरन्, उपधालोपः, घस्य ककारः षत्वं च—दूध
- **क्षीरः**—पुं°—-—घस्यते अद्यसे घस् + ईरन्, उपधालोपः, घस्य ककारः षत्वं च—वृक्षों का दूधिया रस

- **क्षीरः**—पुं°—-—घस्यते अद्यसे घस् + ईरन्, उपधालोपः, घस्य ककारः षत्वं च—जल
- **क्षीरम्**—नपुं°—-—घस्यते अद्यसे घस् + ईरन्, उपधालोपः, घस्य ककारः षत्वं च—दूध
- **क्षीरम्**—नपुं°—-—घस्यते अद्यसे घस् + ईरन्, उपधालोपः, घस्य ककारः षत्वं च—वृक्षों का दूधिया रस
- **क्षीरम्**—नपुं°—-—घस्यते अद्यसे घस् + ईरन्, उपधालोपः, घस्य ककारः षत्वं च—जल
- **क्षीरादः**—पुं°—क्षीर-अदः—-—शिशु, दूध पीता बच्चा
- **क्षीराब्धिः**—पुं°—क्षीर-अब्धिः—-—दुग्धसागर
- **क्षीराब्धिजः**—पुं°—क्षीर-अब्धि-जः—-—चन्द्रमा
- **क्षीराब्धिजः**—पुं°—क्षीर-अब्धि-जः—-—मोती
- **क्षीराब्धिजम्**—नपुं°—क्षीर-अब्धि-जम्—-—समुद्री नमक
- **क्षीराब्धिजा**—स्त्री°—क्षीर-अब्धि-जा—-—लक्ष्मी का विशेषण
- **क्षीराब्धितनया**—स्त्री°—क्षीर-अब्धि-तनया—-—लक्ष्मी का विशेषण
- **क्षीराब्ध्याह्वः**—पुं°—क्षीर-अब्धि-आह्वः—-—सनोवर का वृक्ष
- **क्षीराब्ध्युदः**—पुं°—क्षीर-अब्धि-उदः—-—दुग्धसागर
- **क्षीराब्धितनयः**—पुं°—क्षीर-अब्धि-तनयः—-—चन्द्रमा
- **क्षीराब्धितनया**—स्त्री°—क्षीर-अब्धि-तनया—-—लक्ष्मी का विशेषण
- **क्षीराब्धिसुतः**—पुं°—क्षीर-अब्धि-सुतः—-—लक्ष्मी का विशेषण
- **क्षीरोदधि**—पुं°—क्षीर-उदधि—-—क्षीरोद
- **क्षीरोर्मिः**—पुं°—क्षीर-ऊर्मिः—-—दुग्ध सागर की लहर
- **क्षीरौदनः**—पुं°—क्षीर-ओदनः—-—दूध में उबाले हुए चावल
- **क्षीरकण्ठः**—पुं°—क्षीर-कण्ठः—-—दूध पीता बच्चा
- **क्षीरजम्**—नपुं°—क्षीर-जम्—-—जमा हुआ दूध
- **क्षीरद्रुमः**—पुं°—क्षीर-द्रुमः—-—अश्वत्थवृक्ष
- **क्षीरधात्री**—स्त्री°—क्षीर-धात्री—-—दूध पिलाने वाली नौकरानी, धाय
- **क्षीरधिः**—पुं°—क्षीर-धिः—-—दुग्धसागर
- **क्षीरनिधिः**—पुं°—क्षीर-निधिः—-—दुग्धसागर
- **क्षीरधेनुः**—स्त्री°—क्षीर-धेनुः—-—दूध देने वाली गाय
- **क्षीरनीरम्**—नपुं°—क्षीर-नीरम्—-—पानी और दूध

- **क्षीरनीरम्**—नपुं°—क्षीर-नीरम्—–—दूध जैसा पानी
- **क्षीरनीरम्**—नपुं°—क्षीर-नीरम्—–—गाढ़ालिंगन
- **क्षीरपः**—पुं°—क्षीर-पः—–—बच्चा
- **क्षीरवारिः**—पुं°—क्षीर-वारिः—–—दुग्धसागर
- **क्षीरवारिधिः**—पुं°—क्षीर-वारिधिः—–—दुग्धसागर
- **क्षीरविकृतिः**—पुं°—क्षीर-विकृतिः—–—जमा हुआ दूध
- **क्षीरवृक्षः**—पुं°—क्षीर-वृक्षः—–—बड़, गूलर, पीपल और मधूक नाम के वृक्ष
- **क्षीरवृक्षः**—पुं°—क्षीर-वृक्षः—–—अंजीर
- **क्षीरशरः**—पुं°—क्षीर-शरः—–—मलाई, दूध की मलाई
- **क्षीरसमुद्रः**—पुं°—क्षीर-समुद्रः—–—दुग्धसागर
- **क्षीरसारः**—पुं°—क्षीर-सारः—–—मक्खन
- **क्षीरहिण्डीरः**—पुं°—क्षीर-हिण्डीरः—–—दूध के झाग या फेन
- **क्षीरिका**—स्त्री°—–—क्षीर + ठन् + टाप्—दूध से बना भोज्य पदार्थ
- **क्षीरिन्**—वि°—–—क्षीर + इनि—दूधिया दुधार दूध देने वाला
- **क्षीव्**—भ्वा° - दिवा°, पर° <क्षीवति>, <क्षीव्यति>—–—–—मतवाला होना, मदोन्मत्त होना, नशे में होना
- **क्षीव्**—भ्वा° - दिवा°, पर° <क्षीवति>, <क्षीव्यति>—–—–—थूकना, मुंह से निकालना
- **क्षीव**—वि°—–—क्षीव् + क्त नि°—उत्तेजित, मतवाला, मदोन्मत्त
- **क्षु**—अदा° पर° <क्षौति>, <क्षुत>—–—–—छींकना
- **क्षु**—अदा° पर° <क्षौति>, <क्षुत>—–—–—खाँसना
- **क्षुण्ण**—भू° क° कृ°—–—क्षुद् + क्त—कूटा हुआ, कुचला हुआ
- **क्षुण्ण**—भू° क° कृ°—–—क्षुद् + क्त—अभ्यस्त, अनुगत
- **क्षुण्ण**—भू° क° कृ°—–—क्षुद् + क्त—पीसा हुआ
- **क्षुण्णमनस्**—वि°—क्षुण्ण-मनस्—–—पश्चात्तापी, पछताने वाला
- **क्षुत्**—स्त्री°—–—क्षु + क्विप्, तुगागमः; क्षु + क्त, क्षुत + टाप्—छींकने वाली, छींक
- **क्षुतम्**—नपुं°—–—क्षु + क्विप्, तुगागमः; क्षु + क्त, क्षुत + टाप्—छींकने वाली, छींक
- **क्षुता**—स्त्री°—–—क्षु + क्विप्, तुगागमः; क्षु + क्त, क्षुत + टाप्—छींकने वाली, छींक
- **क्षुद्**—रुधा°, उभ° <क्षुणत्ति>, <क्षुते>, <क्षुण्ण>—–—–—कुचलना, घिसना, कुचल डालना, रगड़ना, पीस देना

- **क्षुद्**—रुधा°, उभ° <क्षुणत्ति>, <क्षुते>, <क्षुण्ण>—-—-——उत्तेजित करना, क्षुब्ध होना
- **प्रक्षुद्**—रुधा°, उभ°—प्र-क्षुद्——कुचलना, खरोंचना, पीसना
- **क्षुद्र**—वि°—-—क्षुद् + रक्—सूक्ष्म, अल्प, छोटा सा, तुच्छ, हल्का
- **क्षुद्र**—वि°—-—क्षुद् + रक्—कमीना, नीच, दुष्ट, अधम्
- **क्षुद्र**—वि°—-—क्षुद् + रक्—दुष्ट
- **क्षुद्र**—वि°—-—क्षुद् + रक्—क्रूर
- **क्षुद्र**—वि°—-—क्षुद् + रक्—गरीब, दरिद्र
- **क्षुद्र**—वि°—-—क्षुद् + रक्—कृपण, कंजूस
- **क्षुद्रा**—स्त्री°—-—क्षुद् + रक्—मधुमक्खी
- **क्षुद्रा**—स्त्री°—-—क्षुद् + रक्—झगड़ालू स्त्री
- **क्षुद्रा**—स्त्री°—-—क्षुद् + रक्—अपाहिज या विकलांग स्त्री
- **क्षुद्रा**—स्त्री°—-—क्षुद् + रक्—वेश्या
- **क्षुद्राञ्जनम्**—नपुं°—क्षुद्र-अञ्जनम्—-—कुछ रोगों में आंखों में लगाया जाने वाला अंजन या लेप
- **क्षुद्रान्त्रः**—पुं°—क्षुद्र-अन्त्रः—-—हृदय के भीतर का छोटा सा रंध्र
- **क्षुद्रकम्बुः**—पुं°—क्षुद्र-कम्बुः—-—छोटा शंख
- **क्षुद्रकुष्ठम्**—नपुं°—क्षुद्र-कुष्ठम्—-—एक प्रकार का हल्का कोढ़
- **क्षुद्रघण्टिका**—स्त्री°—क्षुद्र-घण्टिका—-—घूँघरू
- **क्षुद्रघण्टिका**—स्त्री°—क्षुद्र-घण्टिका—-—घूँघरू वाली करधनी
- **क्षुद्रचन्दनम्**—नपुं°—क्षुद्र-चन्दनम्—-—लाल चंदन की लकड़ी
- **क्षुद्रजन्तुः**—पुं°—क्षुद्र-जन्तुः—-—कोई भी छोटा जीव
- **क्षुद्रदंशिका**—स्त्री°—क्षुद्र-दंशिका—-—डांस, गोमक्खी
- **क्षुद्रबुद्धि**—वि°—क्षुद्र-बुद्धि—-—ओछे मन का, कमीना
- **क्षुद्ररसः**—पुं°—क्षुद्र-रसः—-—शहद
- **क्षुद्ररोगः**—पुं°—क्षुद्र-रोगः—-—मामूली बीमारी
- **क्षुद्रशङ्खः**—पुं°—क्षुद्र-शङ्खः—-—छोटा शंख या घोंघा
- **क्षुद्रसुवर्णम्**—नपुं°—क्षुद्र-सुवर्णम्—-—हल्का या खोटा सोना अर्थात् पीतल
- **क्षुद्रल**—वि°—-—क्षुद्र + लच्—सूक्ष्म, हल्का

- **क्षुध्**—दिवा° पर° <क्षुध्यति>, <क्षुधित>——————भूखा होना, भूख लगना
- **क्षुध्**—स्त्री°———क्षुध् + क्विप्—भूख
- **क्षुधा**—स्त्री°———क्षुध् + क्विप्—भूख
- **क्षुधार्त**—वि°—क्षुध्-आर्त———क्षुदधापीडित
- **क्षुधाविष्ट**—वि°—क्षुध्-आविष्ट———क्षुदधापीडित
- **क्षुत्क्षाम**—वि°—क्षुध्-क्षाम———भूखा होने से दुर्बल
- **क्षुत्पिपासित**—वि°—क्षुध्-पिपासित———भूखा प्यासा
- **क्षुन्निवृत्तिः**—स्त्री°—क्षुध्-निवृत्तिः———भूख शान्त होना
- **क्षुधालु**—वि°———क्षुध् + आलुच्—भूखा
- **क्षुधित**—वि°———क्षुध् + क्त—भूखा
- **क्षुपः**—पुं°———क्षुप् + क—छोटी जडों के वृक्ष, झाड़, झाड़ी
- **क्षुभ्**—भ्वा° आ° , दिवा°, क्रया° पर° <क्षोभते>, <क्षुभ्यति>, <क्षुभ्नाति>, <क्षुभित, <क्षुब्ध>——————हिलाना, कंपित करना, क्षुब्ध करना, आन्दोलित करना
- **क्षुभ्**—भ्वा° आ° , दिवा°, क्रया° पर° <क्षोभते>, <क्षुभ्यति>, <क्षुभ्नाति>, <क्षुभित, <क्षुब्ध>——————अस्थिर होना
- **क्षुभ्**—भ्वा° आ° , दिवा°, क्रया° पर° <क्षोभते>, <क्षुभ्यति>, <क्षुभ्नाति>, <क्षुभित, <क्षुब्ध>——————लड़खड़ाना
- **प्रक्षुभ्**—भ्वा° आ° , दिवा°, क्रया° पर°—प्र-क्षुभ्———कांपना, क्षुब्ध होना, आंदोलित होना
- **विक्षुभ्**—भ्वा° आ° , दिवा°, क्रया° पर°—वि-क्षुभ्———कांपना, क्षुब्ध होना, आंदोलित होना
- **संक्षुभ्**—भ्वा° आ° , दिवा°, क्रया° पर°—सम्-क्षुभ्———कांपना, क्षुब्ध होना, आंदोलित होना
- **क्षुभित**—वि°———क्षुभ् + क्त—हिलाया हुआ, आंदोलित आदि
- **क्षुभित**—वि°———क्षुभ् + क्त—डरा हुआ
- **क्षुभित**—वि°———क्षुभ् + क्त—क्रुद्ध
- **क्षुब्धः**—वि°———क्षुभ् + क्त—आन्दोलित, चंचल, अस्थिर
- **क्षुब्धः**—वि°———क्षुभ् + क्त—डाँवाडोल
- **क्षुब्धः**—वि°———क्षुभ् + क्त—डरा हुआ
- **क्षुब्ध**—वि°———क्षुभ् + क्त—मन्थन करने का डंडा
- **क्षुब्ध**—वि°———क्षुभ् + क्त—रति क्रिया का विशेषण आसन, रतिबन्ध
- **क्षुमा**—स्त्री°———क्षु + मक्—अलसी, एक प्रकार का सन

- **क्षुर्**—तुदा° पर° <क्षुरति>, <क्षुरित>———–—काटना, खुरचना
- **क्षुर्**—तुदा° पर° <क्षुरति>, <क्षुरित>———–—रेखाएँ खींचना, हल से खेत में खूड बनाना
- **क्षुरः**—पुं°—–—क्षुर् + क—उस्तरा
- **क्षुरः**—पुं°—–—क्षुर् + क—उस्तरे जैसी नोंक जो तीर में लगाई जाय
- **क्षुरः**—पुं°—–—क्षुर् + क—गाय या घोड़े का सुम
- **क्षुरः**—पुं°—–—क्षुर् + क—बाण
- **क्षुरकर्मन्**—नपुं°—क्षुर-कर्मन्—–—हजामत बनाना
- **क्षुरक्रिया**—स्त्री°—क्षुर-क्रिया—–—हजामत बनाना
- **क्षुरचतुष्टयम्**—नपुं°—क्षुर-चतुष्टयम्—–—हजामत करने की चार आवश्यक चीजें
- **क्षुरधानम्**—नपुं°—क्षुर-धानम्—–—उस्तरे का खोल
- **क्षुरभाण्डम्**—नपुं°—क्षुर-भाण्डम्—–—उस्तरे का खोल
- **क्षुरधार**—वि°—क्षुर-धार—–—उस्तरे जैसी तेज
- **क्षुरप्रः**—पुं°—क्षुर-प्रः—–—बाण जिसकी नोंक घोडें की नाल जैसी हो
- **क्षुरप्रः**—पुं°—क्षुर-प्रः—–—खुर्पी, घास खोदने का खुर्पा
- **क्षुरमर्दिन्**—पुं°—क्षुर-मर्दिन्—–—नाई
- **क्षुरमुण्डिन्**—पुं°—क्षुर-मुण्डिन्—–—नाई
- **क्षुरिका**—स्त्री°—–—क्षुर् + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—चाकू, छुरी
- **क्षुरिका**—स्त्री°—–—क्षुर् + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः—छोटा उस्तरा
- **क्षुरी**—स्त्री°—–—क्षुर् + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः, क्षुर + ङीष्—चाकू, छुरी
- **क्षुरी**—स्त्री°—–—क्षुर् + ङीष् + कन् + टाप्, ह्रस्वः, क्षुर + ङीष्—छोटा उस्तरा
- **क्षुरिणी**—स्त्री°—–—क्षुर + इनि + ङीष्—नाई की पत्नी
- **क्षुरिन्**—पुं°—–—क्षुर + इनि —नाई
- **क्षुल्ल**—वि°—–—क्षुदं लाति गृह्णाति - क्षुद् + ला + क—छोटा, स्वल्प
- **क्षुल्लतातः**—वि°—क्षुल्ल-तातः—–—पिता का छोटा भाई
- **क्षुल्लक**—वि°—–—क्षुल्ल + कन्—स्वल्प, सूक्ष्म
- **क्षुल्लक**—वि°—–—क्षुल्ल + कन्—नीच, दुष्ट
- **क्षुल्लक**—वि°—–—क्षुल्ल + कन्—नगण्य

- **क्षुल्लक**—वि°—–—क्षुल्ल + कन्—निर्धन
- **क्षुल्लक**—वि°—–—क्षुल्ल + कन्—दुष्ट, द्वेषयुक्त
- **क्षुल्लक**—वि°—–—क्षुल्ल + कन्—बच्चा
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —खेत, मैदान, भूमि
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —भूसंपत्ति, भूमि
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —स्थान, आवास, भूखण्ड, गोदाम
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —पुण्यस्थान, तीर्थस्थान
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —बाड़ा
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —उर्वरा भूमि
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —जन्मस्थान
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —पत्नी
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —कायक्षेत्र शरीर
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —मन
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —घर, नगर
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —सपाट आकृति जैसे कि त्रिभुज
- **क्षेत्रम्**—नपुं°—–—क्षि + ष्ट्रन् —रेखाचित्र
- **क्षेत्राधिदेवता**—स्त्री°—क्षेत्रम्-अधिदेवता—–—किसी पुण्य भूस्थल की अधिष्ठात्री देवता
- **क्षेत्राजीवः**—पुं°—क्षेत्रम्-आजीवः—–—कृषक, खेतिहर
- **क्षेत्रकरः**—पुं°—क्षेत्रम्-करः—–—कृषक, खेतिहर
- **क्षेत्रगणितम्**—नपुं°—क्षेत्रम्-गणितम्—–—ज्यामिति, रेखागणित
- **क्षेत्रगत**—वि°—क्षेत्रम्-गत—–—ज्यामितीय
- **क्षेत्रगतोपपत्तिः**—स्त्री°—क्षेत्रम्-गत-उपपत्तिः—–—ज्यामितीय प्रमाण
- **क्षेत्रज**—वि°—क्षेत्रम्-ज—–—खेत में उत्पन्न
- **क्षेत्रज**—वि°—क्षेत्रम्-ज—–—शरीर से उत्पन्न
- **क्षेत्रजः**—पुं°—क्षेत्रम्-जः—–—हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक
- **क्षेत्रजात**—वि°—क्षेत्रम्-जात—–—दूसरे पुरुष की पत्नी में उत्पादित संतान
- **क्षेत्रज्ञ**—वि°—क्षेत्रम्-ज्ञ—–—स्थानीयता को जानने वाला

- **क्षेत्रज्ञ**—वि°—क्षेत्रम्-ज्ञ—-—चतुर, दक्ष
- **क्षेत्रज्ञः**—पुं°—क्षेत्रम्-ज्ञः—-—आत्मा
- **क्षेत्रज्ञः**—पुं°—क्षेत्रम्-ज्ञः—-—परमात्मा
- **क्षेत्रज्ञः**—पुं°—क्षेत्रम्-ज्ञः—-—व्यभिचारी
- **क्षेत्रज्ञः**—पुं°—क्षेत्रम्-ज्ञः—-—किसान
- **क्षेत्रपतिः**—पुं°—क्षेत्रम्-पतिः—-—भूस्वामी, भूमिधर
- **क्षेत्रपदम्**—नपुं°—क्षेत्रम्-पदम्—-—देवता के लिए पवित्र स्थान
- **क्षेत्रपालः**—पुं°—क्षेत्रम्-पालः—-—खेत का रखवाला
- **क्षेत्रपालः**—पुं°—क्षेत्रम्-पालः—-—क्षेत्र की रक्षा करने वाला
- **क्षेत्रपालः**—पुं°—क्षेत्रम्-पालः—-—शिव का विशेषण
- **क्षेत्रफलम्**—नपुं°—क्षेत्रम्-फलम्—-—आकृति की लम्बाई चौड़ाई का गुणनफल
- **क्षेत्रभक्तिः**—स्त्री°—क्षेत्रम्-भक्तिः—-—खेत का बँटवारा
- **क्षेत्रराशिः**—पुं°—क्षेत्रम्-राशिः—-—जुआमितीय आकृतियों द्वारा प्रकट किया गया परिमाण
- **क्षेत्रविद्**—वि°—क्षेत्रम्-विद्—-—किसान
- **क्षेत्रविद्**—वि°—क्षेत्रम्-विद्—-—ऋषि जिसे आध्यात्मिक ज्ञान हो
- **क्षेत्रविद्**—वि°—क्षेत्रम्-विद्—-—आत्मा
- **क्षेत्रक्षेत्रज्ञ**—पुं°—क्षेत्रम्-क्षेत्रज्ञ—-—किसान
- **क्षेत्रक्षेत्रज्ञ**—पुं°—क्षेत्रम्-क्षेत्रज्ञ—-—ऋषि जिसे आध्यात्मिक ज्ञान हो
- **क्षेत्रक्षेत्रज्ञ**—पुं°—क्षेत्रम्-क्षेत्रज्ञ—-—आत्मा
- **क्षेत्रस्थ**—वि°—क्षेत्रम्-स्थ—-—पुण्य भुमि में रहने वाला
- **क्षेत्रिक**—वि°—-—क्षेत्र + ठन्—खेत से सम्बन्ध रखने वाला
- **क्षेत्रिकः**—पुं°—-—क्षेत्र + ठन्—एक किसान
- **क्षेत्रिकः**—पुं°—-—क्षेत्र + ठन्—पति
- **क्षेत्रिन्**—पुं°—-—क्षेत्र + इनि—कृषक, कास्तकार, खेतिहार
- **क्षेत्रिन्**—पुं°—-—क्षेत्र + इनि—नाम मात्र का पति
- **क्षेत्रिन्**—पुं°—-—क्षेत्र + इनि—आत्मा
- **क्षेत्रिन्**—पुं°—-—क्षेत्र + इनि—परमात्मा

- **क्षेत्रिय**—वि॰—-—क्षेत्र + घ—खेत से सम्बन्ध रखने वाला
- **क्षेत्रिय**—वि॰—-—क्षेत्र + घ—असाध्य रोग जिसका उपचार देहान्तर प्राप्ति परही हो अथवा इस जीवन में जिसका उपचार न हो सके
- **क्षेत्रियम्**—नपुं॰—-—क्षेत्र + घ—आंगिक रोग
- **क्षेत्रियम्**—नपुं॰—-—क्षेत्र + घ—चरागाह, गोचरभूमि
- **क्षेत्रियः**—पुं॰—-—क्षेत्र + घ—व्यभिचारी, परदाररत
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—फेंकना, उछालना, डालना, इधर-उधर हिलाना, गति
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—फेंकना, डालना
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—भेजना, प्रेषित करना
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—आघात
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—उल्लंघन
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—समय बिताना, कालक्षेप
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—विलम्ब, देरी
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—अपमान, दुर्वचन
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—अनादर, घृणा
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—घमंड, अहंकार
- **क्षेपः**—पुं॰—-—क्षिप् + घञ्—फूलों का गुच्छा, कुसुमस्तवक
- **क्षेपक**—वि॰—-—क्षिप् + ण्वुल्—फेंकने वाला, भेजने वाला
- **क्षेपक**—वि॰—-—क्षिप् + ण्वुल्—मिलाया हुआ, बीच में घुसाया हुआ
- **क्षेपक**—वि॰—-—क्षिप् + ण्वुल्—गालियों से युक्त, अनादरपूर्ण
- **क्षेपकः**—पुं॰—-—क्षिप् + ण्वुल्—बनावटी या बीच में मिलाया हुआ
- **क्षेपणम्**—नपुं॰—-—क्षिप् + ल्युट्—फेंकना, डालना, भेजना, निदेश आदि देना
- **क्षेपणम्**—नपुं॰—-—क्षिप् + ल्युट्—बिताना
- **क्षेपणम्**—नपुं॰—-—क्षिप् + ल्युट्—भूलना, गाली देना
- **क्षेपणम्**—नपुं॰—-—क्षिप् + ल्युट्—गोफन
- **क्षेपणिः**—स्त्री॰—-—क्षिप् + ल्युट्—चप्पू
- **क्षेपणिः**—स्त्री॰—-—क्षिप् + ल्युट्—मछली फंसाने का जाल
- **क्षेपणिः**—स्त्री॰—-—क्षिप् + ल्युट्—गोफन या ऐसा उपकरण जिसमें रखकर कंकड़ फेंके जाय

- **क्षेपणी**—स्त्री°——क्षिप् + ल्युट्—चप्पू
- **क्षेपणी**—स्त्री°——क्षिप् + ल्युट्—मछली फंसाने का जाल
- **क्षेपणी**—स्त्री°——क्षिप् + ल्युट्—गोफन या ऐसा उपकरण जिसमें रखकर कंकड़ फेंके जाय
- **क्षेम**—वि°——क्षि + भन्—प्रसन्नता, सुख और आराम देने वला, शुभ, उदार, राजिसुखी
- **क्षेम**—वि°——क्षि + भन्—समृद्ध, आराम में सुखी
- **क्षेम**—वि°——क्षि + भन्—सुरक्षित, प्रसन्न
- **क्षेमः**—पुं°——क्षि + भन्—शान्ति, प्रसन्नता, आराम, कल्याण, कुशलता
- **क्षेमः**—पुं°——क्षि + भन्—सुरक्षा, बचाव
- **क्षेमः**—पुं°——क्षि + भन्—संरक्षण करने वाला, प्ररक्षा करने वाला
- **क्षेमः**—पुं°——क्षि + भन्—अवाप्त को सुरक्षित रखना
- **क्षेमः**—पुं°——क्षि + भन्—मुक्ति, शाश्वत, आनन्द
- **क्षेमम्**—नपुं°——क्षि + भन्—शान्ति, प्रसन्नता, आराम, कल्याण, कुशलता
- **क्षेमम्**—नपुं°——क्षि + भन्—सुरक्षा, बचाव
- **क्षेमम्**—नपुं°——क्षि + भन्—संरक्षण करने वाला, प्ररक्षा करने वाला
- **क्षेमम्**—नपुं°——क्षि + भन्—अवाप्त को सुरक्षित रखना
- **क्षेमम्**—नपुं°——क्षि + भन्—मुक्ति, शाश्वत, आनन्द
- **क्षेमः**—पुं°——क्षि + भन्—एकप्रकार का सुगन्ध द्रव्य
- **क्षेमकर**—वि°—क्षेम-कर——मंगलप्रद शान्ति औत सुरक्षा करने वाला
- **क्षेमिन्**—वि°——क्षेम + इनि—सुरक्षित, आक्रमण से रक्षित, प्रसन्न
- **क्षै**—भ्वा° पर° <क्षायति>, <क्षाम>————क्षीण होना, नष्ट होना, कृश होना, ह्रास होना, मुर्झाना
- **क्षैण्यम्**—नपुं°——क्षीण + ष्यञ्—विनाश
- **क्षैण्यम्**—नपुं°——क्षीण + ष्यञ्—दुबलापन, सुकुमारता
- **क्षैत्रम्**—नपुं°——क्षेत्र + अण्—खेतों का समूह
- **क्षैत्रम्**—नपुं°——क्षेत्र + अण्—खेत
- **क्षैरेय**—वि°——क्षीर + ढञ्—दूधिया, दूध जैसा
- **क्षोडः**—पुं°——क्षोड् + घञ्—हाथी बांधने का खंभा
- **क्षोणिः**—स्त्री°——क्षै + डोनि—पृथ्वी

- **क्षोणिः**—स्त्री°———क्षै + डोनि—एक
- **क्षोणी**—स्त्री°———क्षोणि + ङीष्—पृथ्वी
- **क्षोणी**—स्त्री°———क्षोणि + ङीष्—एक
- **क्षोत्तृ**—पुं°———क्षुद् + तृच्—मूसली, बट्टा
- **क्षोदः**—पुं°———क्षुद् + घञ्—चूरा करना, पीसना
- **क्षोदः**—पुं°———क्षुद् + घञ्—सिल
- **क्षोदः**—पुं°———क्षुद् + घञ्—धूल, कण कोई छोटा या सूक्ष्म कण
- **क्षोद**—वि°———क्षुद् + घञ्—जो जांच पड़ताल या अनुसन्धान में ठहर सके
- **क्षोदिमन्**—पुं°———क्षोद + इमनिच्—सूक्ष्मता
- **क्षोभः**—पुं°———क्षुभ् + घञ्—डोलना, हिलना, लोटपोट होना
- **क्षोभः**—पुं°———क्षुभ् + घञ्—हिचकोले खाना
- **क्षोभः**—पुं°———क्षुभ् + घञ्—आन्दोलन, डाँवाडोल होना, उत्तेजना, संवेग
- **क्षोभः**—पुं°———क्षुभ् + घञ्—उकसाहट, चिढ़
- **क्षोभणम्**—नपुं°———क्षुभ् + णिच् + ल्युट्—क्षुब्ध करना, व्याकुल करना
- **क्षोभणः**—पुं°———क्षुभ् + णिच् + ल्युट्—कामदेव के पांच बाणों में से एक
- **क्षोमः**—पुं°———क्षु + मन्—घर की छत पर बना कमरा, चौबारा
- **क्षोमम्**—नपुं°———क्षु + मन्—घर की छत पर बना कमरा, चौबारा
- **क्षौणिः**—स्त्री°————पृथ्वी
- **क्षौणिः**—स्त्री°————एक
- **क्षौणी**—स्त्री°————पृथ्वी
- **क्षौणी**—स्त्री°————एक
- **क्षौणीप्राचीरः**—पुं°—क्षौणी-प्राचीरः———समुद्र
- **क्षौणीभुज्**—पुं°—क्षौणी-भुज्———राजा
- **क्षौणीभृत्**—पुं°—क्षौणी-भृत्———पहाड़
- **क्षौद्रः**—पुं°———क्षुद्र + अण्—चम्पक, वृक्ष
- **क्षौद्रम्**—नपुं°———क्षुद्र + अण्—हल्कापन
- **क्षौद्रम्**—नपुं°———क्षुद्र + अण्—कमीनापन, ओछापन

- **क्षौद्रम्**—नपुं°—-—क्षुद्र + अण्—शहद
- **क्षौद्रम्**—नपुं°—-—क्षुद्र + अण्—जल
- **क्षौद्रम्**—नपुं°—-—क्षुद्र + अण्—धूलकण
- **क्षौद्रजम्**—नपुं°—क्षौद्र-जम्—-—मोम
- **क्षौद्रेयम्**—नपुं°—-—क्षौद्र + ढञ्—मोम
- **क्षौमः**—पुं°—-—क्षु + मन् + अण्—रेशमी कपड़ा, ऊनी कपड़ा
- **क्षौमः**—पुं°—-—क्षु + मन् + अण्—चौबारा
- **क्षौमः**—पुं°—-—क्षु + मन् + अण्—मकान का पिछला भाग
- **क्षौमम्**—नपुं°—-—क्षु + मन् + अण्—रेशमी कपड़ा, ऊनी कपड़ा
- **क्षौमम्**—नपुं°—-—क्षु + मन् + अण्—चौबारा
- **क्षौमम्**—नपुं°—-—क्षु + मन् + अण्—मकान का पिछला भाग
- **क्षौमम्**—नपुं°—-—क्षु + मन् + अण्—अस्तर
- **क्षौमम्**—नपुं°—-—क्षु + मन् + अण्—अलसी
- **क्षौमी**—पुं°—-—-—सन
- **क्षौरम्**—नपुं°—-—क्षुर + अण्—हजामत
- **क्षौरिकः**—पुं°—-—क्षौर + ठन्—नाई
- **क्ष्णु**—अदा° पर° <क्ष्णोति>, <क्ष्णुत>—-—-—पैना करना, तेज करना
- **संक्ष्णु**—अदा° आ°—सम्-क्ष्णु—-—तेज करना
- **क्ष्मा**—स्त्री°—-—क्षम् + अच् उपधालोपः—पृथ्वी
- **क्ष्मा**—स्त्री°—-—-—एक की संख्या
- **क्ष्माजः**—पुं°—क्ष्मा-जः—-—मंगलग्रह
- **क्ष्मापः**—पुं°—क्ष्मा-पः—-—मंगलग्रह
- **क्ष्मापतिः**—पुं°—क्ष्मा-पतिः—-—मंगलग्रह
- **क्ष्माभुज्**—पुं°—क्ष्मा-भुज्—-—राजा
- **क्ष्माभृत्**—पुं°—क्ष्मा-भृत्—-—राजा या पहाड़
- **क्ष्माय्**—भ्वा° आ° <क्ष्मायते>, <क्ष्मायित>—-—-—हिलाना, कांपना

- **क्ष्विड्**—भ्वा° उभ° <क्ष्वेडति>, <क्ष्वेडते>, <क्ष्वेट्ट>, या <क्ष्वेडित>—-—-—भिनभिनाना, दाहड़ना, चहचहाना, गुर्राना, बुदबुदाना, अस्पष्ट ध्वनि करना
- **क्ष्विड्**—भ्वा° आ° <क्ष्विद्>—-—-—गीला होना, चिपचिपा होना
- **क्ष्विड्**—भ्वा° आ° <क्ष्विद्>—-—-—रस निकलना, रस छोड़ना, मवाद बहना, पसीजना
- **क्ष्विड्**—दिवा° पर° <क्ष्विद्यति>, <क्ष्वेदित>, <क्ष्विण्ण>—-—-—गीला होना, चिपचिपा होना
- **क्ष्विड्**—दिवा° पर° <क्ष्विद्यति>, <क्ष्वेदित>, <क्ष्विण्ण>—-—-—रस निकलना, रस छोड़ना, मवाद बहना, पसीजना
- **क्ष्वेडः**—पुं°—-—क्ष्विड् + घञ्, अच् वा—शब्द, शोर, कोलाहल
- **क्ष्वेडः**—पुं°—-—-— विष, जहर
- **क्ष्वेडः**—पुं°—-—-—आर्द्र या तर करना
- **क्ष्वेडः**—पुं°—-—-—त्याग
- **क्ष्वेडा**—स्त्री°—-—-—शेर की दहाड़
- **क्ष्वेडा**—स्त्री°—-—-—युद्ध के लिए ललकार, रणगुहार
- **क्ष्वेडा**—स्त्री°—-—-—बाँस
- **क्ष्वेडितम्**—नपुं°—-—क्ष्विड् + क्त—सिंह गर्जना
- **क्ष्वेला**—स्त्री°—-—क्ष्वेल + अ + टाप्—खेल, हंसी, मजाक
